अणुवेक्खा-सारो
(अनुप्रेक्षा सार)

आचार्य वसुनन्दी मुनि

ग्रंथ : अणुवेक्खा-सारो (अनुप्रेक्षा सार)

मंगल आशीर्वाद : परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य
श्री 108 विद्यानन्द जी मुनिराज

ग्रंथकार : परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य
श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

संपादन : आर्यिका वर्धस्वनंदनी

प्राप्ति स्थान : ई-16, सैक्टर-51 नोएडा (गौतमबुद्ध नगर) 201301
मो. 9971548899, 9867557668

ISBN : 978-93-94199-26-2

संस्करण : द्वितीय 1000 (सन् 2022)

प्रकाशक : निर्ग्रन्थ ग्रंथमाला समिति (पंजी.)

मुद्रक : ईस्टर्न प्रेस
नारायणा, नई दिल्ली-110028
दूरभाष: 011-47705544
ई-मेल: info@easternpress.in

सम्पादकीय

विज्जारहमारूढो, मणोरहपहेसु भमदि जो चेदा।
सो जिणणाणपहावी, सम्मादिट्ठी मुणेदव्वो।।
आ. कुंदकुंदस्वामी, समयसार, 7-44-236

जो आत्मा विद्यारूपी रथ में आरूढ़ हुआ मनोरथ मार्ग में भ्रमण करता है, उसे जिनेन्द्र देव के ज्ञान की प्रभावना करने वाला सम्यग्दृष्टि जानना चाहिए।

एदम्हि रदो णिच्चं, संतुट्ठो होहि णिच्चमेदम्हि।
एदेण होहि तित्तो, होहिदि तुह उत्तमं सोक्खं।।
आ. कुंदकुंद स्वामी, समयसार, 7-14-206

हे भव्य! तू इस ज्ञान में सदा प्रीति कर इसी में तू सदा सन्तुष्ट रह, इससे ही तू तृप्त रह। (ज्ञान में रति, सन्तुष्टि और तृप्ति से) तुझे उत्तम सुख होगा।

सम्यक्ज्ञान की निर्मल धारा चेतना के धरातल पर पड़े विषय-कषाय-अघ की धूल को नष्ट करती है। जिस प्रकार मंद सुगंधित जल की वर्षा चित्त में आह्लाद उत्पन्न करती है व साथ ही वृक्षादि को संवर्द्धित, पुष्पित, फलित व पल्लवित करने में समर्थ होती है उसी प्रकार सम्यक्ज्ञान रूपी जल की वर्षा से चेतना आह्लादित होती है, परिणामों में विशुद्धि संवर्द्धित होती है तथा संयम, तपादि उत्पन्न होते हैं। ज्ञान में अनुरक्त व्यक्ति के लिए मोक्षमार्ग अत्यंत सरल प्रतिभासित होता है जबकि तत्त्वज्ञान से विहीन के लिए विषादयुक्त दिखाई पड़ता है। ज्ञान की इसी निर्मल धारा में प्रतिपल अवगाहन करने वाले और अन्य भव्य जीवों के लिए भी पुण्यकोष की वृद्धि में निमित्त बनने वाले आचार्य गुरुवर ने कई प्राकृत ग्रंथों की रचना की।

प्राकृत भाषा:- भाषा संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। "**प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्**" प्रकृति व स्वभाव से सिद्ध प्राकृत है।

जिस प्रकार मेघ का जल स्वभावतः एकरूप होकर भी नीम, गन्नादि विशेषाधारों से संस्कार को पाकर अनेकरूप में परिणत हो जाता है, उसी प्रकार स्वाभाविक सबकी बोली प्राकृत भाषा पाणिनि आदि के व्याकरणों से संस्कार को पाकर उत्तरकाल में संस्कृतादि नाम पा लेती है। प्राकृत शब्द स्वयं अपनी स्वाभाविकता एवं व्यवहार-मूलकता को कह रहा है।[1]

अपनी कला, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य एवं संस्कृति की मौलिकता एवं उत्कृष्टता के कारण ही भारत को विश्व-गुरु की संज्ञा प्राप्त हुई। तथा उसकी इस विविधतापूर्ण प्रज्ञा की एक प्रमुख संदेशवाहिका भाषा प्राकृत थी, जो कि अतिप्राचीन काल से वृहत्तर भारत में जन-जन की भाषा बनी रही। विश्व की प्राचीन 'सिन्धु सभ्यता' के लोगों की भाषा 'प्राकृत' थी। जो मृण्मयी मुद्रालेख सिंधु सभ्यता के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं, वे सभी प्राकृत-भाषामय हैं।

इस देश की संस्कृति इस देश की आत्मा के स्वर प्राकृत भाषा में ही मुखरित हुए हैं क्योंकि प्रायः समस्त भारतवासी प्राकृत भाषा-भाषी थे। प्राकृत की महत्ता को बताते हुए कहा है भारतीय संस्कृति एवं इतिहास तब तक अधूरा रहेगा जब तक कि उसका प्राकृत व पालि से संबंध न जोड़ा जाए।[2]

आचार्य श्री के ग्रंथों में शौरसेनी प्राकृत दिखाई पढ़ती है। छठी सदी के प्राकृत-वैयाकरण वररुचि का सूत्रवाक्य ''**प्रकृतिः शौरसेनी**''। जिसके अनुसार शौरसेनी प्राकृत सभी प्राकृतों की मूल प्रकृति है। ''**प्राकृतमणिदीपकार**'' ने तो शेष समस्त प्राकृतों के अधिकांश रूपों के लिए 'शेषं शौरसेनीवत्' कहकर समस्त प्राकृतों की शौरसेनी-मूलकता प्रमाणित कर दी है। स्पष्ट है कि शौरसेनी ही मूल प्राचीन प्राकृत भाषा थी। शूरसेन प्रदेश में विकसित होने के कारण ही नहीं अपितु इसके विशालतम साहित्य व प्राचीनतम् प्रयोगों के कारण 'शौरसेनी' नाम दिया गया। शौरसेनी के लिए कहा है-

1. काव्यालंकार रुद्रट, नमिसाधु 2/22
2. जयशंकर प्रसाद 'कंकाल' उपन्यास

राजपत्न्यादिवक्त्रेन्दु-संवास-हृदयंगमा।
मृदुगंभीर संदर्भा शौरसेनी धिनोतु वः।।

-मार्कण्डेय का दशग्रीववध महाकाव्य

रानी के अंत:पुर में रहने वाली अन्य महिलाओं के मुख रूपी चंद्रमा एवं हृदय कमल में जो भलीभाँति निवास करती है, वह लालित्य व गांभीर्य से युक्त शौरसेनी प्राकृतभाषा तुम सबको प्रसन्न करे।

मृदु व गंभीर ये गुण व विशेषण राजवर्ग से संबंधित हैं। जिस प्रकार अंत:पुर में राजा का प्रवेश प्रसन्नता के लिए होता है उसी प्रकार राजसभा, संगोष्ठी आदि में शौरसेनी का प्रयोग आनंदवर्द्धन के लिए होता है।

वैराग्य की जननी कही जाने वाली द्वादश अनुप्रेक्षाओं का वर्णन इस ग्रंथ में किया गया है। इसमें 297 श्लोक गाथा छंद में रचित हैं। अनित्यादि भावनाएँ वैराग्य को उत्पन्न व संवर्द्धित करती हैं। आचार्य श्री ने इस ग्रंथ की 121 गाथाओं का लेखन ग्रीन पार्क में अपनी व्यस्ततम दिनचर्या में से समय निकाल कर मात्र एक ही दिन में कराया।

यूँ तो प्रत्येक अनुप्रेक्षा का अतिसुंदर वर्णन किया गया है किंतु लोकानुप्रेक्षा में विभिन्न प्रकार सामान्य, ऊर्ध्वायत, यवमुरज, मंदर, गिरिकटकादि से क्षेत्रफल के भेद कहे जो अभी सामान्यत: अनुप्रेक्षा ग्रंथों में प्राप्त नहीं होता। इसमें वर्णित काल-परिवर्तन भी इसकी विशेषता को प्रकट करता है। अनुप्रेक्षा का महत्त्व बताते हुए ग्रंथकार कहते हैं-

इंधणं णस्सिदुं जह, विज्जदे अग्गी तिरिच्छ-लोयम्मि।
दिवायरो तिमिरं भव-णासेदुमणुवेक्खासारो।।291।।

जिस प्रकार ईंधन को नष्ट करने के लिए तिर्यक् लोक में अग्नि विद्यमान है, अंधकार को नष्ट करने के लिए सूर्य है उसी प्रकार संसार को नष्ट करने के लिए अनुप्रेक्षा सार है।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज से लेकर सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज तक की गौरवशाली परम्परा का निर्वहन परमपूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज कर रहे हैं और मोक्षमार्ग में श्रम के साथ जिनशासन के संरक्षण व संवर्द्धन में श्रमरत हैं और इसी को चिर जीवंतता प्रदान करने हेतु जिनशासन के अन्य प्रभावक कार्यों के साथ प्राकृत में कई ग्रंथों का लेखन किया।

यदि इस ग्रंथ के संपादन में कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन संशोधित कर पढ़ें, हंसवत् गुणग्राही दृष्टि से ही इसका अध्ययन करें। परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज के संयम, तप, ज्ञान, साधना का सौरभ सहस्र वर्षों तक संपूर्ण विश्व को सुरभित करता रहे। उन्हें आरोग्य की प्राप्ति हो एवं अपने लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त करें। परम पूज्य गुरुवर के चरणों में सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति सहित कोटिशः नमन

नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु

जैनम् जयतु शासनम्

-आर्यिका वर्धस्व नंदनी

अनुक्रमणिका

अध्रुवानुप्रेक्षा 11

अशरण अनुप्रेक्षा..... 16

संसारानुप्रेक्षा..... 20

एकत्वानुप्रेक्षा..... 25

अन्यत्वानुप्रेक्षा..... 29

अशुचि अनुप्रेक्षा..... 34

आस्रवानुप्रेक्षा 38

संवरानुप्रेक्षा..... 45

णिज्जरानुप्रेक्षा..... 49

लोकानुप्रेक्षा 55

बोधिदुर्लभानुप्रेक्षा..... 65

धर्मानुप्रेक्षा 70

अणुवेक्खा-सारो

मंगलाचरण

णमिऊण सव्व-सिद्धे, णिक्कम्मे सुगुण-जुत्ते विमले य।
सस्सद-उवलद्धीए, वोच्छे हमणुवेक्खा-सारं।।1।।

अन्वयार्थ-णिक्कम्मे-कर्मों से रहित **सुगुण-जुत्ते**-सुगुणों से युक्त **य**-और **विमले**-सभी प्रकार के मल से रहित-निर्मल **सव्व-सिद्धे**-सभी सिद्धों को **णमिऊण**-नमस्कार करके **हं**-मैं (आचार्य वसुनंदी) **सस्सद-उवलद्धीए**-शाश्वत उपलब्धि के लिए **अणुवेक्खा-सारं**-अनुप्रेक्षा-सार नामक ग्रंथ को **वोच्छे**-कहता हूँ।

णमो सव्व-जिणाणं च, चउघाइकम्महीणाण गुणीणं।
सुह-णवलद्धि-जुत्ताण, तिजोगेहि सया तिक्काले।।2।।

अन्वयार्थ-चउघाइकम्महीणाण-चार घातिया कर्मों से हीन **गुणीणं**-गुणी **च**-और **सुह-णवलद्धि-जुत्ताण**-शुभ नवलब्धि से युक्त **सव्व-जिणाणं**-सभी जिनों को **तिक्काले**-तीन काल में **तिजोगेहि**-तीनों योगों से **सया**-सदा **णमो**-नमस्कार हो।

वंदे संतिसायरं, पायं तहा जयकित्ति-माइरियं।
पसिद्ध-देसभूसणं, हं णिय-गुरुं विज्जाणंदं।।3।।

अन्वयार्थ-संतिसायरं-आचार्य श्री शांतिसागर जी **पायं**-आचार्य श्री पायसागर जी **जयकित्ति-माइरियं**-आचार्य श्री जयकीर्ति जी **पसिद्ध-देसभूसणं**-प्रसिद्ध आचार्य श्री देशभूषण जी **तहा**-तथा **णिय-गुरुं**-निज गुरु **विज्जाणंदं**-आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज को **हं**-मैं **वंदे**-वंदना करता हूँ।

हिदंकरं भव्वाणं, सव्वकम्मक्खयकरं जिणवयणं।
अण्णाणतम-हारगं, केवलणाण-हेदुं वंदे।।4।।

अन्वयार्थ-भव्वाणं-भव्यों का **हिदंकरं**-हित करने वाले **सव्वकम्मक्खयकरं**-

सभी कर्मों के क्षय करने वाले **अण्णाणतम-हारगं**-अज्ञान रूपी अंधकार का हरण करने वाले **केवलणाण-हेदुं**-केवलज्ञान के हेतु **जिणवयणं**-जिनवचनों की **वंदे**-वंदना करता हूँ।

जिणसासणस्स सारो, कल्लाण-कारगा भव्वाणं जा।
कम्मविणासग-अग्गी, जिणुत्ता बारसाणुवेक्खा।।5।।

अन्वयार्थ-जिणसासणस्स-जिनशासन का **सारो**-सार **कम्मविणासग-अग्गी**-कर्म विनाशक अग्नि **बारसाणुवेक्खा**-बारह अनुप्रेक्षा **जिणुत्ता**-जिनेन्द्र प्रभु के द्वारा कही गई हैं **जा**-जो (अनुप्रेक्षा) **भव्वाण**-भव्यों के लिए **कल्लाण-कारगा**-कल्याण कारक है।

पत्तेगं वत्थुम्मि हु, विज्जंति णियमेण-मणेग-धम्मा।
सियावाय-रीदीए, उच्चदे णिच्छयिदरेणत्थं।।6।।

अन्वयार्थ-पत्तेगं वत्थुम्मि-प्रत्येक वस्तु में **णियमेणं**-नियम से **अणेग-धम्मा**-अनेक धर्म **विज्जंति**-विद्यमान हैं **हु**-निश्चय से **सियावाय-रीदीए**-स्याद्वाद रीति से **णिच्छयिदरेण**-निश्चय व इतर (अर्थात् व्यवहार) से **अत्थं**-अर्थ को **उच्चदे**-कहा जाता है।

अद्धुवमसरणमसुई-एगत्त-मण्णत्तं च संसारं।
आसवसंवर-णिज्जर-बोहिदुल्लह-लोय-धम्मा य।।7।।
वेरग्ग-चरिय-जणणी, जिणभत्तीए विसयविरत्तीए।
णाणस्स साररूवा, ताणुवेक्खा सया चिंतेज्ज।।8।।

अन्वयार्थ-अद्धुवं-अध्रुव (अनित्य) **असरणं**-अशरण **असुई**-अशुचि **एगत्तं**-एकत्व **अण्णत्तं**-अन्यत्व **संसारं**-संसार **आसव-संवर-णिज्जर-बोहिदुल्लह-लोग-धम्मा-य**-आस्रव, संवर, निर्जरा, बोधिदुर्लभ, लोक व धर्म ये अनुप्रेक्षाएँ **वेरग्ग-चरिय-जणणी**-वैराग्य व चरित्र की जननी हैं **जिणभत्तीए**-जिनभक्ति (व) **विसयविरत्तीए**-विषय विरक्ति की जननी हैं (तथा) **णाणस्स**-ज्ञान का **साररूवा**-सार रूप हैं **ता**-उन **अणुवेक्खा**-अनुप्रेक्षाओं का **सया**-सदा **चिंतेज्ज**-चिंतन करना चाहिए।

सव्व-तच्चाण मूलं, अप्पस्स सस्सद-सीलसुह-हेदू।
णिच्च-णंदस्स हेदू, आगम-सारो जिणवयणाणि।।9।।

अन्वयार्थ-सव्व-तच्चाण-सभी तत्त्वों का **मूलं**-मूल **अप्पस्स**-आत्मा के **सस्सद-सील-सुह-हेदू**-शाश्वत स्वभाव व सुख का हेतु **णिच्च-णंदस्स हेदू**-नित्य आनंद का हेतु **य**-और **आगम-सारो**-आगम का सार **जिणवयणाणि**-जिनवचन हैं।

पत्तेय सावयेणं, चिंतिदा सया बेदह-अणुवेक्खा।
ताहि विणा णहि धम्मी, ण सद्दिट्ठी होदि णियमेण।।10।।

अन्वयार्थ-पत्तेय सावयेणं-प्रत्येक श्रावक को **बेदह-अणुवेक्खा**-बारह अनुप्रेक्षाओं का **सया**-सदा **चिंतिदा**-चिंतन करना चाहिए **ताहि विणा**-उनके बिना (कोई) **धम्मी**-धर्मी **णहि**-नहीं होता और **णियमेण**-नियम से **सद्दिट्ठी**-सम्यक्दृष्टि भी **ण होदि**-नहीं होता।

बेदह-अणुवेक्खा जो, चिंतेज्ज अप्पसरूव-लद्धीए।
जगपूइमो सो होज्ज, भावणा भवविणास-हेदू।।11।।

अन्वयार्थ-जो-जो (भव्य जीव) **अप्पसरूव-लद्धीए**-आत्म स्वरूप की प्राप्ति के लिए **बेदह-अणुवेक्खा**-द्वादश अनुप्रेक्षाओं का **चिंतेज्ज**-चिंतन करता है **सो**-वह **जगपूइमो**-जगत्-पूज्य **होज्ज**-होता है (क्योंकि) **भावणा**-भावना **भवविणास-हेदू**-संसार के विनाश का कारण है।

भाव-थिरिमाइ हेदू, भावणा भणंति जिणा जगपुज्जा।
भावेज्ज सिवकरणं, अणुवेक्खं हु सगसिद्धीए।।12।।

अन्वयार्थ-भावणा-भावना **भाव-थिरिमाइ**-भावों की स्थिरता का **हेदू**-हेतु है (ऐसा) **जगपुज्जा**-जगपूज्य **जिणा**-जिनेंद्र प्रभु **भणंति**-कहते हैं **हु**-निश्चय से **सग-सिद्धीए**-निजात्मा की सिद्धि के लिए **सिवकरणं**-शिव (मोक्ष) को करने वाली **अणुवेक्खं**-अनुप्रेक्षा की **भावेज्ज**-भावना करनी चाहिए।

अध्रुवानुप्रेक्षा

देक्खिज्जंति लोयम्मि, जाइं सुहासुहरूववत्थूइं।
तेसुं ण कं वि सक्कं, पज्जायेण सुइरं ठादुं।।13।।

अन्वयार्थ-जाइं-जो **सुहासुहरूववत्थूइं**-शुभ-अशुभ रूप वस्तुएँ **लोयम्मि**-लोक में **देक्खिज्जंति**-देखी जाती हैं **तेसुं**-उनमें **कं वि**-कोई भी (वस्तु) **पज्जायेण**-पर्याय नय से **सुइरं**-लंबे समय तक **ठादुं**-ठहरने में **ण सक्कं**-समर्थ नहीं है।

जह उप्पादो दिस्सदि, तह विणासो वि णियमेणं लोगे।
पज्जयरूवेणं खलु, किं चि वि णो सस्सदो लोगे।।14।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **लोगे**-लोक में **उप्पादो**-उत्पाद **दिस्सदि**-देखा जाता है **तह**-उसी प्रकार **णियमेणं**-नियम से **विणासो**-विनाश **वि**-भी (देखा जाता है) **खलु**-निश्चय ही **पज्जयरूवेणं**-पर्याय रूप से **लोगे**-लोक में **किंचि वि**-कुछ भी **णो सस्सदो**-शाश्वत नहीं है।

रायदोसस्स हेदू, सव्वा पज्जाया होंति लोयम्मि।
पज्जाया ण सस्सदा, पज्जय-मूढा हु पर-समया।।15।।

अन्वयार्थ-लोयम्मि-लोक में **सव्वा**-सभी **पज्जाया**-पर्याय **रायदोसस्स**-राग द्वेष का **हेदू**-कारण **होंति**-होती हैं **पज्जाया**-पर्याय **सस्सदा**-शाश्वत **ण**-नहीं हैं **पज्जय-मूढा**-पर्यायों में मूढ़ **हु**-निश्चय से **पर-समया**-पर समय हैं।

सव्व-वियारी भावा, ण कस्स जीवस्स सासय-सहावा।
ते वि होंति पज्जाया, तेसु रायाइं णो करेज्जा।।16।।

अन्वयार्थ-सव्व-वियारी भावा-सभी विकारी भाव **कस्स जीवस्स**-किसी भी जीव के **सासय-सहावा**-शाश्वत स्वभाव **ण**-नहीं हैं **ते**-वे **वि**-भी **पज्जाया**-पर्याय **होंति**-होती हैं अत: **तेसु**-उनमें **रायाइं**-राग आदि **णो**-नहीं **करेज्जा**-करना चाहिए।

लच्छी णेव सस्सदा, सक्कधणुतडिव्व विणास-सहिदा य।
जोव्वणं जीवणं अवि, जलबुब्बुदोव्व अथिरं मुणह।।17।।

अन्वयार्थ-लच्छी-लक्ष्मी **सस्सदा**-शाश्वत **णेव**-नहीं है यह **सक्कधणु-तडिव्व य**-इंद्रधनुष और बिजली के समान **विणास-सहिदा**-विनाश से सहित है **जोव्वणं जीवणं**-यौवन तथा जीवन **अवि**-भी **जलबुब्बुदोव्व**-पानी के बुलबुले के समान **अथिरं**-अस्थिर **मुणह**-मानो।

अथिरा मादू जणगो, कलत्त-पुत्त-भादु-बंधुवग्गा य।
सेवगो सामी तहा, अथिराइं सत्तुमित्ताइं।।18।।

अन्वयार्थ-मादू-माता **जणगो**-जनक या पिता **सेवगो**-सेवक **सामी**-स्वामी **कलत्त-पुत्त-भादु-बंधुवग्गा य**-स्त्री, पुत्र, भाई व बंधुवर्ग **अथिरा**-अस्थिर हैं (नश्वर हैं) **सत्तुमित्ताइं**-शत्रु-मित्र (भी) **अथिराइं**-अस्थिर हैं।

अक्ख-विसयभूदाइं, लोयम्मि रम्मारम्म-वत्थूइं।
गगणचवला व्व तेसुं, णाणी कया वि णो रज्जेदि।।19।।

अन्वयार्थ-लोयम्मि-लोक में **अक्ख-विसयभूदाइं**-इंद्रियों की विषयभूत **रम्मारम्म-वत्थूइं**-रम्य-अरम्य वस्तुएँ **गगणचवला व्व**-आकाश की बिजली के समान (नश्वर) हैं **णाणी**-ज्ञानी **तेसुं**-उनमें **कया वि**-कभी भी **रज्जेदि णो**-रंजायमान नहीं होता।

पहे चलंतो पहिगो, णो मे जाणिच्चु ण रमदि वत्थूसु।
तहेव संचदि णाणी, पुण्णमण्णाणी रमदि तेसु।।20।।

अन्वयार्थ-पहे-पथ में **चलंतो**-चलता हुआ **पहिगो**-पथिक **णो मे**-(ये) मेरी नहीं हैं **जाणिच्चु**-ऐसा जानकर **वत्थूसु**-(उन) वस्तुओं में **ण रमदि**-रंजायमान नहीं होता **तहेव**-उसी प्रकार **णाणी**-ज्ञानी (संसार में नश्वर वस्तुओं को ये मेरे नहीं हैं, ऐसा जानकर उनमें नहीं रमते और) **पुण्णं**-पुण्य का **संचदि**-संचय करते हैं (जबकि) **अण्णाणी**-अज्ञानी **तेसु**-उनमें **रमदि**-रंजायमान होता है।

चिरं पोसिदं देहं, खयदि णियमेण रोयेण जराइ वि।
मिच्चुयालम्मि तस्स हु, को वि णो रक्खेदुं सक्को।।21।।

अन्वयार्थ-चिरं-दीर्घकाल तक **पोसिदं**-पोषित **देहं**-देह **वि**-भी **रोयेण**-रोग व **जराइ**-जरा से **णियमेण**-नियम से **खयदि**-नष्ट हो जाती है **मिच्चु-यालम्मि**-मृत्युकाल आने पर **को वि**-कोई भी **हु**-निश्चय से **तस्स**-उसकी **रक्खेदुं**-रक्षा करने में **णो सक्को**-समर्थ नहीं है (वह देह नष्ट हो जाती है)।

विहवो तित्थयराणं, चक्कीण णव-णिही चउदह-रयणं।
छक्खंडस्स हु रज्जं, छहणवदिसहस्स-इत्थीओ।।22।।

बलभद्दस्स विभूदी, विउला विहवा हरिहर-देवाणं।
काममंडलरायस्स, दिस्संते णस्सरा विहवा।।23।।

अन्वयार्थ-तित्थयराणं-तीर्थंकरों का **विहवो**-वैभव **चक्कीण**-चक्रवर्तियों की **णवणिही**-नवनिधि **चउदह-रयणं**-चौदह रत्न **छक्खंडस्स रज्जं**-छह खंड का राज्य **छहणवदिसहस्स-इत्थीओ**-छयानवें हजार स्त्रियाँ **बलभद्दस्स विभूदी**-बलभद्र की विभूति **काममंडलरायस्स**-कामदेव व मंडलीक राजा का **हरिहर-देवाणं**-हरि-हर-देवों का **विउला**-विपुल **विहवा**-वैभव **हु**-निश्चय से **णस्सरा**-(अथिर) नश्वर **दिस्संते**-दिखाई देता है।

काइ विहीइ गहेज्जा, सारं संसार-अणिच्च-वत्थूणं।
ताण मुल्लं अज्जेज्ज, विणट्ठ-पुव्वे हु सण्णाणी।।24।।

अन्वयार्थ-सण्णाणी-सम्यक् ज्ञानियों को **काइ विहीइ**-किस विधि से **संसार-अणिच्च-वत्थूणं**-संसार की अनित्य वस्तुओं का **सारं**-सार **गहेज्जा**-ग्रहण करना चाहिए (उन्हें) **ताण**-उनके **विणट्ठ-पुव्वे**-विनष्ट होने के पूर्व **हु**-निश्चय से (उसके) **मुल्लं**-मूल्य का **अज्जेज्ज**-अर्जन करना चाहिए।

अथिरा हु होदि लच्छी, सुधम्म-कज्जेसुं तं विच्चेज्जा।
जदि हाणि-विद्धी समो, तहा वि सुपत्ताण दाएज्ज।।25।।

अन्वयार्थ-लच्छी-लक्ष्मी **हु**-निश्चय से **अथिरा**-(अस्थिर) नश्वर **होदि**-होती है **तं**-इसीलिए **सुधम्म-कज्जेसु**-सद्धर्म कार्यों में **विच्चेज्जा**-व्यय करना चाहिए **जदि**-यदि **हाणि-विद्धी**-धन की हानि हो, वृद्धि हो या **समो**-समान हो **तहा वि**-तथापि **सुपत्ताण**-सुपात्रों को **दाएज्ज**-दान करना चाहिए।

अथिरा इंदिय-विसया, रोग-सोग-भय-दुक्खाण हेदू य।
तं मोहं उज्झेज्जा, पाव-णिमित्त-विसयादो खलु।।26।।

अन्वयार्थ-रोग-सोग-भय-दुक्खाण हेदू य-रोग, शोक, भय और दु:खों के हेतु **इंदिय-विसया**-इन्द्रियों के विषय **अथिरा**-अस्थिर हैं **तं**-इसीलिए **पाव-णिमित्त-विसयादो**-पापों के निमित्त विषयों से **मोहं**-मोह को **खलु**-निश्चय से **उज्झेज्जा**-त्यागना चाहिए।

लच्छीइ सदुवजोगं, जो कुणदि परोवयार-रूवेणं।
सो णाणी सुरपुज्जो, उहयभवे बहु-सुहाणि लहदि।।27।।

अन्वयार्थ-जो-जो भव्य जीव **परोवयार-रूवेणं**-परोपकार रूप से **लच्छीइ**-लक्ष्मी का **सदुवजोगं**-सदुपयोग **कुणदि**-करता है **सो**-वह **णाणी**-ज्ञानी **सुरपुज्जो**-देवों द्वारा पूज्य होता है व **उहयभवे**-दोनों अर्थात् इह-पर भव में **बहु-सुहाणि**-बहुत सुखों को **लहदि**-प्राप्त करता है।

लच्छिं हु संचिणित्ता, धम्मुवयारे कया ण विच्चेज्जा।
णेव सयं भुंजेज्जा, होदि लच्छी मिदिगारूवा।।28।।

अन्वयार्थ-(जो) **लच्छिं**-लक्ष्मी का **संचिणित्ता**-संचय करके (उसे) **धम्मुवयारे**-धर्म रूप उपकार में **कया**-कभी **ण विच्चेज्जा**-व्यय नहीं करता और **णेव सयं**-ना स्वयं ही **भुंजेज्जा**-भोगता है तो **लच्छी**-(उसकी) लक्ष्मी **मिदिगारूवा**-मिट्टी रूप **होदि**-होती है।

लच्छि-पुत्तो रक्खेदि, आउसदि लच्छिं दासो लच्छीइ।
लच्छि-पई भुंजेज्जा, होज्ज विबुहजणा लच्छि-पई।।29।।

अन्वयार्थ-लच्छि-पुत्तो-लक्ष्मी पुत्र **लच्छिं**-लक्ष्मी की **रक्खेदि**-रक्षा करता है **लच्छीइ**-लक्ष्मी का **दासो**-दास **आउसदि**-(लक्ष्मी की) सेवा करता है **लच्छि-पई**-लक्ष्मी पति (लक्ष्मी का) **भुंजेज्जा**-भोग करता है (अत:) **विबुहजणा**-विबुधजनों को **लच्छि-पई**-लक्ष्मी पति **होज्ज**-होना चाहिए।

लच्छी णो भुंजिज्जइ, णो अण्णेहि उवजोग-जोग्गा जा।
पासाणोव्व हु लच्छी, भूमीइ चिट्ठदे चिरं सा।।30।।

अन्वयार्थ-जा-जो **लच्छी**-लक्ष्मी **णो भुंजिज्जइ**-भोगी नहीं जाती **य**-और **अण्णेहि**-अन्यों के द्वारा भी **णो उवजोग-जोग्गा**-उपयोग के योग्य नहीं है **सा**-वह **लच्छी**-लक्ष्मी **हु**-निश्चय से **चिरं**-चिरकाल तक **भूमीइ**-भूमि पर **पासाणोव्व**-पाषाण के समान **चिट्ठदे**-ठहरती है।

को वि पदो होदि थिरो, चक्कि-काम-तित्थयर-कुलयरो णो।
महिंदो मंडलीगो, हरि-पडिहरि-लोगपालादी।।31।।

अन्वयार्थ-चक्कि-काम-तित्थयर-कुलयरो-चक्रवर्ती, कामदेव, तीर्थंकर, कुलकर **महिंदो मंडलीगो**-महेन्द्र, मंडलीक (आदि राजा) **हरि-पडिहरि-लोगपालादी**-नारायण, प्रतिनारायण, लोकपालादि **को वि पदो**-कोई भी पद **थिरो**-स्थिर **णो होदि**-नहीं होता।

कस्स वि पदिट्ठ-पूया, माण-सम्माण-कित्ती सक्कारो।
ठादि पुण्णोदयेणं, पावुदयेण खयेदि सिग्घं।।32।।

अन्वयार्थ-कस्स वि-किसी की भी **पदिट्ठ-पूया**-प्रतिष्ठा, पूजा **माण-सम्माण-कित्ती**-मान, सम्मान, कीर्ति **सक्कारो**-सत्कार **पुण्णोदयेण**-पुण्योदय से ही **ठादि**-स्थिर होती है और **पावुदयेण**-पाप के उदय से **सिग्घं**-शीघ्र **खयेदि**-नष्ट हो जाती हैं।

पुण्णोदयेण जीवा, लहंति सव्वदाणेगविह-सुहाणि।
खयंति पावुदयेणं, तम्हा पुण्णकज्जं करेज्ज।।33।।

अन्वयार्थ-जीवा-जीव **पुण्णोदयेण**-पुण्योदय से **सव्वदा**-सर्वदा **अणेगविह-सुहाणि**-नाना प्रकार के सुखों को **लहंति**-प्राप्त करते हैं (और) **पावुदयेणं**-पाप के उदय से **खयंति**-नष्ट हो जाते हैं **तम्हा**-इसीलिए सदा **पुण्णकज्जं**-पुण्य कार्य **करेज्ज**-करना चाहिए।

णिच्चं दव्वणयेणं, पज्जयणयेणं अणिच्चं दव्वं।
भव्वाणिच्चमणुवेक्ख-मुहयदिट्ठीए चिंतेज्जा।।34।।

अन्वयार्थ-दव्वं-द्रव्य **दव्वणयेणं**-द्रव्य नय से **णिच्चं**-नित्य है **पज्जय-णयेणं**-पर्याय नय से **अणिच्चं**-अनित्य है **भव्वा**-भव्यों को **अणिच्चं**-अनित्य **अणुवेक्खं**-अनुप्रेक्षा का **उहयदिट्ठीए**-उभय दृष्टि से **चिंतेज्जा**-चिंतन करना चाहिए

अशरण अनुप्रेक्षा

इह संसारे घोरे, णो दिस्सेदि सरणोव्व को वि अणू।
बंभहरिहरिंदादी, जाणदु वि अहमिंदासरणो ।।35।।

अन्वयार्थ-इह-इस **घोरे**-घोर **संसारे**-संसार में **को वि**-कोई भी **अणू**-अणु **सरणोव्व**-शरण रूप **णो दिस्सेदि**-दिखाई नहीं देता **अहमिंदा**-अहमिन्द्र **बंभहरिहरिंदादी**-ब्रह्मा, हरि, हर, इंद्र आदि **वि**-भी **असरणो**-अशरण **जाणदु**-जानो।

याण-जोव्वण-रयणाणि, भवण-णयर-सेण्णबलत्थ-सत्थाणि।
इमाणि काणि सरणाणि, ण एत्तो उज्झेज्ज ममत्तं।।36।।

अन्वयार्थ-याण-जोव्वण-रयणाणि-वाहन, यौवन, रत्न **भवण-णयर-सेण्णबलत्थ-सत्थाणि**-भवन, नगर, सैन्य बल, अस्त्र-शस्त्र, **इमाणि काणि**-ये कोई भी **ण सरणाणि**-शरण नहीं हैं (अर्थात् मृत्यु से नहीं बचा सकते अत:) **एत्तो**-इनसे **ममत्तं**-ममत्व **उज्झेज्ज**-त्याग देना चाहिए।

णहि सरणं धण-धण्णं, असणं वसणं भायणमोसही य।
मंत-तंत-विज्जादी, मिच्चुयाले ण रक्खदि को वि।।37।।

अन्वयार्थ-धण-धण्णं-धन धान्य **असणं**-भोजन **वसणं**-वस्त्र **सरणं**-शरण **णहि**-नहीं हैं **भायणमोसही**-बर्तन, औषधि **य**-और **मंत-तंत-विज्जादी**-मंत्र, तंत्र, विद्या आदि शरण नहीं हैं **मिच्चुयाले**-मरण समय में **को वि**-कोई भी **ण रक्खदि**-रक्षा नहीं करता।

चंदो अक्को भोमो, कुज-बुह-जीवा सणी तहा राहू।
केदू णो को वि गहो, रक्खेदुं जीवा सक्केदि।।38।।

अन्वयार्थ-चंदो-चन्द्र **अक्को**-सूर्य **भोमो**-मंगल **कुज-बुह-जीवा**-गुरु, बुध, शुक्र **सणी**-शनि **राहू**-राहू **तहा**-तथा **केदू**-केतु **को वि**-कोई भी **गहो**-ग्रह **जीवा**-जीवों की **रक्खेदुं**-रक्षा करने में **सक्केदि णो**-समर्थ नहीं होता है।

असुरो णाग-सुपण्णो, विज्जुदग्गि-दीव-दिक्कुमारादी।
एते सव्वा इंदा, ण आउं रक्खेदुं सक्का।।39।।

अन्वयार्थ-असुरो-असुर कुमार **णाग-सुपण्णो**-नागकुमार, सुपर्णकुमार **विज्जुदग्गि-दीव-दिक्कुमारादी**-विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, दीपकुमार, दिक्कुमारादि **एते**-ये **सव्वा**-सभी **इंदा**-इंद्र **आउं रक्खेदुं**-आयु की रक्षा करने में **ण सक्का**-समर्थ नहीं हैं।

सोहम्मीसाणो खलु, सणक्कुमारो माहिंदो बंभो।
इच्चादिंद-पदींदा, ण सक्के जीवा रक्खेदुं।।40।।

अन्वयार्थ-सोहम्मीसाणो-सौधर्मेंद्र, ईशानेंद्र **सणक्कुमारो-माहिंदो बंभो**-सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मेन्द्र **इच्चादिंद-पदींदा**-इत्यादि इंद्र, प्रतीन्द्र भी **खलु**-निश्चय से **जीवा रक्खेदुं**-जीवों की रक्षा करने में **ण सक्के**-समर्थ नहीं हैं।

सक्को धणदहमिंदो, सची लोगपालो इंद-जूहं च।
आउक्खय-समयेते, ण सक्के जीवा रक्खेदुं।।41।।

अन्वयार्थ-सक्को-शक्र **धणदहमिंदो**-कुबेर, अहमिंद्र **सची**-शचि इंद्राणी

लोगपालो-लोकपाल **च**-और **इंद-जूहं**-इंद्रों का समूह **आउक्खय-समये**-आयु क्षय के समय में **एते**-ये **जीवा**-जीवों की **रक्खेदुं**-रक्षा करने में **ण सक्के**-समर्थ नहीं हैं।

मिच्चु-आगदयालम्मि, जोइणि-जंत-हय-गय-जक्खादी य।
होंति णिरत्थगा सया, कालसीहो भक्खदि जीवं।।42।।

अन्वयार्थ-मिच्चु-आगदयालम्मि-मृत्यु के आने के समय **जोइणि-जंत-हय-गय-जक्खादी य**-योगिनी (काल योगिनी) यंत्र, घोड़ा, हाथी, यक्ष आदि **सया**-सदा **णिरत्थगा**-निरर्थक **होंति**-होते हैं **कालसीहो**-काल रूपी सिंह **जीवं**-जीव का **भक्खदि**-भक्षण कर लेता है।

जह सीहो गहदि मिगा, तह मिच्चुणा खलु गहिज्जदि पाणी।
तम्हा मिच्चुयाले ण, को वि सक्को आउं देदुं।।43।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **सीहो**-सिंह **मिगा**-मृगों को **गहदि**-पकड़ लेता है **तह**-उसी प्रकार **पाणी**-प्राणी **मिच्चुणा**-मृत्यु के द्वारा **गहिज्जदि**-पकड़ लिया जाता है **तम्हा**-इसीलिए **मिच्चुयाले**-मृत्यु काल में **खलु**-निश्चय से **को वि**-कोई भी **आउं**-आयु को **देदुं**-देने में **ण सक्को**-समर्थ नहीं है।

मादु-पिदू सहोदरो, पुत्त-कलत्तं सुदा बंधुवग्गो।
अणेग-संबंधि-जणा, ण जीवा रक्खिदुं सक्के वि।।44।।

अन्वयार्थ-मादु-पिदू-माता, पिता **सहोदरो**-सहोदर (भाई) **पुत्त-कलत्तं**-पुत्र, स्त्री **सुदा**-पुत्री **बंधुवग्गो**-बंधु वर्ग **य**-और **अणेग-संबंधि-जणा**-अनेक संबंधी जन **वि**-भी **जीवा**-जीवों की **रक्खिदुं**-रक्षा करने में **ण सक्के**-समर्थ नहीं हैं।

को वि जम्मदे लोये, तस्स कहंपि संभवो रक्खणं ण।
सव्व-पाणी रक्खिदुं, हवेदि धम्मो खलु समत्थो।।45।।

अन्वयार्थ-को वि-(जो) कोई भी **लोये**-लोक में **जम्मदे**-जन्म लेता है **तस्स**-उसकी (मृत्यु से) **रक्खणं**-रक्षा करना **कहंपि**-कैसे भी **संभवो**

ण-संभव नहीं है **खलु**-निश्चय से **धम्मो**-धर्म ही **सव्व-पाणी रक्खिदुं**-सभी प्राणियों की रक्षा करने में **समत्थो**-समर्थ **हवेदि**-होता है।

ओदइय-उवसमादो, खओवसम-भावादो लद्धफलं।
कया वि ण होदि सरणं, जदो होंति णस्सरा भावा।।46।।

अन्वयार्थ-ओदइय-उवसमादो-औदयिक भाव, उपशम भाव (और) **खओवसम-भावादो**-क्षयोपशम भाव से **लद्धफलं**-प्राप्त फल **कया वि**-कभी भी **सरणं**-शरण **ण होदि**-नहीं होता **जदो**-क्योंकि **भावा**-भाव **णस्सरा**-नश्वर **होंति**-होते हैं।

विज्जा कला य बुद्धी, विज्जाहर-अंगरक्खगा सेणा।
दुग्गो गिरी सुरंगो, सरणं ण पाताललोगो वि।।47।।

अन्वयार्थ-विज्जा-विद्या **कला**-कला **बुद्धी**-बुद्धि **विज्जाहर-अंगरक्खगा**-विद्याधर, अंगरक्षक **सेणा**-सेना **दुग्गो**-दुर्ग **गिरी**-पर्वत **सुरंगो**-सुरंग **य**-और **पाताललोगो**-पाताललोक **वि**-भी (जीव के लिए) **ण सरणं**-शरण नहीं है।

जादी कुलं च रूवं, सरणं ण इड्ढि-बल-वण्णाइ-गुणा।
जम्हा देहासिदा हि, सुद्ध-रूव-जुदप्पा सरणं।।48।।

अन्वयार्थ-जादी-जाति **कुलं**-कुल **रूवं**-रूप **इड्ढि-बल-वण्णाइ-गुणा च**-रिद्धी, बल और वर्णादि गुण **ण सरणं**-शरण नहीं हैं **जम्हा**-क्योंकि **देहासिदा**-ये देहाश्रित गुण हैं **सुद्ध-रूव-जुदप्पा**-शुद्ध स्वरूप से युक्त आत्मा **हि**-ही **सरणं**-शरण है।

अरिहंत-सिद्ध-साहू, केवलि-पणीद-जिणधम्मो णिच्चं।
णियमेण होदि सरणं, सद्दिट्ठीण भव्व-जीवाण।।49।।

अन्वयार्थ-अरिहंत-सिद्ध-साहू-अरिहंत, सिद्ध, साधु **केवलि-पणीद-जिण-धम्मो**-केवली भगवान् के द्वारा प्रणीत जिनधर्म **णिच्चं**-नित्य ही **सद्दिट्ठीण**-सम्यक्दृष्टि **भव्व-जीवाण**-भव्य जीवों के लिए **णियमेण**-नियम से **सरणं**-शरण **होदि**-होता है।

जीवस्स णिच्छयेणं, अप्प-सुद्ध-सरूवो होदि सरणं।
ववहारेण जाणेदु, मुणिस्स रयणत्तयं सरणं।।50।।

अन्वयार्थ-अप्प-सुद्ध-सरूवो-आत्मा का शुद्ध स्वरूप **जीवस्स**-जीव के लिए **णिच्छयेणं**-निश्चय से **सरणं**-शरण **होदि**-होता है **ववहारेण**-व्यवहार से **मुणिस्स**-मुनि का **रयणत्तयं**-रत्नत्रय **सरणं**-शरण **जाणेदु**-जानो।

उत्तम-खमाइ-धम्मो, अहिंसाइ-पणमहव्वदं सरणं।
सम्म-पुण्णं वि सरणं, सरणं णिय-चेदणाइ गुणा।।51।।

अन्वयार्थ-(जीव के लिए) **उत्तम-खमाइ-धम्मो**-उत्तम क्षमादि धर्म **अहिंसाइ-पणमहव्वदं**-अहिंसादि पाँच महाव्रत **सरणं**-शरण हैं **सम्म-पुण्णं**-सम्यक् पुण्य **वि**-भी **सरणं**-शरण है **णिय-चेदणाइ**-निज चेतना के **गुणा**-गुण **सरणं**-शरण हैं।

परमट्ठेणं भणिदं, वीयरायो जिणदेवो सरणं च।
जिणागमो जिणधम्मो, णिग्गंथ-गुरू महासरणं।।52।।

अन्वयार्थ-वीयरायो-वीतराग **जिणदेवो**-जिनदेव **सरणं**-शरण हैं **जिणागमो**-जिनागम **जिणधम्मो**-जिनधर्म **च**-और **णिग्गंथ-गुरू**-निर्ग्रन्थ गुरु **महासरणं**-महाशरण हैं ऐसा **परमट्ठेणं**-परमार्थ से **भणिदं**-कहा गया है।

संसारानुप्रेक्षा

होच्चु जो कम्मजुत्तं, परिब्भमेदि जस्सिं सया जीवो।
णादव्वो संसारो, लहदि जम्माइ-घोर-दुहाणि।।53।।

अन्वयार्थ-जो-जो **जीवो**-जीव **कम्मजुत्तं**-कर्म से युक्त **होच्चु**-होकर **जस्सिं**-जहाँ **सया**-सदा **परिब्भमेदि**-परिभ्रमण करता है (उसे) **संसारो**-संसार **णादव्वो**-जानना चाहिए (जीव संसार में) **जम्माइ-घोर-दुहाणि**-जन्मादि घोर दु:खों को **लहदि**-प्राप्त करता है।

पंचविहो संसारो, दव्व-खेत्त-याल-भाव-संसारो।
पंचम-भव-संसारो, वा परिवट्टणं णादव्वं।।54।।

अन्वयार्थ-संसारो-संसार **पंचविहो**-पाँच प्रकार का है **दव्व-खेत्त-याल-भाव-संसारो**-द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव संसार (तथा) **पंचम-भव-संसारो**-पाँचवा भव (ये पंच) संसार **वा**-अथवा ये **परिवट्टणं**-पंच परिवर्तन **णादव्वं**-जानना चाहिए।

विज्जंते लोगम्मि य, कम्म-णोकम्म-वग्गणा य विविहा।
बंधदि अणंतवारं, मुंचेदि कमेण संसारी।।55।।

अन्वयार्थ-लोगम्मि-लोक में **विविहा**-विविध **कम्म-णोकम्म-वग्गणा य**-कर्म वर्गणा व नोकर्म वर्गणा **विज्जंते**-विद्यमान हैं **संसारी**-संसारी जीव (उन्हें) **कमेण**-क्रम से **अणंतवारं**-अनंतबार **बंधदि**-बांधता है **य**-और **मुंचेदि**-छोड़ता है।

लोगे ण पदेसेसो, जत्थ जादि ण मरदि अणंतवारं।
भुंजदि कमेण जीवो, लोगस्स पत्तेय-पदेसं।।56।।

अन्वयार्थ-लोगे-लोक में **पदेसेसो**-ऐसा एक भी प्रदेश **ण**-नहीं है **जत्थ**-जहाँ (जीव ने) **अणंतवारं**-अनंत बार **जादि ण मरदि**-जन्म व मरण न किया हो **जीवो**-जीव **लोगस्स**-लोक के **पत्तेय-पदेसं**-प्रत्येक प्रदेश को **कमेण**-क्रम से **भुंजदि**-भोगता है।

अवसप्पिणि-उवसप्पिणि-पत्तेय-समयम्मि जम्मदि कमेण।
जीवो मरदि कमेण हि, अकमेण णो गहदे णाणी।।57।।

अन्वयार्थ-अवसप्पिणि-उवसप्पिणि-पत्तेयसमयम्मि-अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी के प्रत्येक समय में **जीवो**-जीव **कमेण**-क्रम से **जम्मदि**-जन्म लेता है व **कमेण**-क्रम से **हि**-ही **मरदि**-मृत्यु को प्राप्त करता है **णाणी**-ज्ञानी **अकमेण**-अक्रम से **णो गहदे**-ग्रहण नहीं करते।

जोगठाणेहि जीवो, कसायज्झयवसायठाणेहिं च।
अणुभाग-ठिदिठाणेहि, परिणमदे भाव-संसारे।।58।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव **जोगठाणेहि**-योगस्थान **कसायज्झय-वसायठाणेहिं**-कषायाध्यवसाय स्थान **अणुभाग-ठिदिठाणेहि-च**-अनुभाग बन्धाध्यवसाय व स्थिति स्थान के द्वारा **भाव-संसारे**-भाव संसार में **परिणमदे**-परिणमन करता है।

जावइआ चउगदीण, जहण्णे आउम्मि होंति समया हु।
तावइअ-वारं मरदि, जम्मदि जीवो लहदि दुक्खं।।59।।

अन्वयार्थ-चउगदीण-चारों गतियों की **जहण्णे आउम्मि**-जघन्य आयु में **जावइआ**-जितने **समया**-समय **होंति**-होते हैं **जीवो**-जीव **तावइअ**-उतनी **हु**-ही **वारं**-बार **जम्मदि मरदि**-जन्म मरण करता है व **दुक्खं**-दु:ख **लहदि**-प्राप्त करता है।

लहदि जहण्णाऊदो, अणंतभवा वरट्ठिदि-पज्जंतो।
चउगदीणं कमेणं, समयं समयं वड्ढमाणं।।60।।

अन्वयार्थ-चउगदीणं-चारों गतियों की **जहण्णाऊदो**-जघन्य आयु से लेकर **वरट्ठिदि-पज्जंतो**-उत्कृष्ट स्थिति पर्यंत **समयं समयं वड्ढमाणं**-एक-एक समय बढ़ता हुआ **कमेणं**-क्रम से **अणंतभवा**-अनंत भवों को **हु**-निश्चय से **लहदि**-प्राप्त करता है।

देवगदीए जीवो, भुंजदि इगतीस-सागरस्साउं।
उप्पज्जेदि हु जम्हा, मिच्छद्दिट्ठी गेवेज्जंतो।।61।।

अन्वयार्थ-विशेषता यह है कि **देवगदीए**-देवगति में **जीवो**-जीव **इगतीस-सागरस्साउं**-31 सागर की आयु **भुंजदि**-भोगता है **जम्हा**-क्योंकि **मिच्छद्दिट्ठी**-मिथ्यादृष्टि **गेवेज्जाउ**-ग्रैवेयक पर्यंत **हु**-ही **उप्पज्जेदि**-उत्पन्न होता है।

लोगंतिय-देवो खलु, लोगपालो सची दक्खिणेंदो य।
णहमिंदादी भूदो, अज्जंतं कया जीवो सो।।62।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **सो जीवो**-यह जीव **अज्जंतं**-आज तक **कया**-कभी **लोगंतिय-देवो**-लौकांतिक देव **लोगपालो**-लोकपाल **सची**-शचि **दक्खिणेंदो**-दक्षिणेन्द्र **य**-व **अहमिंदादी**-अहमिन्द्र आदि **ण भूदो**-नहीं हुआ।

चक्कि-तित्थयर-पडिहरि-काम-हरि-बलभद्दाइ-पदाइं च।
सामण्णेणज्जंतं, जीवेण लहिदाइं ण कया।।63।।

अन्वयार्थ-सामण्णेण-सामान्य से **जीवेण**-इस जीव के द्वारा **अज्जंतं**-आज तक **कया**-कभी **चक्कि-तित्थयर-पडिहरि-काम-हरि-बलभद्दाइ-पदाइं च**-चक्रवर्ती, तीर्थंकर, प्रतिनारायण, कामदेव, नारायण व बलभद्रादि पद **ण लहिदाइं**-प्राप्त नहीं किए गए। (ये कथन सामान्य की अपेक्षा ग्रहण करना चाहिए)

अणाइ-मिच्छादिट्ठी, लोगे भमेदि अणंतयालंतो।
सादी मिच्छादिट्ठी, लहदि सिव-सुहं थोवयाले।।64।।

अन्वयार्थ-अणाइ-मिच्छादिट्ठी-अनादि मिथ्यादृष्टि **अणंतयालंतो**-अनंत काल तक **लोगे**-लोक में **भमेदि**-भ्रमण करता है **सादी मिच्छादिट्ठी**-सादि मिथ्यादृष्टि **थोवयाले**-स्तोक काल में **सिव-सुहं**-शिव सुख **लहदि**-प्राप्त करता है।

णिरयगदीए जीवो, सहेदि तिव्वुण्ह-सीदाइ-दुहाणि।
सुइरं भू-फास-दुहं, अइवेयणं छुह-तिसादीण।।65।।

अन्वयार्थ-णिरयगदीए-नरक गति में **जीवो**-जीव **सुइरं**-लंबे समय तक **तिव्वुण्ह-सीदाइ-दुहाणि**-तीव्र गर्मी व सर्दी आदि के दुःख **भू-फास-दुहं**-भूमि स्पर्श का दुःख व **छुह-तिसादीण**-क्षुधा तृषादि की **अइवेयणं**-अतिवेदना को **सहेदि**-सहता है।

णिरये णेरइयेहिं, णेरइयो तिलं-तिलं छिंदिज्जइ।
भिंदिज्जइ पेलिज्जइ, घादिज्जइ कढज्जइ अणले।।66।।

अन्वयार्थ-णिरये-नरक में **णेरइयेहिं**-नारकियों के द्वारा **णेरइयो**-नारकी **तिलं तिलं**-तिल-तिल **छिंदिज्जइ**-छेदा जाता है **भिंदिज्जइ**-भेदा जाता है **पेलिज्जइ**-पेला जाता है **घादिज्जइ**-घात किया जाता है व **अणले**-अग्नि में **कढज्जइ**-पकाया जाता है।

तिरियगदीए जीवा, वध-बंधण-ताडण-मारणादीण।
भारवहण-छुहा-तिसा-भय-दारुण-दुहाणि पावंति।।67।।

अन्वयार्थ-तिरियगदीए-तिर्यंच गति में **जीवा**-जीव **वध-बंधण-ताडण-मारणादीण**-वध, बंधन, ताड़न, मारण आदि के और **भारवहण-छुहा-तिसा-भय-दारुण-दुहाणि**-भार-वहन, क्षुधा, तृषा, भय इन महा दु:खों को **पावंति**-प्राप्त करते हैं।

देवेसु किंचि देवा, संकिलिट्ठ-माणसदुक्खं सहंति।
पारतंतस्स दुहाइं, विसय-विजोगाइ-दुक्खाइं।।68।।

अन्वयार्थ-देवेसु-देवों में **किंचि**-कुछ **देवा**-देव **संकिलिट्ठ-माणसदुक्खं**-अति संक्लेश युक्त मानसिक दु:ख को **सहंति**-सहन करते हैं **पारतंतस्स**-पराधीनता के **दुहाइं**-दु:ख व **विसय-विजोगाइ- दुक्खाइं**-विषय वियोगादि के बहुत दु:खों को (सहते हैं)।

जीवा माणुसगदीइ, रोय-दारिद्दाइ-दुहाणि सहंति।
इट्ठविजोगं सोगं, माणावमाणं संतावं।।69।।

अन्वयार्थ-माणुसगदीइ-मनुष्य गति में **जीवा**-जीव **रोग-दारिद्दाइ-दुहाणि**-रोग, निर्धनता आदि के दु:ख **सहंति**-सहन करते हैं **इट्ठ विजोगं**-इष्ट वियोग **सोगं**-शोक **संतावं**-संताप **माणावमाणं**-मानापमान को (सहते हैं)।

संसार-छिंदणत्थं, सुपुण्णं संगहेज्जा खलु णाणी।
चयिऊणं मोहाइं, पालदु धम्मं सगमुत्तीइ।।70।।

अन्वयार्थ-णाणी-ज्ञानीजन **संसार-छिंदणत्थं**-संसार का उच्छेद (नाश) करने के लिए **खलु**-निश्चय से **सुपुण्णं**-समीचीन पुण्य का **संगहेज्जा**-संग्रह करें **सगमुत्तीइ**-अपनी मुक्ति के लिए **मोहाइं**-मोहादि को **चयिऊणं**-त्यागकर **धम्मं**-धर्म का **पालदु**-पालन करें।

गदीसुं माणुसगदी, कम्मभूमिजो वरो माणुसेसुं।
लहिय सुह-कुल-आउं च, पालेज्ज रयणत्तय-धम्मं।।71।।

अन्वयार्थ-गदीसुं-सभी गतियों में **माणुसगदी**-मनुष्य गति व **माणुसेसुं**-मनुष्यों में **कम्मभूमिजो**-कर्मभूमिज मनुष्य **वरो**-श्रेष्ठ है **सुह-कुल-आउं च**-शुभ कुल व आयु को **लहिय**-प्राप्त कर **रयणत्तय-धम्मं**-रत्नत्रय धर्म का **पालेज्ज**-पालन करना चाहिए।

पणविह-भव-छिंदत्थं, सय चिंतेज्ज संसाराणुवेक्खं।
लहिदुं पंचम-णाणं, गदिं सव्व-पावं-खयित्ता।।72।।

अन्वयार्थ-पणविह-भव-छिंदत्थं-पांच प्रकार के संसार के क्षय के लिए **सव्व-पावं-खयित्ता**-सभी पापों का क्षयकर **पंचम-णाणं गदिं**-पंचम ज्ञान व गति की **लहिदुं**-प्राप्ति के लिए **सय**-सदा **संसाराणुवेक्खं**-संसार अनुप्रेक्षा का **चिंतेज्ज**-चिंतन करना चाहिए।

एकत्वानुप्रेक्षा

भमदि घोर-संसारे, जीवो मोहेण-मणाइयालेण।
जाणदि णो अप्पं सो, णियभावमेयत्तविभत्तं।।73।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव **अणाइयालेण**-अनादिकाल से **मोहेण**-मोह से **घोर-संसारे**-घोर संसार में **भमदि**-भ्रमण कर रहा है क्योंकि **सो**-वह **अप्पं**-आत्मा को **एयत्तविभत्तं**-एकत्व-विभक्त **णियभावं**-निज भाव को **णो**-नहीं **जाणदि**-जानता।

जीवो एगाखंडो, णिच्चो सुद्धाविकलो णिम्मोही।
चिम्मयामुत्तो सया, जाणिऊणं णियरूवं णो।।74।।
चउगदीसुं भमेदि य, णाणादुक्खाणि सहदि बहुवारं।
खलु एयत्त-सहावं, जाणदि मोक्खं लहदे तदा।।75।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव **सया**-सदा **एगाखंडो**-एक है, अखण्ड है **णिच्चो**-नित्य है **सुद्धाविकलो य**-शुद्ध व अविकल है **णिम्मोही**-निर्मोही है **चिम्मयामुत्तो**-चिन्मय व अमूर्तिक है (जीव) **णियरूवं**-निजरूप को **णो**-नहीं **जाणिऊणं**-जानकर **चउगदीसुं**-चारों गतियों में **भमेदि**-भ्रमण करता है और **बहुवारं**-बहुत बार **णाणादुक्खाणि**-नाना दु:खों को **सहदि**-सहन करता है **खलु**-निश्चय ही (जब जीव) **एयत्त-सहावं**-एकत्व स्वभाव को **जाणदि**-जानता है **तदा**-तब **मोक्खं**-मोक्ष **लहदे**-प्राप्त करता है।

अणंत-गुणा विज्जंति, पडि-जीवे चेयणाविणाभावी।
तहा वि अखंड-पिंडो, णो होदि भिण्णो भिण्णो सो।।76।।

अन्वयार्थ-पडि-जीवे-प्रत्येक जीव में **चेयणाविणाभावी**-चेतना के अविनाभावी **अणंत-गुणा**-अनंत गुण **विज्जंति**-विद्यमान हैं **तहा वि**-तथापि (वह) **अखंड-पिंडो**-अखंड पिंड है **सो**-वह (किसी भी काल में) **भिण्णो भिण्णो**-भिन्न भिन्न (निश्चय से गुण अभिन्न हैं, व्यवहार से भिन्न-भिन्न हैं) **णो होदि**-नहीं होते।

जह आयासाखंडो, धम्माधम्मा होदि एगरूवो।
तह जीवो णादव्वो, सव्वदा अमुत्तो अखंडो।।77।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **धम्माधम्मा**-धर्म, अधर्म **आयासाखंडो**-आकाश अखंड होता है **एगरूवो**-एक रूप होता है **तह**-उस प्रकार **जीवो**-जीव को **सव्वदा**-सर्वदा **अमुत्तो**-अमूर्त व **अखंडो**-अखंड **णादव्वो**-जानना चाहिए।

जीवो जम्मदि एगो, एगो हि मरदि संसारम्मि सया।
एगो करेदि पुण्णं, तहेव पावं कुणदि एक्को।।78।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव **सया**-सदा **संसारम्मि**-संसार में **एगो**-अकेला **हि**-ही **जम्मदि**-जन्म लेता है **एगो**-अकेला ही **मरदि**-मृत्यु को प्राप्त होता है **एगो**-अकेला ही **पुण्णं**-पुण्य **करेदि**-करता है **तहेव**-उसी प्रकार **एक्को**-अकेला ही **पावं**-पाप **कुणदि**-करता है।

जीवो पावं किच्चा, लहदि णिरयाइ-दुग्गदिं णियमेण।
भय-रोग-सोग-दुहाणि, पुणो पुणो पप्पोदि एक्को।।79।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव (अकेला ही) **पावं**-पाप **किच्चा**-करके **णियमेण**-नियम से **णिरयाइ-दुग्गदिं**-नरकादि दुर्गति को **लहदि**-प्राप्त करता है वह **पुणो पुणो**-पुनः पुनः **एक्को**-अकेला ही **भय-रोग-सोग-दुहाणि**-भय, रोग, शोक, दुःखों को **पप्पोदि**-प्राप्त करता है।

पुण्ण-फलेणं एक्को, भुंजेदि सुहाणि णर-सुर-गदीणं।
काम-तित्थयर-कुलयर-चक्कि-बलभद्दाणं एक्को।।80।।

अन्वयार्थ-(जीव) **पुण्ण-फलेणं**-पुण्य के फल से **एक्को**-अकेला **णर-सुर-गदीणं**-नर सुर गतियों के **सुहाणि**-सुखों को **भुंजेदि**-भोगता है **एक्को**-अकेला ही **काम-तित्थयर-कुलयर-चक्कि-बलभद्दाणं**-कामदेव, तीर्थंकर, कुलकर, चक्रवर्ती, बलभद्रों के (सुखों को भोगता है)।

पावेणेक्को जीवो, माणस-दुक्खं सरीर-कट्ठाणि य।
तहा वि इंदिय-सोक्खं, पप्पोदि पुण्णेणमेगो हि।।81।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव **पावेण**-पाप से **एक्को**-अकेला ही **माणस-दुक्खं**-मानसिक दुःख **च**-और **सरीर-कट्ठाणि**-शरीर के कष्टों को प्राप्त करता है **तहा वि**-तथापि **पुण्णेणं**-पुण्य से **एगो हि**-अकेला ही **इंदिय-सोक्खं**-इंद्रिय सुख को **पप्पोदि**-प्राप्त करता है।

पुण्णेण लहदि जीवो, धण-धण्ण-उवयरण-वाहण-सुहाणि।
इट्ठं इत्थिं पुत्तं, भादु-सुदं पिदरं मित्ताणि।।82।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव **पुण्णेण**-पुण्य से **धण-धण्ण-उवयरण-वाहण-सुहाणि**-धन-धान्य, उपकरण, वाहन सुख **इट्ठं**-इष्ट **इत्थिं**-स्त्री **पुत्तं**-पुत्र **भादुं-सुदं**-भाई, बेटी **पिदरं**-माता-पिता व **मित्ताणि**-मित्रों को **लहदि**-प्राप्त करता है।

एक्को करेज्ज जीवो, कम्मक्खयं रयणत्तय-बलेणं।
एक्को लहेदि मोक्खं, सिद्धिं खलु अणंतकालाय।।83।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **जीवो**-जीव **एक्को**-अकेला ही **रयणत्तय-बलेणं**-रत्नत्रय के बल से **कम्मक्खयं**-कर्म क्षय **करेज्ज**-करता है **एक्को**-अकेला ही **मोक्खं**-मोक्ष **लहेदि**-प्राप्त करता है (और) **अणंतकालाय**-अनंत काल तक के लिए **सिद्धिं**-सिद्धि (प्राप्त करता है)।

जणजूहं खग-पहिया, जह बहुवारं मिलंति तह जीवा।
सग-सग पयोजणेणं, गच्छंते सगदिं एक्का हु।।84।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **जणजूहं**-जनसमूह **खग-पहिया**-पक्षी और पथिक **बहुवारं**-बहुत बार **मिलंति**-मिलते हैं व पुनः **सग-सग-पयोजणेणं**-अपने अपने प्रयोजन से **गच्छंते**-चले जाते हैं **तह**-उसी प्रकार **जीवा**-जीव (मिलते हैं व पुनः) **सगदिं**-अपनी गति में **एक्का**-अकेले **हु**-ही जाते हैं।

जह मणुजा मेलयम्मि, बाल-बालिगा इत्थि-पुरिसादी य।
चिट्ठंति इगठाणम्मि, गच्छंति सग-सग-गिहमेक्का।।85।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **मणुजा**-मनुष्य **मेलयम्मि**-मेले में **बाल-बालिगा**-बालक-बालिका **इत्थि-पुरिसादी य**-स्त्री और पुरुषादि **इगठाणम्मि**-एक स्थान पर **चिट्ठंति**-रहते हैं पुनः **सग-सग-गिहं**-अपने-अपने गृह **एक्का**-अकेले ही **गच्छंति**-जाते हैं।

तरंगिणिं तरंति खलु, जहा बहुपहिया चिट्ठिच्चु तरणिं।
सग-सग-ठाणाणि पुणो, गच्छंति ते सव्वा एक्का।।86।।

अन्वयार्थ-जहा-जिस प्रकार **बहुपहिया**-बहुत से पथिक **तरणिं**-नाव में **चिट्ठिच्चु**-बैठकर **तरंगिणिं**-नदी **तरंति**-पार करते हैं **पुणो**-पुनः **सग-सग-ठाणाणि**-अपने अपने स्थानों पर **ते सव्वा**-वे सभी **एक्का खलु**-अकेले ही **गच्छंति**-जाते हैं।

भिण्ण-देसाण पक्खी, इग-रुक्खम्मि जह ठंति रत्तीए।
गच्छंति भिण्ण-दिसाउ, स-कज्जत्थं तह जीवेक्का।।87।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **भिण्ण-देसाण**-भिन्न देशों के **पक्खी**-पक्षी **रत्तीए**-रात्रि में **इग-रुक्खम्मि**-एक वृक्ष पर **ठंति**-ठहरते हैं व पुनः **स-कज्जत्थं**-अपने कार्यों के लिए **भिण्ण-दिसाउ**-भिन्न दिशाओं को **गच्छंति**-चले जाते हैं **तह**-उसी प्रकार **जीवेक्का**-जीव (संसार में मिलते हैं पुनः आयु पूर्ण होने पर) अकेले ही (जाते हैं)।

अन्यत्वानुप्रेक्षा

भिण्णाणि होज्ज णिच्चं, परोप्परे खलु सव्वाणि दव्वाणि।
ण कत्थ ठाणे कया वि, जीवो इमो अजीवरूवो।।88।।

अन्वयार्थ-णिच्चं-नित्य **सव्वाणि**-सभी **दव्वाणि**-द्रव्य **परोप्परे**-आपस में **भिण्णाणि**-भिन्न **होज्ज**-होते हैं **खलु**-निश्चय से **इमो जीवो**-यह जीव **कया वि**-कभी भी **कत्थ ठाणे**-किसी भी स्थान पर **ण अजीवरूवो**-अजीव रूप नहीं (हो सकता)।

कूवम्मि णीरं जहा, होज्जा कूवादो अण्णरूवो हि।
जीवो देहम्मि तहा, भिण्ण-जादि-रूवो ठादि खलु।।89।।

अन्वयार्थ-जहा-जिस प्रकार **कूवम्मि**-कुँए में **णीरं**-नीर **कूवादो**-कुँए से **अण्णरूवो**-अन्य रूप **हि**-ही **होज्जा**-होता है **तहा**-उसी प्रकार **देहम्मि**-देह में **जीवो**-जीव **खलु**-निश्चय से **भिण्ण-जादि-रूवो**-भिन्न जाति रूप ही **ठादि**-ठहरता है।

जह सरिदाइ जलयरो, भिण्णो वसदि सव्वदा सरिदाए।
जीवो देहम्मि तहा, भिण्ण-पयारेणं ठादि खलु।।90।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **सरिदाइ**-सरिता में **जलयरो**-जलचर जीव **सरिदाए**-सरिता से **सव्वदा**-सर्वदा **भिण्णो**-भिन्न **वसदि**-रहता है **तहा**-उसी प्रकार **जीवो**-जीव **खलु**-निश्चय से **देहम्मि**-देह में **भिण्ण-पयारेणं**-भिन्न प्रकार से **ठादि**-ठहरता है।

कमलं जहा तडागे, णीरादो भिण्णं विहसदि णिच्चं।
दंसण-णाणेहि होदि, जीवो भिण्णो हु देहादो।।91।।

अन्वयार्थ-जहा-जिस प्रकार **तडागे**-सरोवर में **कमलं**-कमल **णिच्चं**-नित्य **णीरादो**-जल से **भिण्णं**-भिन्न **विहसदि**-खिलता है उसी प्रकार **जीवो**-जीव **हु**-निश्चय से **दंसण-णाणेहि**-दर्शन, ज्ञान के द्वारा **देहादो**-देह से **भिण्णो**-भिन्न **होदि**-होता है।

रयणाणि वि सायरम्मि, जहा विज्जंते भिण्ण-रूवेणं।
देहम्मि इमो जीवो, अणादियालादो वसदि तह।।92।।

अन्वयार्थ-जहा-जिस प्रकार **सायरम्मि**-सागर में **रयणाणि**-रत्न **भिण्ण-रूवेणं**-भिन्न रूप से **विज्जंते**-विद्यमान हैं **तह**-उसी प्रकार **इमो**-यह **जीवो**-जीव **वि**-भी **अणादियालादो**-अनादिकाल से **देहम्मि**-देह में (भिन्न रूप से) **वसदि**-रहता है।

जह सिप्पीए मुत्ता, होदि भिण्ण-रूवाणाइयालेण।
तह जीवो देहादो, भिण्णो हु सहावरूवेणं।।93।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **मुत्ता**-मोती **सिप्पीए**-सीप से **भिण्ण-रूवा**-भिन्न रूप **होदि**-होता है **तह**-उसी प्रकार **जीवो**-जीव **अणाइयालेण**-अनादिकाल से **सहावरूवेणं**-स्वभाव से **देहादो**-देह से **भिण्णो**-भिन्न **हु**-ही होता है।

जहा सप्पी खीरस्स, सव्वंसेसु विज्जदि सयायाले।
तह णोकम्मे जीवो, विज्जेदि हु सुद्धरूवेणं।।94।।

अन्वयार्थ-**जहा**-जिस प्रकार **खीरस्स**-दूध के **सव्वंसेसु**-सभी अंशो में **सयायाले**-सदाकाल **सप्पी**-घी **विज्जदि**-विद्यमान है **तह**-उसी प्रकार **णोकम्मे**-नोकर्म (शरीर) में **जीवो**-जीव **हु**-निश्चय से **सुद्धरूवेणं**-शुद्ध रूप से **विज्जेदि**-विद्यमान है।

जह णारिएलफलम्मि, तस्स गब्भो खलु विज्जदे भिण्णो।
भिण्णाणि णादव्वाणि, अप्पादो दव्वकम्माइं।।95।।

अन्वयार्थ-**जह**-जिस प्रकार **णारिएलफलम्मि**-नारियल फल में **तस्स गब्भो**-उसका गर्भ अर्थात् गोला **भिण्णो**-भिन्न **विज्जदे**-रहता है (उसी प्रकार) **अप्पादो**-आत्मा से **दव्वकम्माइं**-द्रव्य कर्म **खलु**-निश्चय से **भिण्णाणि**-भिन्न **णादव्वाणि**-जानने चाहिए।

जीवम्मि भावकम्मं, तह णादव्वं अण्णं जीवादो।
जह दुद्धे सुह-णीरं, एगमेव भासदे णिच्चं।।96।।

अन्वयार्थ-**जह**-जिस प्रकार **दुद्धे**-दूध में **सुहणीरं**-शुभ नीर **णिच्चं**-नित्य **एगमेव**-एकमेव **भासदे**-भासता है **तह**-उसी प्रकार **जीवम्मि**-जीव में **भावकम्मं**-भाव कर्म (एकमेक भासता है किंतु उसे) **जीवादो**-जीव से **अण्णं**-अन्य **णादव्वं**-जानना चाहिए।

हेमपासाणम्मि जह, सव्वदा विज्जदे सुवण्ण-वण्णो।
तविद-कणगस्स वण्णो, होज्जा विसिट्ठो तादो खलु।।97।।
तहेव भावकम्माणि, विज्जंति जीवे अणाइयालेण।
तहा वि तवेण णट्ठे, होदि सुद्धो कम्महीणो य।।98।।

अन्वयार्थ-**जह**-जिस प्रकार **हेमपासाणम्मि**-स्वर्ण पाषाण में **सव्वदा**-सदा **सुवण्ण-वण्णो**-स्वर्ण वर्ण **विज्जदे**-विद्यमान होता है किन्तु **खलु**-निश्चय से **तविद-कणगस्स**-तपे हुए स्वर्ण का **वण्णो**-वर्ण **तादो**-उससे

विसिट्ठो-विशिष्ट ही **होज्जा**-होता है **तहेव**-उसी प्रकार **जीवे**-जीव में **अणाइयालेण**-अनादिकाल से **भावकम्माणि**-भाव कर्म **विज्जंति**-विद्यमान हैं **तहावि**-तथापि **तवेण**-तप के द्वारा **णट्ठे**-(कर्म) नष्ट होने पर (जीव) **सुद्धो**-शुद्ध **य**-और **कम्महीणो**-कर्महीन **होदि**-होता है (उसका ज्ञानादि स्वभाव निखरकर आता है)।

अण्णा हु होज्ज मादू, जणगो वि अण्णरूवो जीवादो।
भगिणी इत्थी भादू, मित्त-पुत्त-सुदादी अण्णा।।99।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **जीवादो**-जीव से **मादू**-माता **अण्णा**-अन्य **होज्ज**-होती है **जणगो**-पिता **वि**-भी **अण्णरूवो**-अन्य रूप होता है **भगिणी**-बहन **इत्थी**-स्त्री **भादू**-भाई **मित्त-पुत्त-सुदादी**-मित्र, पुत्र, पुत्री आदि भी (जीव से) **अण्णा**-अन्य हैं।

धण-धण्ण-खेत्तमण्णं, दासी दासो भवणं वाहणं च।
तहेवावणो अण्णो, वत्थु-णिम्माणसालण्णा य।।100।।

अन्वयार्थ-(जीव से) **धण-धण्ण-खेत्तमण्णं**-धन-धान्य-खेत अन्य है **दासी**-दासी **दासो**-दास **भवणं**-भवन **च**-और **वाहणं**-वाहन अन्य है **तहेव**-उसी प्रकार **आवणो**-दुकान **अण्णो**-अन्य है **वत्थु-णिम्माणसाला**-वस्तुओं की निर्माणशाला (कारखाना) **अण्णा**-अन्य है।

दहविह-पाणा अण्णा, पंचिंदियाइ-जादी खलु अण्णा।
रूव-जोगाइ-अण्णा, चउसण्णा वि अण्णा भणिदा।।101।।

अन्वयार्थ-(जीव से) **दहविह-पाणा**-दस प्रकार के प्राण **अण्णा**-अन्य हैं **पंचिंदियाइ-जादी**-पंचेन्द्रियादि जाति **खलु**-निश्चय से **अण्णा**-अन्य हैं **रूव-जोगाइ-अण्णा**-रूप, योगादि अन्य हैं (तथा) **चउ-सण्णा**-चार संज्ञा **वि**-भी **अण्णा**-अन्य **भणिदा**-कही गई हैं।

वेदो अण्णो भणिदो, अण्णं संजम-खओवसम-णाणं।
खलु खओवसम-सत्ती, दंसण-लद्धी तहा अण्णा।।102।।

अन्वयार्थ-(आत्मा से) **वेदो**-वेद **अण्णो**-अन्य **भणिदो**-कहा गया है

संजम-खओवसम-णाणं-संयम, क्षयोपशम ज्ञान **अण्णं**-अन्य (कहा गया है) **खओवसम-सत्ती**-क्षायोपशम शक्ति **तहा**-तथा **दंसण-लद्धी**-क्षायोपशम दर्शन लब्धि **खलु**-निश्चय से **अण्णा**-अन्य हैं।

अण्णो जीवसमासो, मग्गणठाणा पज्जत्ती अण्णा।
ओदइय-खओवसमिय-उवसम-भावा तहा अण्णा।।103।।

अन्वयार्थ-(आत्मा से) **जीवसमासो**-जीव समास **अण्णो**-अन्य हैं **मग्गणठाणा**-मार्गणा स्थान **पज्जत्ती**-पर्याप्ति **अण्णो**-अन्य हैं **ओदइय-खओवसमिय-उवसम-भावा तहा**-औदायिक भाव, क्षायोपशमिक भाव तथा उपशम भाव **अण्णा**-अन्य हैं।

बि-पारिणामिय-भावा, चदुणाणं तयदंसणं च अण्णं।
अण्णा ति-उवओगा य, संजमो अण्णो अप्पादो।।104।।

अन्वयार्थ-बि-पारिणामिय-भावा-दो पारिणामिक भाव **चदुणाणं**-चार ज्ञान **च**-और **तयदंसणं**-तीन दर्शन **अण्णं**-अन्य हैं **ति-उवओगा**-तीन उपयोग **अण्णा**-अन्य हैं **य**-और **संजमो**-संयम **अप्पादो**-आत्मा से **अण्णो**-अन्य है।

पोग्गलासवो अण्णो, बंधो संवरो णिज्जरा अण्णा।
मोक्खो अण्णो णेयो, धम्माइ-झाणं खलु अण्णं।।105।।

अन्वयार्थ-पोग्गलासवो-पुद्गल का आस्रव **अण्णो**-अन्य है **बंधो**-बंध **संवरो**-संवर **णिज्जरा**-निर्जरा **अण्णा**-अन्य है **मोक्खं**-मोक्ष को **अण्णं**-अन्य **णेयो**-जानना चाहिये **धम्माइ-झाणं**-धर्मादि ध्यान **खलु**-निश्चय से **अण्णं**-अन्य जानो।

सुद्धणयेण जीवादु, अण्णा वि सव्व-विहाव-पज्जाया।
णाणाइ-सहाव-जुदो, जीवो सुद्धो कम्महीणो।।106।।

अन्वयार्थ-सुद्धणयेण-शुद्ध नय से **जीवाउ**-जीव से **सव्व-विहाव-पज्जाया**-सर्व विभाव पर्याय **अण्णा**-अन्य हैं **णाणाइ-सहाव-जुदो**-ज्ञानादि स्वभाव से युक्त **जीवो**-जीव **सुद्धो**-शुद्ध व **कम्महीणो**-कर्मों से हीन है।

अप्पाखंडाभिण्णो, पोग्गलाइ-दव्वादो खलु भिण्णो।
ताणं गुण-पज्जाया, सुद्धप्पादो सया भिण्णा।।107।।

अन्वयार्थ-अप्पाखंडाभिण्णो-आत्मा अखंड है, अभिन्न है **पोग्गलाइ-दव्वादो**-पुद्गलादि द्रव्यों से **खलु**-निश्चय से **भिण्णो**-भिन्न है **ताणं**-उनकी **गुण-पज्जाया**-गुण पर्याय **सुद्धप्पादो**-शुद्धात्मा से **सया**-सदा **भिण्णा**-भिन्न है।

अप्पा णेव पमत्तो, ण अपमत्तो जो हु सो हु सो चेव।
जो चिंतदि अण्णत्तं, सक्कदे एयत्तं लहिदुं।।108।।

अन्वयार्थ-अप्पा-आत्मा **णेव**-न ही **पमत्तो**-प्रमत्त है **ण**-न **अपमत्तो**-अप्रमत्त है **जो हु सो हु सो चेव**-निश्चय से जो है वह वही ही है (जो जीव) **अण्णत्तं**-अन्यत्व का **चिंतदि**-चिंतन करता है वह ही **एयत्तं**-एकत्व को **लहिदुं**-प्राप्त करने में **सक्कदे**-समर्थ होता है।

अशुचि भावना

विस्सम्मि विज्जमाणा, भणिदा हु सुंदरा सव्वपयत्था।
असुई देहसहावो, उप्पज्जेदि तत्तो जम्हा।।109।।

अन्वयार्थ-विस्सम्मि-विश्व में **विज्जमाणा**-विद्यमान **सव्वपयत्था**-सभी पदार्थ **सुंदरा**-सुंदर **भणिदा**-कहे गए हैं **देहसहावो**-शरीर का स्वभाव **असुई**-अशुचि होता है **जम्हा**-क्योंकि (वह) **तत्तो**-उससे (अर्थात् अशुचिता से) **हु**-ही **उप्पज्जेदि**-उत्पन्न होता है।

देह-पयडीइ असुई, तहा होदि सुई रयणत्तयेणं।
धम्म-हेदु-देहेणं, विणा ण सक्को सिवं लहिदुं।।110।।

अन्वयार्थ-देह-पयडीइ-देह प्रकृति (स्वभाव) से **असुई**-अशुचि **तहा**-तथा **रयणत्तयेणं**-रत्नत्रय से **सुई**-पवित्र होती है **धम्म-हेदु-देहेणं**-धर्म के हेतु देह के **विणा**-बिना **सिवं**-मोक्ष **लहिदुं**-प्राप्त करने में **ण सक्को**-कोई समर्थ नहीं है।

ओरालिय-देहम्मि य, विज्जंति सत्त-धादू-उवधादू।
अपूदम्मि सरीरम्मि, रायं करेज्जा को णाणी।।111।।

अन्वयार्थ-ओरालिय-देहम्मि-औदारिक देह में **सत्त-धादू उवधादू य**-सात धातु और सात उपधातु **विज्जंति**-विद्यमान हैं **अपूदम्मि सरीरम्मि**-ऐसे अपवित्र शरीर में **को णाणी**-कौन ज्ञानी **रायं करेज्जा**-राग करता है? अर्थात् कोई नहीं।

देहासत्ती भणिदा, मूलकारणं संसारदुक्खाण।
तं चागेण विणा हु, णो लहदि अप्पभावं को वि।।112।।

अन्वयार्थ-देहासत्ती-देहासक्ति **हु**-निश्चय से **संसारदुक्खाण**-संसार के दु:खों का **मूलकारणं**-मूल कारण **भणिदा**-कही गई है **तं**-उसका **चागेणं विणा**-त्याग किए बिना **को वि**-कोई भी **अप्पभावं**-आत्म भाव को **णो लहदि**-प्राप्त नहीं करता।

सरीरं रोय-सदणं, दुग्गंध-जुद-मसुई खणधंसी।
मलमुत्ताणं पिंडो, को कुणदि रायं एतस्सिं।।113।।

अन्वयार्थ-सरीरं-शरीर **रोय-सदणं**-रोगों का घर है **दुग्गंध-जुदं**-दुर्गंध से युक्त **असुई**-अशुचि **खणधंसी**-क्षणध्वंसी व **मलमुत्ताणं**-मूलमूत्रादि का **पिंडो**-पिंड है **एतस्सिं**-ऐसे इस शरीर में **को**-कौन **रायं**-राग **कुणदि**-करता है? कोई नहीं।

जो वि दुग्गंधिद-असुइ-घिणिल्ल-पयत्था मण्णे लोयम्मि।
तेसु अच्चंत-असुई, णेयं ओरालिय-सरीरं।।114।।

अन्वयार्थ-लोयम्मि-लोक में **जो वि**-जो भी **दुग्गंधिद-असुइ-घिणिल्ल-पयत्था**-दुर्गंधित, अपवित्र, घृणा करने वाले पदार्थ **मण्णे**-माने जाते हैं **तेसु**-उनमें **ओरालिय-सरीरं**-औदारिक शरीर **अच्चंत-असुई**-अत्यंत अपवित्र **णेयं**-जानना चाहिए।

देहे संफासे चिय, होज्जा सुइ-पयत्था वि अपवित्ता।
अंतोमुहुत्तयाले, ते सव्वा हेया णाणीहि।।115।।

अन्वयार्थ-देहे-देह के **संफासे**-संस्पर्श होने पर **सुइ-पयत्था**-पवित्र पदार्थ **वि**-भी **अपवित्ता**-अपवित्र **होज्जा**-हो जाते हैं और **अंतोमुहुत्तयाले**-अन्तर्मुहूर्त में **ते**-वे **सव्वा**-सभी **णाणीहि**-ज्ञानियों के द्वारा **चिय**-निश्चय से **हेया**-हेय/छोड़ने योग्य ही हो जाते हैं।

ण्हाणेणणंतवारं, देहो णो होदि पवित्तो कया वि।
धुवणे जह इंगालं, णो धवलं कया वि होदि तं।।116।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **इंगालं**-कोयले को **धुवणे**-धोने पर **तं**-वह **कया वि**-कभी भी **धवलं**-धवल-श्वेत **णो**-नहीं **होदि**-होता उसी प्रकार **अणंतवारं**-अनंतबार **ण्हाणेण**-स्नान करने पर भी **देहो**-देह **कया वि**-कभी भी **पवित्तो**-पवित्र **णो**-नहीं **होदि**-होती।

जदवि देहे-पोसणे, णिच्चं वि दिस्सदि सुक्करूवं तं।
अस्सेरिसो सहावो, इह देहे करेज्ज पीदिं ण।।117।।

अन्वयार्थ-जदवि-यद्यपि **देहे-पोसणे**-शरीर का पोषण करने पर **वि**-भी **तं**-वह **णिच्चं**-नित्य **सुक्करूवं**-शुष्क रूप ही **दिस्सदि**-दिखाई देता है **एरिसो**-ऐसा **अस्स**-इसका (देह का) **सहावो**-स्वभाव है (इसीलिए) **इह देहे**-इस देह में **पीदिं**-प्रीति **ण करेज्ज**-नहीं करना चाहिए।

सया घिणिल्ल-देहम्मि, सवणंति मलमुत्ताइ-णवदारं।
अइ-दुग्गंधिद-देहं, मूढो कहं कहेदि सुद्धं।।118।।

अन्वयार्थ-घिणिल्ल-देहम्मि-घृणा करने वाले शरीर में **सया**-सदा **मलमुत्ताइ-णवदारं**-मलमूत्रादि नवद्वार **सवणंति**-बहते हैं **अइ-दुग्गंधिद-देहं**-अति दुर्गंधित देह को **मूढो**-मूर्ख **कहं**-किस प्रकार **सुद्धं**-शुद्ध **कहेदि**-कहता है।

पिदरस्स रयादित्तो, ओरालिय-देहो जादे णरस्स।
होज्ज कहं उप्पण्णं, सरीरं सुई असुद्धीए।।119।।

अन्वयार्थ-पिदरस्स-माता-पिता के **रयादित्तो**-रज-वीर्यादि से **णरस्स**-मनुष्य की **ओरालिय-देहो**-औदारिक देह **जादे**-उत्पन्न होती है **असुद्धीए**-अशुद्धि से **उप्पण्णं**-उत्पन्न **सरीरं**-शरीर **कहं**-किस प्रकार **सुई**-शुचि (पवित्र) **होज्ज**-हो सकता है।

तित्थवंदण-जिणच्चण-दाण-परोवयार-गुरुसेवाहिं।
जव-तव-दयादीहिं, णर-देहो मण्णिज्जदि सुद्धो।।120।।

अन्वयार्थ-तित्थवंदण-जिणच्चण-दाण-परोवयार-गुरुसेवाए-तीर्थवंदना, जिनार्चना, दान, परोपकार, गुरुसेवा **जव-तव-दयादीहिं**-जप, तप, दया आदि से **णर-देहो**-मनुष्य का शरीर **सुद्धो**-शुद्ध **मण्णिज्जदि**-माना जाता है।

झाणज्झयणं णिच्चं, कुणदि तिव्व-तवं साहणं सम्मं।
साहुस्स कहमसुद्धो, देहो जो पालदे धम्मं।।121।।

अन्वयार्थ-जो-जो **णिच्चं**-नित्य **झाणज्झयणं**-ध्यान व अध्ययन **कुणदि**-करता है **सम्मं**-सम्यक् **साहणं**-साधना व **तिव्व-तवं**-तीव्र तप (करता है) **धम्मं**-धर्म का **पालदे**-पालन करता है **साहुस्स**-उस साधु की **देहो**-देह **कहं**-किस प्रकार **असुद्धो**-अशुद्ध है (अर्थात् शुद्ध ही है)।

चेयणं पस्सिऊणं, सुद्धं अणुभवेज्जा तं णिच्चं।
देहं णो चिंतेज्जा, तं असुइं खलु जाणिऊणं।।122।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **चेयणं**-चेतना को **सुद्धं**-शुद्ध **पस्सिऊणं**-देखकर **णिच्चं**-नित्य **तं**-उसकी **अणुभवेज्जा**-अनुभूति करो व **देहं**-देह को **असुइं**-अपवित्र **जाणिऊणं**-जानकर **तं**-उसका **णो चिंतेज्ज**-चिंतन नहीं करना चाहिए।

इत्थीए देहे जो, अणुरज्जदि मूढो रायभावेण।
लहेदि दुग्गदिं सो, ण सुहं इहपरभवे कया वि।।123।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो **मूढो**-मूर्ख **रायभावेण**-राग भाव से **इत्थीए**-स्त्री की **देहे**-देह में **अणुरज्जदि**-अनुरंजित होता है **सो**-वह **इहपरभवे**-इस भव में वा पर भव में **कया वि**-कभी भी **सुहं**-सुख **ण लहेदि**-प्राप्त नहीं करता तथा **दुग्गदिं**-दुर्गति को (प्राप्त करता है)।

जाणिय तस्स सहावं, विरज्जिच्चा करेज्ज सुह-कज्जाणि।
रयणत्तयेण होदि, देहो सुद्धो णेव कया वि।।124।।

अन्वयार्थ-**तस्स**-उसके (अर्थात् देह के) **सहावं**-स्वभाव को **जाणिय**-जानकर **विरज्जिच्चा**-उससे विरक्त होकर **सुह-कज्जाणि**-शुभ कार्य **करेज्ज**-करने चाहिये **देहो**-देह **रयणत्तयेण**-रत्नत्रय से **सुद्धो**-शुद्ध **होदि**-होती है **णेव कया वि**-और किसी भी प्रकार कदापि शुद्ध नहीं होती।

आस्रव भावना

कम्मागमण-दारं हु, आसवो भणिदो मुणीहि सत्थेसु।
बेविहो आसवो सो, भेयेणं च दव्वभावस्स।।125।।

अन्वयार्थ-**कम्मागमण**-**दारं**-कर्मों के आने के द्वार को **मुणीहि**-मुनियों के द्वारा **सत्थेसु**-शास्त्रों में **हु**-निश्चय ही **आसवो**-आस्रव **भणिदो**-कहा गया है **सो**-वह **आसवो**-आस्रव **दव्वभावस्स च**-द्रव्य और भाव के **भेयेणं**-भेद से **बेविहो**-दो प्रकार का है।

अप्पे तं आसवणं, पोग्गलकम्मवग्गणाणं दव्वो।
भावासवो जाणेज्ज, जेहि भावेहिं आसवंति।।126।।

अन्वयार्थ-**अप्पे**-आत्मा में **पोग्गलकम्मवग्गणाणं**-पुद्गल कर्म वर्गणाओं का **आसवणं**-आना **दव्वो**-द्रव्यास्रव है तथा **जेहि**-जिन **भावेहिं**-भावों से **आसवंति**-कर्म आते हैं **तं**-उसे **भावासवो**-भावास्रव **जाणेज्ज**-जानना चाहिए।

दव्वासवस्स भेयो, कम्मवग्गणावेक्खाइ एगो हु।
तहा कम्मपयडीए, णेयो णाणाविहो बुहेहि।।127।।

अन्वयार्थ-**बुहेहि**-बुधजनों को **कम्मवग्गणावेक्खाइ**-कर्म वर्गणा की अपेक्षा से **दव्वासवस्स**-द्रव्यास्रव का **हु**-निश्चय से **एगो**-एक **भेयो**-भेद **णेयो**-जानना चाहिए **तहा**-तथा **कम्मपयडीए**-कर्म प्रकृति की अपेक्षा **णाणाविहो**-नाना विध जानना चाहिए।

भावासवस्स भणिदा, पंचभेया जिणागमे जिणेणं।
मिच्छत्त-पमाद-जोग-कसायाविरदी णादव्वा।।128।।

अन्वयार्थ-**जिणागमे**-जिनागम में **जिणेणं**-जिनेन्द्र प्रभु के द्वारा **भावासवस्स**-भावास्रव के **पंचभेया**-पाँच भेद **भणिदा**-कहे गए हैं (ये) **मिच्छत्त-पमाद-जोग-कसायाविरदी**-मिथ्यात्व, प्रमाद, योग, कषाय व अविरति **णादव्वा**-जानने चाहिए।

णियमेण भवकारणं, मिच्छत्तं मिच्छाधारणा होदि।
पंचविहं जाणेज्जा, कारणं पंचसंसारस्स।।129।।

अन्वयार्थ-**मिच्छत्तं**-मिथ्यात्व **मिच्छाधारणा**-मिथ्या धारणा **णियमेण**-नियम से **भवकारणं**-संसार का कारण **होदि**-होता है **पंचविहं**-पाँच प्रकार का मिथ्यात्व **पंचसंसारस्स**-पाँच प्रकार के संसार का **कारणं**-कारण **जाणेज्जा**-जानना चाहिए।

एयंतं विवरीअं, अण्णाणं संसयं तहा विणयं।
सव्वासवस्स णासं, विणा कल्लाणो असक्को हु।।130।।

अन्वयार्थ-**एयंतं**-एकांत **विवरीअं**-विपरीत **अण्णाणं**-अज्ञान **संसयं**-संशय **तहा**-तथा **विणयं**-विनय (ये पाँच मिथ्यात्व हैं) **सव्वासवस्स**-सभी प्रकार के आस्रव के **णासं विणा**-नाश के बिना **हु**-निश्चय से **कल्लाणो**-कल्याण **असक्को**-अशक्य है।

पत्तेय-वत्थुमि खलु, विज्जंते सव्वदा अणंतधम्मा।
इग-धम्मं गहदि किच्चु, सव्वधम्मुवेक्खमेयंतं।।131।।

अन्वयार्थ-पत्तेय-वत्थुम्मि-प्रत्येक वस्तु में **खलु**-निश्चय से **सव्वदा**-सर्वदा **अणंतधम्मा**-अनंत धर्म **विज्जंते**-विद्यमान हैं **सव्वधम्मुवेक्खं**-सभी धर्मों की उपेक्षा **किच्चु**-करके **इग-धम्मं**-एक धर्म को **गहदि**-ग्रहण करता है वह **एयंतं**-एकांत मिथ्यात्व है।

धम्मो जो विज्जदे हु, धम्मिम्मि तहेव णेयो सया।
जो विवरीअं मण्णदे, विवरीअ-मिच्छाइट्ठी सो।।132।।

अन्वयार्थ-जो-जो **धम्मो**-धर्म **धम्मिम्मि**-धर्मी में **विज्जदे**-विद्यमान होता है **तं**-उसको **सया**-सदा **तहेव**-उसी प्रकार **णेयो**-जानना चाहिए **जो**-जो (उससे) **विवरीअं**-विपरीत **मण्णदे**-मानता है **सो**-वह **विवरीअ-मिच्छाइट्ठी**-विपरीत मिथ्यादृष्टि है।

णाणासहावजुत्ता, अणंतपयत्था लोये विज्जंति।
परमट्ठिदरं उहयं, समाणं मणदे तं विणयं।।133।।

अन्वयार्थ-लोये-लोक में **णाणासहावजुत्ता**-नाना स्वभाव से युक्त **अणंतपयत्था**-अनंत पदार्थ **विज्जंति**-विद्यमान होते हैं (जो) **परमट्ठिदरं**-परमार्थ और इतर **उहयं**-दोनों को **समाणं**-समान **मणदे**-मानता है **तं**-वह **विणयं**-विनय मिथ्यात्व है।

वत्थूणं सरूवम्मि, संसय-करणं जहत्थजहत्थम्मि।
तच्चमिणं वा अण्णं, णेयं संसयं मिच्छत्तं।।134।।

अन्वयार्थ-वत्थूणं-वस्तुओं के **जहत्थजहत्थम्मि**-यथार्थ (या) अयथार्थ **सरूवम्मि**-स्वरूप में **संसय-करणं**-संशय करना (अर्थात् सम्यक् स्वरूप का निश्चय न कर पाना कि) **तच्चं**-तत्त्व **इणं**-यह है **वा**-या **अण्णं**-अन्य (यह) **संसयं मिच्छत्तं**-संशय मिथ्यात्व **णेयं**-जानना चाहिए।

णाणं कुणदि किंचि णो, णट्ठेसु णाणाइ-गुणेसु मोक्खो।
वा अण्णाणेणं सा, धारणा मिच्छत्तण्णाणं।।135।।

अन्वयार्थ-णाणं-ज्ञान **किंचि**-कुछ भी **णो**-नहीं **कुणदि**-करता **णाणाइ-गुणेसु**-ज्ञानादि गुण **णट्ठेसु**-नष्ट होने पर **मोक्खो**-मोक्ष होता है **वा**-अथवा **अण्णाणेणं**-अज्ञान से (मोक्ष होता है) **सा धारणा**-ऐसी वह धारणा **मिच्छत्तण्णाणं**-अज्ञान मिथ्यात्व है।

पणविहाणि पावाइं, तिलोयम्मि होज्ज मुक्खरूवेणं।
अविरदभावेहि तेसु, कम्मासवो रत्त-जीवस्स।।136।।

अन्वयार्थ-तिलोयम्मि-तीन लोक में **मुक्खरूवेणं**-मुख्य रूप से **पणविहाणि**-पाँच प्रकार के **पावाइं**-पाप हैं **तेसु**-उनमें **रत्त-जीवस्स**-अनुरक्त जीव के **अविरद-भावेहि**-अविरत भावों से **कम्मासवो**-कर्मों का आस्रव **होज्ज**-होता है।

अविरदी बेदहविहा, रक्खणं णो सडजीवणिकायाण।
णियमेण भव-कारणं, पंचेंदिय-मण-असंजमो य।।137।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **अविरदी**-अविरति **बेदहविहा**-12 प्रकार की होती है **सडजीवणिकायाण**-षट्जीव निकायों की **णो रक्खणं**-रक्षा नहीं करना **य**-और **पंचेंदिय-मण-असंजमो**-पाँच इंद्रिय व मन का असंयम (ये अविरति) **णियमेण**-नियम से **भव-कारणं**-संसार का कारण होती हैं।

जीवस्स कुसलभावा, तिव्वुदयेण संजलणकसायस्स।
छितिलाचरणं होज्ज, पमत्तभावो पमत्तंतं।।138।।

अन्वयार्थ-पमत्तंतं-प्रमत्त गुणस्थान पर्यंत **संजलणकसायस्स**-संज्वलन कषाय के **तिव्वुदयेण**-तीव्र उदय से **जीवस्स**-जीव के **अकुसलभावा**-अकुशलभाव **छितिलाचरणं**-शिथिलाचरण या **पमत्तभावो**-प्रमत्त भाव **होज्ज**-होता है।

पणदहविहो पमादो, णेयो इंदिय-विकहा कसाया य।
णिद्दा पणयो भावो, पण-चउ-चउ-इग-इगो कमेण।।139।।

अन्वयार्थ-पमादो-प्रमाद **पणदहविहो**-पंद्रह प्रकार का है **इंदिय-विकहा**-इंद्रिय, विकथा **कसाया**-कषाय **णिद्दा**-निद्रा **य**-और **पणयो भावो**-प्रणय भाव (इनके) **कमेण**-क्रम से **पण-चउ-चउ-इग-इगो**-पाँच, चार, चार, एक व एक भेद (इस प्रकार 5 इंद्रिय, 4 विकथा, 4 कषाय, निद्रा व प्रणय ये पंद्रह प्रमाद) **णेयो**-जानने चाहिये।

अपिंडरूव-भेया हु, असंखेज्ज-लोगपमाणं णेया।
वा सत्त-तीस-सहस्स-पणसदं तहा विआणेज्जा।।140।।

अन्वयार्थ-(प्रमाद के) **असंखेज्ज-लोगपमाणं**-असंख्यात लोक प्रमाण **अपिंडरूव-भेया**-अपिंड रूप से भेद **णेया**-जानने चाहिए **वा**-अथवा **सत्त-तीस-सहस्स-पणसदं तहा**-सैंतीस हजार तथा पाँच सौ भेद **विआणेज्जा**-जानने चाहिए।

तं जाणेज्ज कसायो, कसदि अप्पं अइसंकिलेट्ठेहिं।
चित्तभूमिं किसदि जो, कम्माणि उप्पज्जेदुं वा।।141।।

अन्वयार्थ-जो-जो **अइसंकिलेट्ठेहिं**-अति संक्लेश भावों से **अप्पं**-आत्मा को **कसदि**-कसती है **वा**-अथवा **कम्माणि**-कर्मों को **उप्पज्जेदुं**-उत्पन्न करने के लिए **चित्तभूमिं**-चित्त की भूमि को **किसदि**-कृषती (जोतती) है **तं**-उसको **कसायो**-कषाय **जाणेज्ज**-जानना चाहिए।

सो पणवीस-विहो चउ-अणंताणुबंधि-अपच्चक्खाणं।
पच्चक्खाणं णेयो, संजलणं णव-णोकसाया।।142।।

अन्वयार्थ-सो-वह (कषाय) **पणवीस-विहो**-पच्चीस प्रकार की **णेयो**-जाननी चाहिए **चउ-अणंताणुबंधि-अपच्चक्खाणं**-चार अनंतानुबंधी, चार अप्रत्याख्यान **पच्चक्खाणं**-चार प्रत्याख्यान **संजलणं**-चार संज्वलन व **णव-णोकसाया**-नौ नोकषाय।

चउभेया णादव्वा, णिच्चं अणंताणुबंधि-आदीण।
कोहो माणो माया, तहा लोहो जहाजोग्गा।।143।।

अन्वयार्थ-णिच्चं-नित्य **अणंताणुबंधि-आदीण**-अनंतानुबंधी आदि कषायों के **जहाजोग्गा**-यथा योग्य **चउभेया**-चार भेद **कोहो**-क्रोध **माणो**-मान **माया**-माया **तहा**-तथा **लोहो**-लोभ **णादव्वा**-जानना चाहिए।

फंदणमप्पपदेसे, होज्ज मण-वयण-काय-णिमित्तेहिं।
सो जोगो णादव्वो, कम्मागमणस्स कारणं हु।।144।।

अन्वयार्थ-मण-वयण-काय-णिमित्तेहिं-मन, वचन, काय के निमित्त से **अप्पपदेसे**-आत्म प्रदेश में **फंदणं**-स्पंदन **होज्ज**-होता है **सो**-उसे **जोगो**-योग **णादव्वो**-जानना चाहिए (यह) **हु**-निश्चय से **कम्मागमणस्स**-कर्मों के आगमन का **कारणं**-कारण होता है।

सत्तविहो बोद्धव्वो, कायजोगो चदुहो वयणजोगो।
मणजोगो खलु चदुहो, पणदहविहो जोगेवमेव।।145।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **कायजोगो**-काय योग **सत्तविहो**-सात प्रकार का **वयण-जोगो**-वचन योग **चदुहो**-चार प्रकार का है **मणजोगो**-मनयोग **चदुहो**-चार प्रकार का है **जोगेवमेव**-इस प्रकार योग **पणदहविहो**-पंद्रह प्रकार का **बोद्धव्वो**-जानना चाहिए।

कायजोगो वि होज्जा, णियमेणं च सव्व-संसारीणं।
सव्वतसाणं वयणं, मणजोगो सण्णि-जीवाणं।।146।।

अन्वयार्थ-सव्व-संसारीणं-सभी संसारी जीवों के **णियमेणं**-नियम से **कायजोगो**-काय योग **होज्जा**-होता है **सव्वतसाणं**-सभी त्रस जीवों के (काय योग व) **वयणं**-वचनयोग **च**-और **सण्णि-जीवाणं**-संज्ञी जीवों के (काय व वचन योग के साथ) **मणजोगो**-मन योग **वि**-भी (होता है)।

मिच्छत्तं हु मिच्छत्ते, अविरद-सम्मत्तादो अविरदी य।
पमादो पमत्तादो, कसायो सुहुमादो णेयो।।147।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **मिच्छत्तं**-मिथ्यात्व **मिच्छत्ते**-मिथ्यात्व गुणस्थान

में **अविरदी**-अविरति **अविरदी-सम्मत्तादो**-अविरत-सम्यक्त्व गुणस्थान तक **पमादो**-प्रमाद **पमत्तादो**-प्रमत्त गुणस्थान तक **य**-और **कसायो**-कषाय **सुहुमादो**-सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान तक **णेयो**-जाननी चाहिए।

जोगो सजोगादो हु, पंचमगुणठाणे विरदाविरदो।
तम्हा देसविरदो य, भणिदो मुणीहिं जिणसमये।।148।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **जोगो**-योग **सजोगादो**-सयोग केवली गुणस्थान पर्यंत होता है **य**-और **पंचमगुणठाणे**-पंचम गुणस्थान में **विरदाविरदो**-विरताविरत (भाव होता है) **तम्हा**-इसीलिए **देसविरदो**-वह देशविरत (कहलाता है ऐसा) **जिणसमये**-जिनागम में **मुणीहिं**-मुनियों के द्वारा **भणिदो**-कहा गया है।

भव्वुल्ला चिंतेज्जा, बंधस्स कारणं णियमेण सया।
णाणी तं परिहरिच्चु, होज्जा णिक्कम्मा सिद्धा हु।।149।।

अन्वयार्थ-भव्वुल्ला-भव्यों को **णियमेण**-नियम से **सया**-सदा **बंधस्स**-बंध के **कारणं**-कारण का **चिंतेज्जा**-चिंतन करना चाहिए **णाणी**-ज्ञानी को **तं परिहरिच्चु**-बंध के कारणों का परिहार कर **हु**-निश्चय से **णिक्कम्मा**-कर्म रहित **सिद्धा**-सिद्ध **होज्जा**-होना चाहिए।

णियमेण भवकारणं, मुणेदव्वो कम्मासवो बंधो।
णो को वि सिव-कारणं, आसवस्स सव्व-हेदूसुं।।150।।

अन्वयार्थ-कम्मासवो-कर्म के आस्रव व **बंधो**-बंध को **णियमेण**-नियम से **भवकारणं**-संसार का कारण **मुणेदव्वो**-जानना चाहिए **आसवस्स**-आस्रव के **सव्व-हेदूसुं**-सभी हेतुओं में **को वि**-कोई भी **सिव-कारणं**-मोक्ष का कारण **णो**-नहीं है।

जे के वि भव्वजीवा, कंखंति सगप्पस्स कल्लाणं।
ते सव्वा चिंतेज्जा, सुहंकर-मासवाणुवेक्खं।।151।।

अन्वयार्थ-जे के वि-जो कोई भी **भव्वजीवा**-भव्य जीव **सगप्पस्स**-अपनी

आत्मा का **कल्लाणं**-कल्याण **कंखंति**-चाहते हैं **ते**-उन **सव्वा**-सभी को **सुहंकरं**-शुभकर **आसवाणुवेक्खं**-आस्रव अनुप्रेक्षा का **चिंतेज्ज**-चिंतन करना चाहिए।

संवरानुप्रेक्षा

आसवस्स णिरोहो हु, महागुणजुत्तो संवरो णेयो।
चिंतेज्ज सया तमेव, संवरो सिव-हेदू णियमा।।152।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **आसवस्स**-आस्रव के **णिरोहो**-निरोध को **महागुणजुत्तो संवरो**-महागुण से युक्त संवर **णेयो**-जानना चाहिए **तमेव**-उसका ही **सया**-सदा **चिंतेज्ज**-चिंतन करना चाहिए **संवरो**-संवर **सिव-हेदू**-मोक्ष का हेतु **णियमा**-नियम से होता है।

भासिदो जिणवरेहिं, संवरो मित्तं णिव्वाणस्स खलु।
तेण विणा णो सक्को, सस्सदगुणा लहिदु-मप्पाण।।153।।

अन्वयार्थ-संवरो-संवर **जिणवरेहिं**-जिनवरों के द्वारा **खलु**-निश्चय से **णिव्वाणस्स**-निर्वाण का **मित्तं**-मित्र **भासिदं**-कहा गया है **तेण विणा**-उसके बिना कोई भी **अप्पाण**-आत्मा के **सस्सद-गुणा**-शाश्वत गुणों को **लहिदुं**-प्राप्त करने में जो **सक्को**-समर्थ **णो**-नहीं है।

दव्व-भाव-भेयेणं, संवरो दुविहो सया मुणेदव्वो।
उहय-संवरो णिच्चं, अचलाणघक्खय-पद-हेदू।।154।।

अन्वयार्थ-दव्व-भाव-भेयेणं-द्रव्य और भाव के भेद से **संवरो**-संवर **सया**-सदा **दुविहो**-दो प्रकार का **मुणेदव्वो**-जानना चाहिए **उहय-संवरो**-दोनों ही संवर **णिच्चं**-नित्य **अचलाणघक्खय-पद-हेदू**-अचल, अनघ, अक्षय पद का हेतु है।

दव्व-संवरो पढमो, दव्वकम्मागम-णिरोह-हेदुं च।
भाव-संवरो णेयो, हेदुं खलु दव्व-संवरस्स।।155।।

अन्वयार्थ-दव्वकम्मागम-णिरोह-हेदुं-द्रव्य कर्मों के आगमन के निरोध

के हेतु को **पढमो**-प्रथम **दव्व-संवरो**-द्रव्य संवर **च**-और **दव्व-संवरस्स**-द्रव्य संवर के **हेदुं**-हेतु को **खलु**-निश्चय से **भाव-संवरो**-भाव-संवर **णेयो**-जानना चाहिए।

गुत्ती समिदी धम्मो, अणुवेक्खा परीसहजओ चरियं।
अस्स सडमूलभेया, सत्तावण्णमुत्तरभेया।।156।।

अन्वयार्थ-गुत्ती-गुप्ति **समिदी**-समिति **धम्मो**-धर्म **अणुवेक्खा**-अनुप्रेक्षा **परीसहजओ**-परीषहजय **चरियं**-चारित्र **अस्स**-इस (संवर के) **सडमूलभेया**-छः मूल भेद हैं व **सत्तावण्णं**-सत्तावन **उत्तरभेया**-उत्तरभेद हैं।

मिच्छत्तविणाभावी, पयडी सम्मत्तेण सह बंधदि ण।
मिच्छत्तासव-णिरोह-हेदू जाणेज्ज सम्मत्तं।।157।।

अन्वयार्थ-मिच्छत्तविणाभावी-मिथ्यात्व के अविनाभावी **पयडी**-(बँधने वाली) प्रकृतियाँ **सम्मत्तेण सह**-सम्यक्त्व के साथ **ण**-नहीं **बंधदि**-बंधतीं **मिच्छत्तासव-णिरोह-हेदू**-मिथ्यात्व के आस्रव के निरोध का हेतु **सम्मत्तं**-सम्यक्त्व को **जाणेज्ज**-जानना चाहिए।

अहिंसा-सच्चत्थेय-बंभचेरं पंचमहव्वदाइं।
परिग्गहचागो तहा, संवर-हेदू हु जाणेज्जा।।158।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **अहिंसा-सच्चत्थेय-बंभचेरं**-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य **तहा**-तथा **परिग्गहचागो**-परिग्रह त्याग (या अपरिग्रह) **पंचमहव्वदाइं**-पाँच महाव्रतादि को **संवर-हेदू**-संवर का हेतु **जाणेज्जा**-जानना चाहिए।

मणवयकायजोगाण, असुहपवित्तिं रुंधेदि गुत्ती य।
सा णिव्वाण-हेदू हि, तास धारगो मुणी णाणी।।159।।

अन्वयार्थ-मणवयकायजोगाण-मन, वचन, काय योगों की **असुह-पवित्तिं**-अशुभ प्रवृत्ति को **रुंधेदि**-(जो) रोकती है (वह) **गुत्ती**-गुप्ति है

सा-वह गुप्ति **हि**-ही **णिव्वाण-हेदू**-निर्वाण का हेतु है और **तास**-उसके **धारगो**-धारक **मुणी**-मुनि **य**-व **णाणी**-ज्ञानी हैं।

इरिया भासेसणा य, आदाण-णिक्खेवुस्सग्ग-समिदी।
पुण्ण-संचय-कारणं, पमादस्स उज्झणं समिदी।।160।।

अन्वयार्थ-पमादस्स-प्रमाद का **उज्झणं**-त्याग करना **समिदी**-समिति है (समिति के पाँच भेद हैं) **इरिया**-ईर्या **भासेसणा**-भाषा, एषणा **आदाण-णिक्खेवुस्सग्ग-समिदी य**-आदान-निक्षेपण व उत्सर्ग समिति (ये) **पुण्ण-संचय-कारणं**-पुण्य के संचय का कारण हैं।

हेदुं कम्म-णासस्स, जम्म-मरण-दुक्ख-विणासस्स तहा।
रयणत्तयं हु धम्मं, गहेज्ज अप्पकल्लाणत्थं।।161।।

अन्वयार्थ-कम्म-णासस्स-कर्म विनाश के **तहा**-तथा **जम्म-मरण-दुक्ख-विणासस्स**-जन्म, मरण व दु:ख के विनाश के **हेदुं**-हेतु **रयणत्तयं**-रत्नत्रय **धम्मं**-धर्म को **अप्पकल्लाणत्थं**-आत्म कल्याण के लिए **हु**-निश्चय से **गहेज्ज**-ग्रहण करना चाहिए।

तच्च-चिंतणं णेया, अणुवेक्खागमे बेदह-विहा य।
सा खलु संवर-हेदू, अप्पहिदत्थं तं चिंतेज्ज।।162।।

अन्वयार्थ-तच्च-चिंतणं-तत्त्व-चिंतन करना **अणुवेक्खा**-अनुप्रेक्षा है **य**-और **आगमे**-आगम में (इसे) **बेदह-विहा**-बारह प्रकार की **णेया**-जानना चाहिए **सा**-वह (अनुप्रेक्षा) **खलु**-निश्चय से **संवर-हेदू**-संवर का हेतु है **अप्पहिदत्थं**-आत्म हित के लिए **तं**-उसका **चिंतेज्ज**-चिंतन करना चाहिए।

आगच्छंतं विग्घं, जाणित्ता बुद्धिपुव्वगं सहेदि।
समभावेहिं भव्वो, बेवीस-परीसहा णेया।।163।।

अन्वयार्थ-भव्वो-जो भव्य जीव **आगच्छंतं**-आते हुए **विग्घं**-विघ्न को **जाणित्ता**-जानकर (उन्हें) **समभावेहिं**-समान भावों से **बुद्धिपुव्वगं**-

बुद्धिपूर्वक **सहेदि**-सहता है **बेवीस-परीसहा णेया**-उसे परीषह जानना चाहिए, वे 22 होते हैं।

असुहादो णिवित्ती, सरूव-लहिदुं पवित्ती चरियं च।
अहवा सुहे पवित्ती, पुण्ण-सिवस्स हेदू कमेण।।164।।

अन्वयार्थ-असुहादो-अशुभ से **णिवित्ती**-निवृत्ति **च**-और **सरूवलहिदुं**-स्वरूप की प्राप्ति के लिए **पवित्ती**-प्रवृत्ति **चरियं**-चारित्र है **अहवा**-अथवा **सुहे**-शुभ में **पवित्ती**-प्रवृत्ति व **कमेण**-क्रम से **पुण्ण-सिवस्स**-पुण्य व मोक्ष का **हेदू**-हेतु (चारित्र है)।

अट्टरुद्दज्झाणाणि, उज्झित्तु धारणं धम्म-सुक्काण।
सम्मं चरियं णेयं, गवेसणं अप्पसरूवस्स।।165।।

अन्वयार्थ-अट्टरुद्दज्झाणाणि-आर्त्त ध्यान व रौद्र ध्यान **उज्झित्तु**-त्यागकर **धम्म-सुक्काण**-धर्म ध्यान व शुक्ल ध्यान का **धारणं**-धारण करना **सम्मं चरियं**-सम्यक् चारित्र **णेयं**-जानना चाहिए अथवा **अप्पसरूवस्स**-आत्म स्वरूप की **गवेसणं**-खोज करना (भी सम्यक् चारित्र है)।

पणविह-चरियं भणिदं सामाइय-छेदोवट्ठावणं च।
परिहार-विसुद्धी सिव-हेदू सुहुमो जहक्खादो।।166।।

अन्वयार्थ-सिव-हेदू-मोक्ष का हेतु **पणविह-चरियं**-पाँच प्रकार का चारित्र **भणिदं**-कहा गया है **सामाइय-छेदोवट्ठावणं**-सामायिक, छेदोपस्थापना **परिहार-विसुद्धी**-परिहार विशुद्धी **सुहुमो**-सूक्ष्म सांपराय **च**-और **जहक्खादो**-यथाख्यात चारित्र।

संवर-कारणं सया, गहेदुं चिंतेज्जा य भव्वुल्ला।
संवरो संवर-तच्च-हेदू हु मोक्ख-कारणं सो।।167।।

अन्वयार्थ-संवर-कारणं-संवर के कारणों को **गहेदुं**-ग्रहण करने के लिए **भव्वुल्ला**-भव्यों को **सया**-सदा **चिंतेज्जा**-चिंतन करना चाहिए **संवरो**-संवर भावना **संवर-तच्च-हेदू**-संवर तत्त्व का हेतु है **य**-और **सो**-वह (संवर तत्त्व) **हु**-निश्चय से **मोक्ख-कारणं**-मोक्ष का कारण है।

आहारो णिज्जराइ, पढमं पदं जो मोक्खमग्गस्स।
तं संवरं विणा णो, समत्थो अप्पगुणा लहिदुं।।168।।

अन्वयार्थ-जो-जो **णिज्जराइ**-निर्जरा का **आहारो**-आधार है **मोक्खमग्गस्स**-मोक्ष मार्ग का **पढमं**-प्रथम **पदं**-पद है **तं**-उस **संवरं विणा**-संवर के बिना **अप्पगुणा**-कोई भी आत्म गुणों को **लहिदुं**-प्राप्त करने में **णो समत्थो**-समर्थ नहीं है।

जिणसासणस्स सारो, धम्मो जिणुद्दिट्ठो हु भव्वाणं।
धम्मसारो चरित्तं, चरियस्स पाणो संवरो य।।169।।

अन्वयार्थ-भव्वाणं-भव्यों के लिए **जिणसासणस्स सारो**-जिनशासन का सार **धम्मो**-धर्म **जिणुद्दिट्ठो**-जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा कहा गया है **धम्मसारो**-धर्म का सार **हु**-निश्चय से **चरित्तं**-चारित्र है **य**-और **चरियस्स**-चारित्र का **पाणो**-प्राण **संवरो**-संवर है।

णिज्जरानुप्रेक्षा

णिज्जरा कम्म-सडणं, होदि मोक्खस्स कारणं णियमेण।
दुविहा तं णादव्वा, दव्व-भावाण भेयेणं च।।170।।

अन्वयार्थ-कम्म-सडणं-कर्मों का विशीर्ण होना **णिज्जरा**-निर्जरा है (यह निर्जरा) **णियमेण**-नियम से **मोक्खस्स**-मोक्ष का **कारणं**-कारण **होदि**-होती है **तं**-उसे **दव्व-भावाण च**-द्रव्य और भाव के **भेयेणं**-भेद से **दुविहा**-दो प्रकार की **णादव्वा**-जाननी चाहिए।

दव्वो कम्म-सडणं च, भावो हेदू दव्वणिज्जराए।
संजम-तव-सुह-भावा, भावस्स हेदू णादव्वा।।171।।

अन्वयार्थ-कम्म-सडणं-कर्मों का विशीर्ण होना **दव्वो**-द्रव्य निर्जरा है **च**-और **दव्वणिज्जराए**-द्रव्य निर्जरा का **हेदू**-हेतु **भावो**-भाव निर्जरा है **संजम-तव-सुहभावा**-संयम और तपादि के शुभ भाव **भावस्स**-भाव निर्जरा के **हेदू**-हेतु **णादव्वा**-जानना चाहिए।

सविवागी अविवागी, बेविहा णिज्जरा य मुणेयव्वा।
सगसमयम्मि सडंते, सविवागी इयराविवागी।।172।।

अन्वयार्थ-णिज्जरा-निर्जरा **सविवागी**-सविपाकी **य**-और **अविवागी**-अविपाकी **बेविहा**-दो प्रकार की **मुणेयव्वा**-जाननी चाहिए **सगसमयम्मि**-जो कर्म अपने समय पर **सडंते**-झरते हैं वह **सविवागी**-सविपाकी निर्जरा है **इयराविवागी**-और इससे इतर अविपाकी निर्जरा है।

सविवागी जाणिज्जइ, णामेणं वि सकाम-णिज्जराए।
णिज्जरदि सिद्धि-हेदू, तवाइ-उज्जमेणविवागी।।173।।

अन्वयार्थ-सविवागी-सविपाकी निर्जरा **सकाम-णिज्जराए**-सकाम निर्जरा के **णामेणं**-नाम से **वि**-भी **जाणिज्जइ**-जानी जाती है **सिद्धि-हेदू**-सिद्धि के हेतु **तवाइ-उज्जमेण**-तप आदि के उद्यम से (जो) **णिज्जरदि**-निर्जरा होती है (वह) **अविवागी**-अविपाकी निर्जरा (जानी जाती है)।

अइ-संकिलिट्ठेण जा, अण्णाण-कुतव-मोहभावेहिं च।
हवेदि कम्म-णिज्जरा, सा अकाम-णिज्जरा णेया।।174।।

अन्वयार्थ-अइ-संकिलिट्ठेण-अति संक्लेशता से **अण्णाण-कुतव-मोह-भावेहिं च**-अज्ञान, कुतप और मोह के भावों से **जा**- जो **कम्म-णिज्जरा**-कर्म निर्जरा **हवेदि**-होती है **सा**-उसे **अकाम-णिज्जरा**-अकाम निर्जरा **णेया**-जानना चाहिए।

कुतवेणं णिज्जरेदि, अण्णाणि-जीवाण समयपुव्वम्मि।
णियमेण भव-कारणं, भव्वा णो गहेज्जा कया वि।।175।।

अन्वयार्थ-अण्णाणि-जीवाण-अज्ञानी जीवों के **समयपुव्वम्मि**-समय के पूर्व **कुतवेणं**-कुतप से **णिज्जरेदि**-जो निर्जरा होती है वह **णियमेण**-नियम से **भव-कारणं**-संसार का कारण है **भव्वा**-भव्यों को वह **कया वि**-कभी भी **णो गहेज्जा**-ग्रहण नहीं करनी चाहिए।

पुव्वबद्धकम्माणं, इगदेस-सडणं णिज्जरा भणिदा।
पढमा सकाल-पत्ता, होज्ज चदुगदीण जीवाणं।।176।।

अन्वयार्थ-पुव्वबद्धकम्माणं-पूर्व बद्ध कर्मों का **इगदेस-सडणं**-एक देश विशीर्ण होना **णिज्जरा**-निर्जरा **भणिदा**-कही गई है **पढमा**-प्रथम **सकाल-पत्ता**-स्वकाल प्राप्त निर्जरा **चदुगदीण**-चारों गतियों के **जीवाणं**-जीवों के **होज्ज**-होती है।

इच्छाणिरोहो तवो, अक्खणिग्गहो मणणिग्गहो तहा।
भणिदो आगमे तवो, अप्पस्सणुरज्जणं अप्पे।।177।।

अन्वयार्थ-इच्छाणिरोहो-इच्छाओं का निरोध **तवो**-तप है। **अक्खणिग्गहो**-इंद्रियों का निग्रह **मणणिग्गहो**-मन का निग्रह तप है **तहा**-तथा **अप्पस्स**-आत्मा का **अप्पे**-आत्मा में **अणुरज्जणं**-अनुरक्त होना **आगमे**-आगम में **तवो**-तप **भणिदो**-कहा गया है।

वदहीणस्स ण विदिया, वदं समिदी धम्मो तवो णिच्चं।
धम्मं सुक्कज्झाणं, अविवागि-णिज्जर-कारणं च।।178।।

अन्वयार्थ-वदहीणस्स-व्रत से हीन के **विदिया**-दूसरी अविपाकी निर्जरा **ण**-नहीं होती **वदं**-व्रत **समिदी**-समिति **धम्मो**-धर्म **तवो**-तप **धम्मं सुक्कज्झाणं च**-धर्म ध्यान व शुक्ल ध्यान **णिच्चं**-नित्य **अविवागि-णिज्जर-कारणं**-अविपाकी निर्जरा के कारण जानने चाहिए।

जह-जह अप्पविसुद्धी, वड्ढदि तह-तह णिज्जरा णियमेण।
उवसम-खइय-भावेहि, अप्प-विसुद्धी वड्ढेदि खलु।।179।।

अन्वयार्थ-जह-जह-जैसे-जैसे **अप्पविसुद्धी**-आत्म-विशुद्धि **वड्ढदि**-बढ ती है **तह-तह**-वैसे **णिज्जरा**-निर्जरा भी **णियमेण**-नियम से (अधिक होती है) **खलु**-निश्चय से **उवसम-खइय-भावेहि**- उपशम-क्षायिक भावों के द्वारा **अप्प-विसुद्धी**-आत्म विशुद्धि **वड्ढेदि**-बढ़ती है।

खओवसम-भावेणं, जइ अप्पविसुद्धी किंचिवि वड्ढेदि।
वदि-महव्वदि-आदीण, णिज्जरा-कारणं खलु सा वि।।180।।

अन्वयार्थ-जइ-यदि **खओवसम-भावेणं**-क्षयोपशम भाव से **किंचिवि**-किंचित् भी **अप्पविसुद्धी**-आत्मविशुद्धि **वड्ढेदि**-बढ़ती है तो **सा**-वह **वि**-भी **वदि-महव्वदि-आदीण**-व्रती और महाव्रती आदि के लिए **खलु**-निश्चय से **णिज्जरा-कारणं**-निर्जरा का कारण होती है।

सम्मादिट्ठीण होज्ज, असंख-गुणी णिज्जरा मिच्छादो।
तत्तो देसवदीणं, तत्तो सया महव्वदीणं।।181।।

अन्वयार्थ-मिच्छादो-मिथ्यादृष्टियों से **सम्मादिट्ठीण**-सम्यक् दृष्टियों की **असंख-गुणी**-असंख्यात गुणी **णिज्जरा**-निर्जरा **होज्ज**-होती है **तत्तो**-उससे **देसवदीणं**-देशव्रतियों की और **तत्तो**-उससे **सया**-सदा **महव्वदीणं**-महाव्रतियों की (असंख्यात गुणी निर्जरा होती है)।

पमत्तसंजदादो य, असंख-गुणि-णिज्जरा अपमत्तस्स।
तत्तो खलु सेणीए, आरूढाणं मुणिवराणं।।182।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **पमत्तसंजदादो**-प्रमत्त संयतों से **अपमत्तस्स**-अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती की **असंख-गुणि-णिज्जरा**-असंख्यात गुणी निर्जरा होती है **य**-और **तत्तो**-उससे **सेणीए**-श्रेणी पर **आरूढाणं**-आरूढ़ **मुणिवराणं**-मुनिवरों की (असंख्यात गुणी निर्जरा होती है)।

तत्तो उवसमगाणं, खवगाणं तत्तो अवि मुणेयव्वा।
सजोगाजोगाणं च, कमेण णिज्जरासंखगुणी।।183।।

अन्वयार्थ-कमेण-क्रम से **तत्तो**-उससे **उवसमगाणं**-उपशमकों की **तत्तो**-उससे **अवि**-भी **खवगाणं**-क्षपकों की व उससे भी **सजोगाजोगाणं च**-सयोग केवली पुनः उससे अयोग केवली की **णिज्जरासंखगुणी**-असंख्यात गुणी निर्जरा होती है।

सामण्ण-मुणीणं चिय, सामण्ण-णिज्जरा सव्वदा होज्ज।
विसेस-कम्म-णिज्जरा, घोर-परीसह-जइमुणीणं।।184।।

अन्वयार्थ-सामण्ण-मुणीणं-सामान्य मुनियों की **सव्वदा**-सर्वदा **सामण्ण-णिज्जरा**-सामान्य निर्जरा **चिय**-ही **होज्ज**-होती है **च**-और **घोर-परीसह-जइमुणीणं**-घोर परीषह जीतने वाले मुनियों की **विसेस-कम्म-णिज्जरा**-विशेष कर्म निर्जरा होती है।

अच्चंत-दुक्खकारग-घोर-उवसग्गागदे जदि जोगी।
सहदे तं समदाए, होज्जा विउल-णिज्जरा तस्स।।185।।

अन्वयार्थ-अच्चंत-दुक्खकारग-घोर-उवसग्गागदे-अत्यंत दु:ख कारक घोर उपसर्ग आने पर **जदि**-यदि **जोगी**-योगी **तं**-उसको **समदाए**-समता से **सहदे**-सहता है तो **तस्स**-उसके **विउल-णिज्जरा**-विपुल निर्जरा **होज्जा**-होती है।

कसायोवसमेणं च, तिव्व-विसुद्धी वड्ढदे अप्पम्मि।
समदाभावेणं खलु, णिग्गहादो मण-इंदियाण।।186।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **कसायोवसमेणं**-कषायों के उपशम से **समदा-भावेणं**-समता भाव से **मण-इंदियाण**-मन व इंद्रियों के **णिग्गहादो**-निग्रह से **अप्पम्मि**-आत्मा में **तिव्व-विसुद्धी**-तीव्र विशुद्धि **वड्ढदे**-वृद्धिंगत होती है।

सम-समत्त-भावेहिं, जदि घोरदुक्खं सहंति जोगी हु।
कम्म-णिज्जरा विउला, होदि णंतरं लहंति सिवं।।187।।

अन्वयार्थ-जदि-यदि **जोगी**-योगी **सम-समत्त-भावेहिं**-शम व समता भावों से **घोरदुक्खं**-घोर दु:ख **सहंति**-सहन करते हैं तो उनके **विउला**-विपुल **कम्म-णिज्जरा**-कर्मों की निर्जरा **होदि**-होती है **णंतरं**-अनंतर **सिवं**-मोक्ष **लहंति**-प्राप्त करते हैं।

तिव्वपरीसह-रोय-अंतरायुवसग्गाइ-आगदे य।
मण्णंति रिण-मोयणं, जइ मुणी अइ-णिज्जरा होदि।।188।।

अन्वयार्थ-जइ-यदि **मुणी**-मुनि **तिव्व-परीसह-रोय-अंतरायुवसग्गाइ-आगदे य**-तीव्र परीषह, रोग, अंतराय व उपसर्गादि आने पर **रिण-मोयणं**-ऋण मुक्त होना (मैं ऋण मुक्त हो गया ऐसा) **मण्णंति**-मानते हैं तो उनके **अइ-णिज्जरा**-अति निर्जरा **होदि**-होती है।

णंदंति मुणी जोगी, परीसहोवसग्गागदे णिच्चं।
मण्णंते तं मित्तं, जम्हा कम्म-णिज्जर-हेदू।।189।।

अन्वयार्थ-मुणी-मुनि **जोगी**-योगी **णिच्चं**-नित्य **परीसहोव- सग्गागदे**-परीषह उपसर्गादि आने पर **णंदंति**-आनंदित होते हैं **तं**-उसको **मित्तं**-मित्र **मण्णंते**-मानते हैं **जम्हा**-क्योंकि (वे) **कम्म-णिज्जर-हेदू**-कर्म निर्जरा के हेतु हैं।

णिच्छय-सम्मद्दंसण-णाण-चारित्त-जुत्तो जोगी जो।
गुणवंता पसंसदे, णिंददि सदोसा धम्मो सो।।190।।

अन्वयार्थ-णिच्छय-सम्मद्दंसण-णाण-चारित्त-जुत्तो-निश्चय सम्यक् दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक्चारित्र से युक्त **जो**-जो **जोगी**- योगी **गुणवंताण**-गुणवंतों की **पसंसदि**-प्रशंसा करते हैं **सदोसा**- निज दोषों की **णिंददि**-निंदा करते हैं **धम्मो सो**-वे मुनि भी धर्म हैं (कारण में कार्य का उपचार करने से)।

पालदि पंचमयाले, जो संजम-तवं लहदि इगवस्से।
सो चदुत्थयालादो, सहस्स-वस्स-अहिय-फलं।।191।।

अन्वयार्थ-जो-जो (भव्यजीव) **पंचमयाले**-इस पंचम काल में **संजम-तवं**-संयम तप का **पालदि**-पालन करता है **सो**-वह **इगवस्से**-एक वर्ष में **चदुत्थ-यालादो**-चतुर्थ काल (में की गई साधना) से **सहस्स-वस्स-अहिय-फलं**-सहस्र वर्ष अधिक फल को **लहदि**-प्राप्त करता है।

कोडी लक्खं णवसद-पणवीसा तेवण्ण-णिच्च-पडिमा।
सत्तावीससहस्सं, णवसयडतालीसा वंदे।।192।।

अन्वयार्थ-णवसद-पणवीसा-कोडी-नौ सो पच्चीस करोड़ **तेवण्ण-लक्खं**-तिरेपन लाख **सत्तावीस-सहस्सं**-सत्ताईस हजार **णवसयडतालीसा**-नौ सौ अड़तालीस **णिच्च-पडिमा**-शाश्वत जिन प्रतिमाओं को **वंदे**-मै वंदन करता हूँ।

लोकानुप्रेक्षा

बहुमज्झदेसभागे, णंतपदेसि-आयासस्स णेयो।
पुरिसायारो लोगो, अकिट्टिमासंखपदेसी य।।193।।

अन्वयार्थ-णंतपदेसि-आयासस्स-अनंत प्रदेशी आकाश के **बहुमज्झदेसभागे**-बहु मध्य देश भाग में **पुरिसायारो**-पुरुष के आकार वाला **अकिट्टिमासंखपदेसी**-अकृत्रिम व असंख्यात प्रदेशी **लोगो**-लोक **णेयो**-जानना चाहिए।

लोगो तिविहो भणिदो, अहमज्झउड्ढभेयेणं तहा हु।
तिसय-तेतालीस-घण-रज्जू घणफलं तिलोयस्स।।194।।

अन्वयार्थ-अहमज्झउड्ढभेयेणं-अधोलोक, मध्य लोक व ऊर्ध्व लोक के भेद से **लोगो**-लोक **तिविहो**-तीन प्रकार का **भणिदो**-कहा गया है **तहा**-तथा **हु**-निश्चय से **तिलोयस्स**-तीन लोक का **घणफलं**-घनफल **तिसय-तेतालीस-घण-रज्जू**-343 घन राजू है।

मेरु-हेट्ठिम-भागम्मि, अहलोगो हवेदि सत्त-रज्जूण।
मज्झिमो मेरु-समो य, उड्ढे उड्ढलोगो जाणह।।195।।

अन्वयार्थ-मेरु-हेट्ठिम-भागम्मि-मेरु के निचले भाग में **सत्तरज्जूण**-सात राजू का **अहलोगो**-अधोलोक **हवेदि**-होता है **मज्झिमो**-मध्यलोक **मेरु-समो**-मेरु के समान (ऊँचाई वाला है) **य**-और उसके **उड्ढे**-ऊर्ध्व में **उड्ढलोगो**-ऊर्ध्वलोक **जाणह**-जानना चाहिए।

सव्वत्थ सत्तरज्जू, उत्तर-दक्खिणादो होदि लोगो।
उदयो चउदहरज्जू, विजाणेज्ज सव्वदा णाणी।।196।।

अन्वयार्थ-लोगो-लोक **उत्तर-दक्खिणादो**-उत्तर-दक्षिण **सव्वत्थ**-सर्वत्र **सत्त-रज्जू**-सात राजू **होदि**-होता है व **णाणी**-ज्ञानियों को **उदयो**-(लोक की) ऊँ चाई **सव्वदा**-सर्वदा **चउदहरज्जू**-14 राजू **विजाणेज्ज**-जाननी चाहिए।

लोग-पुव्वावरेणं, सत्तेक्क-पंच-एक्क-रज्जू तहा।
मज्झम्मि हु हाणिचयं, बुहीजणा सया विजाणेह।।197।।

अन्वयार्थ-बुहीजणा-बुधजनों को **सया**-सदा **लोग-पुव्वावरेणं**-लोक के पूर्व-पश्चिम **सत्तेक्क-पंच-एक्क-रज्जू**-सात राजू, एक राजू, पाँच राजू, एक राजू **तहा**-तथा **मज्झम्मि**-मध्य में **हाणिचयं**-हानिचय **विजाणेह**-जानना चाहिए।

दक्खिण-उत्तरादो हु, परिही बयालीस-रज्जू णेया।
तहा पुव्वावरेणं, साहियं उगुदालं रज्जू।।198।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय ही (लोक की) **दक्खिण-उत्तरादो**-दक्षिण-उत्तर **परिही**-परिधि **बयालीस-रज्जू**-42 राजू **तहा**-तथा **पुव्वावरेणं**-पूर्व-पश्चिम परिधि **साहियं**-साधिक **उगुदालं**-उनतालीस **रज्जू**-राजू **णेया**-जाननी चाहिए।

सामण्णमुड्ढायदं, तिरिगायदं जवमुरजं जवमज्झं।
मंदर-दूस-गिरिकडग-महलोयस्स भेया जाणह।।199।।

अन्वयार्थ-सामण्णं-सामान्य **उड्ढायदं**-ऊर्ध्वायात **तिरिगायदं**-तिर्यगायत **जवमुरजं**-यवमुरज **जवमज्झं**-यवमध्य **मंदर-दूस-गिरिकडगं**-मंदर, दूष्य, गिरिकटक (ये क्षेत्रफल की अपेक्षा) **अहलोयस्स**-अधोलोक के **भेया**-भेद **जाणह**-जानना चाहिए।

सामण्णं पत्तेयं, अद्धत्थंभं थंभं पिण्णट्ठी।
खेत्तफलस्सवेक्खाइ, उड्ढलोगस्स भेया जाणह।।200।।

अन्वयार्थ-सामण्णं-सामान्य **पत्तेयं**-प्रत्येक **अद्धत्थंभं**-अर्द्धस्तंभ **थंभं**-स्तंभ **पिण्णट्ठी**-पिनष्टी **खेत्तफलस्स**-क्षेत्रफल की **अवेक्खाइ**-अपेक्षा **उड्ढलोगस्स**-ऊर्ध्वलोक के **भेया**-भेद **जाणह**-जानो।

गोमुत्त-मुग्ग-णाणा-वण्णि-घणोदहि-घण-तणुवातेहिं।
कमेण वातवलयेहि, वेट्ठिदो संपुण्ण-लोगो य।।201।।

अन्वयार्थ-गोमुत्त-मुग्ग-णाणा-वण्णि-घणोदहि-घण-तणुवातेहिं य-गोमूत्र के रंग वाला घनोदधि, मूंगा के वर्ण जैसा घनवातवलय और नानावर्णी तनुवातवलय **कमेण**-क्रमशः **वातवलयेहि**-वातवलयों के द्वारा **संपुण्ण-लोगो**-संपूर्ण लोक **वेट्ठिदो**-वेष्टित है।

बहुमज्झदेसभागे, लोयायासस्स होदि तसणाली।
चउदसरज्जु-उत्तुंगा, इकरज्जुपदरजुदा णेया।।202।।

अन्वयार्थ-लोयायासस्स-लोकाकाश के **बहुमज्झदेसभागे**-बहुमध्य देश भाग में **तसणाली**-त्रसनाली **होदि**-होती है **चउदसरज्जु-उत्तुंगा**-(इसे) चौदह राजू ऊँची व **इकरज्जुपदरजुदा**-एक राजू प्रतर से युक्त **णेया**-जाननी चाहिए।

तसणालीइ हेट्ठिमे, धम्मावंसामेघंजणरिट्ठा।
मघवा माधवी तहा, सत्ता णिरया खलु अणिउज्झा।।203।।

अन्वयार्थ-तसणालीए-त्रस नाली के **हेट्ठिमे**-निचले भाग में **धम्मावंसा-मेघंजणरिट्ठा**-धम्मा, वंशा, मेघा, अंजना, अरिष्टा **मघवा**-मघवा **तहा**-तथा **माधवी**-माधवी **खलु**-निश्चय से **अणिउज्झा**-अर्थ रहित नाम वाले **सत्ता णिरया**-सात नरक (जानने चाहिए)।

रयण-सक्कर-बालुआ-पंक-धूम-तम-महातमा-पहा य।
सत्त-णिरयाण पुढवी, जहा णामो तहेव पहा वि।।204।।

अन्वयार्थ-रयण-सक्कर-बालुआ-रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालुका प्रभा

पंक-धूम-तम-महातमा पहा य-पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमप्रभा व महातम प्रभा **सत्त-णिरयाण**-सात नरकों की **पुढवी**-पृथ्वी हैं **जहा**-जिस प्रकार (पृथ्वियों में) **णामो**-नाम है **तहेव**-उसी प्रकार की **पहा**-प्रभा **वि**-भी है।

उगुपण्णास-पडलाणि, चुलसीदी लक्ख-बिलाणि णिरयेसु।
रयणप्पहा य तिविहा, खर-पंक-अब्बहुला भागा।।205।।

अन्वयार्थ-णिरयेसु-नरकों में **उगुपण्णास-पडलाणि**-उनचास पटल **य**-व **चुलसीदी-लक्ख-बिलाणि**-84 लाख बिल हैं **रयणप्पहा**-रत्नप्रभा पृथ्वी **तिविहा**-तीन प्रकार की है **खर-पंक-अब्बहुला भागा**-खर, पंक व अब्बहुल भाग।

णिवसंति खरपंकेसु, वाणविंतर-भवणवासी देवा।
अब्बहुले छ-णिरयेसु, दुक्खाणि लहंति णेरइया।।206।।

अन्वयार्थ-खरपंकेसु-खरभाग और पंकभाग में **वाणविंतर-भवण-वासी देवा**-व्यंतर देव व भवनवासी देव **णिवसंति**-निवास करते हैं **अब्बहुले**-प्रथम नरक के अब्बहुल भाग व **छ-णिरयेसु**-छः नरकों में **णेरइया**-नारकी **दुक्खाणि**-दुःखों को **लहंति**-प्राप्त करते हैं।

अहलोये अकिट्टिमा, जिणगेहा भवणवासि-भवणेसु।
णमंसामि भत्तीए, सत्त-कोडि-बहत्तर-लक्खा।।207।।

अन्वयार्थ-अहलोये-अधोलोक में **भवणवासि-भवणेसु**-भवनवासी के भवनों में स्थिति **सत्त-कोडि-बहत्तर-लक्खा**-सात करोड़ बहत्तर लाख **अकिट्टिमा**-अकृत्रिम **जिणगेहा**-जिनगृहों को **भत्तीए**-भक्ति से **णमंसामि**-नमस्कार करता हूँ।

सत्त-णिरय-हेट्ठिल्ले, कलकलभूमी हु णिगोदठाणं च।
जम्मंति मिज्जंति ते, अठदसवारं उस्सासम्मि।।208।।

अन्वयार्थ-सत्तणिरय-हेट्ठिल्ले-सप्त नरक के निचले भाग में **कलकल-भूमी**-कलकलभूमि **णिगोदठाणं**-निगोदस्थान होता है

हु-निश्चय से वहाँ **ते**-वे निगोदिया जीव **उस्सासम्मि**-उच्छ्वास में **अठदसवारं**-अठारह बार **जम्मंति**-जन्मते हैं **च**-और **मिज्जंति**-मरते हैं।

चुलसीदिलक्खसत्ताणउदिसहस्सतेवीसविमाणाणि।
उड्ढलोये देवाण, जाणह जिणचेइयालयाणि।।209।।

अन्वयार्थ-उड्ढलोये-ऊर्ध्वलोक में **देवाण**-देवों के **चुलसीदि-लक्खसत्ताणउदिसहस्सतेवीस-विमाणाणि**-चौरासी लाख सत्तानवे हजार तेईस विमान (और इतने ही) **जिणचेइयालयाणि**-जिन चैत्यालय **जाणह**-जानने चाहिये।

सोहम्मीसाणसणक्कुमारो माहिंदो तहा बंभो।
बंभोत्तरो लांतवो, कापिट्ठ-सुक्क-महासुक्का।।210।।
सतारो सहस्सारो, आणद-पाणद-आरण-अच्चुदा य।
सोलस-सग्गा णेया, कप्पवासि-देवठाणाइं।।211।।

अन्वयार्थ-सोहम्मीसाणसणक्कुमारो-सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार **माहिंदो**-माहेंद्र **तहा**-तथा **बंभो**-ब्रह्म **बंभोत्तरो**-ब्रह्मोत्तर **लांतवो**-लांतव **कापिट्ठ-सुक्क-महासुक्का**-कापिष्ठ, शुक्र, महाशुक्र **सतारो**-शतार **सहस्सारो**-सहस्रार **आणद-पाणद-आरण-अच्चुदा य**-आणत, प्राणत, आरण और अच्युत **सोलस-सग्गा**-ये सोलह स्वर्ग **णेया**-जानने चाहिए (ये) **कप्पवासि-देवठाणाइं**-कल्पवासी देवों के स्थान हैं।

इमाहि सग्गाहि उवरि, अहमज्झुड्ढतित्तियगेवेज्जाणि।
णव-अणुदिसाणि य पंच-अणुत्तरविमाणाणि जाणह।।212।।

अन्वयार्थ-इमाहि-इन **सग्गाहि**-स्वर्गों से **उवरि**-ऊपर **अह-मज्झुड्ढतित्तियगेवेज्जाणि**-अधो, मध्य व ऊपर तीन-तीन ग्रैवेयक अर्थात् नौ ग्रैवेयक हैं **णव-अणुदिसाणि**-नौ अनुदिश **य**-और **पंच-अणुत्तर-विमाणाणि**-पाँच अनुत्तर विमान **जाणह**-जानने चाहिए।

गेवेज्जाणि सुदंसण-सुप्पबुद्धमोह-जसहर-सुभद्दं।
सुविसाल-सुमणस-सोमणसं-पीदिंकरं जाणेज्ज।।213।।

अन्वयार्थ-सुदंसण-सुप्पबुद्धमोह-जसहर-सुभद्दं-सुदर्शन, सुप्रबुद्ध, अमोघ, यशोधर, सुभद्र **सुविसाल-सुमणस-सोमणसं**-सुविशाल, सुमनस, सौमनस **पीदिंकरं**-प्रीतिंकर **गेवेज्जाणि**-(नव) ग्रैवेयक **जाणेज्ज**-जानने चाहिए।

अच्ची अच्चिमालिणी, वेर-वेरोचण-सोम-सोमपहा।
अंक-फलक-आइच्चं, णवअणुदिसाणि विआणेज्जा।।214।।

अन्वयार्थ-अच्ची-अर्चि **अच्चिमालिणी**-अर्चिमालिनी **वेर-वेरोचण-सोम-सोमपहा**-वैर, वैरोचन, सोम, सोमप्रभ **अंक-फलक-आइच्चं**-अंक, फलक, आदित्य **णव-अणुदिसाणि**-नव अनुदिश **विआणेज्जा**-जानने चाहिए।

विजयो वेजयंतो य, जयंतो अपराजिदो णेयाइं।
सव्वत्थसिद्धी पंच-अणुत्तराणि विमाणाणि खलु।।215।।

अन्वयार्थ-विजयो-विजय **वेजयंतो**-वैजयंत **जयंतो**-जयंत **अपराजिदो**-अपराजित **सव्वत्थसिद्धी य**-और सर्वार्थसिद्धि **खलु**-निश्चय से **पंचअणुत्तरविमाणाणि**-पाँच अनुत्तर विमान **णेयाइं**-जानने चाहिए।

इगतीस-सत्त-चत्तारि-दोण्णिएक्केक्क-छक्क-चदुकप्पे।
तित्तिय-एक्केक्किंदिय-णामा उडु-आदि-तेसट्ठी।।216।।[1]

अन्वयार्थ-इगतीस-सत्त-चत्तारि-दोण्णिएक्केक्क-छक्क-चदुकप्पे-इकतीस, सात, चार, दो, एक, एक चार कल्पों में छः **तित्तिय-एक्केक्किंदियणामा**-तीन, तीन, तीन, एक व एक ये **उडु-आदि-तेसट्ठी**-ऋजु विमान आदि 63 इंद्रक विमान हैं।

वसंति मज्झलोगम्मि, भवणत्तिय-देवा णरा तिरिया वि।
मज्झलोगो वरो जं, जम्मंति इह तित्थयरादी।।217।।

अन्वयार्थ-मज्झलोगम्मि-मध्य लोक में **णरा**-मनुष्य **तिरिया**-तिर्यंच

व **भवणत्तिय-देवा**-भवनत्रिक देव **वि**-भी **वसंति**-निवास करते हैं **मज्झ-लोगो**-मध्यलोक **वरो**-श्रेष्ठ है **जं**-क्योंकि **इह**-यहाँ **तित्थयरादी**-तीर्थंकरादि महापुरुष **जम्मंति**-जन्म लेते हैं।

सुणाम-दीवासंखा, जंबूदीवादी मज्झलोगम्मि।
लवणादी समुद्दा य, विज्जंति दीवोव्वासंखा।।218।।

अन्वयार्थ-जंबूदीवादी-जम्बूद्वीपादि **सुणाम-दीवासंखा**-शुभ नाम वाले असंख्यात द्वीप **य**-और **दीवोव्वासंखा**-द्वीप के समान असंख्यात **लवणादी**-लवणादि **समुद्दा**-समुद्र **मज्झलोगम्मि**-मध्य लोक में **विज्जंति**-विद्यमान हैं।

जंबूदीवे धादगि-खंडपुस्सरद्ध-ढाइदीवेसुं।
णिवसंति तं मणुस्सा, माणुस-लोगो वि जाणेज्जा।।219।।

अन्वयार्थ-जंबूदीवे-जंबूद्वीप **धादगि-खंड-पुस्सरद्ध-ढाइदीवेसुं**-धातकी खंड, पुष्करार्द्ध इन ढाई द्वीपों में ही **मणुस्सा**-मनुष्य **णिवसंति**-निवास करते हैं **तं**-इसीलिए (ये) **माणुस-लोगो**-मनुष्य लोक **वि**-भी **जाणेज्जा**-जाना जाता है।

भरहो हेमवदो तह, हरि-विदेह-रम्मो हइरण्णवदो।
एरावदो जंबुम्मि, कुलपव्वयंतरिया वस्सा।।220।।

अन्वयार्थ-जंबुम्मि-जंबूद्वीप में **कुलपव्वयंतरिया**-कुलपर्वतों से अन्तरित **भरहो**-भरत **हेमवदो**-हैमवत **हरि-विदेह-रम्मो**-हरि, विदेह, रम्यक् **हइरण्णवदो**-हैरण्यवत् **तह**-और **एरावदो**-ऐरावत **वस्सा**-ये सप्त वर्ष वा क्षेत्र हैं।

हिमवं महाहिमवं च, णिसहो णीलो रुम्मी खलु सिहरी ।।
मणिखचिआ कुलसेला, मूलोवरि समवासा तहा।।221।।

अन्वयार्थ-हिमवं-हिमवन् **महाहिमवं**-महाहिमवन् **णिसहो**-निषध **णीलो**-नील **रुम्मी**-रुक्मि **च**-और **सिहरी**-शिखरिणी **मणिखचिआ**-

मणिओं से खचित **कुलसेला**-कुलपर्वत हैं **तहा**-तथा **खलु**-निश्चय ही **मूलोवरि**-मूल से ऊपर तक **समवासा**-समान व्यास वाले हैं।

णाभिसमो सुदंसणो, मेरू विज्जदे जंबूदीवम्मि।
सोलस-अकिट्टिमाणि हु, जग-पूइम-चेइयालयाणि।।222।।

अन्वयार्थ-जंबूदीवम्मि-जंबूद्वीप में **णाभिसमो**-नाभि के समान (अर्थात् ठीक मध्य में) **सुदंसणो मेरू**-सुदर्शन मेरु **विज्जदे**-विद्यमान है (वहाँ स्थित) **सोलस-अकिट्टिमाणि**-सोलह अकृत्रिम **जग-पूइम-चेइयालयाणि**-चैत्यालय जग पूज्य हैं।

विज्जंति मज्झलोये, चउसद-अट्ठपंचास-जिणगेहा।
जोदिस-विंतर-अहिगा, अकिट्टिमा णमामि सिवत्थं।।223।।

अन्वयार्थ-मज्झलोये-मध्यलोक में **चउसद-अट्ठपंचास-जिणगेहा अकिट्टिमा**-458 अकृत्रिम चैत्यालय विद्यमान हैं **जोदिस-विंतर-अहिगा**-ज्योतिष, व्यंतर के अधिक हैं (इन सभी को) **सिवत्थं**-शिव के लिए **णमामि**-नमस्कार करता हूँ।

तिण्णि-कम्मभूमी तह, जाणह भरहेरावदा विदेहो।
देवुत्तरकुरुत्तमा, हरि-रम्मो मज्झ-भोगमही।।224।।
भोगभूमी जहण्णा, हेमवदो हइरण्णवदो णेयो।
इमेण पयारेण सड-भोगभूमी जंबूदीवे।।225।।

अन्वयार्थ-जंबूदीवे-जंबूद्वीप में **भरहेरावदा**-भरत, ऐरावत **तह**-तथा **विदेहो**-विदेह **तिण्णि-कम्मभूमी**-तीन कर्मभूमि **जाणह**-जानो तथा **देवुत्तरकुरुत्तमा**-देवकुरु व उत्तरकुरु उत्तम भोगभूमि **हरि-रम्मो**-हरि व रम्यक् **मज्झ-भोगमही**-मध्यम भोगभूमि एवं **हेमवदो**-हैमवत् **हइरण्णवदो**-हैरण्यवत् **जहण्णा**-जघन्य **भोगभूमी**-भोगभूमि हैं **इमेण**-इस **पयारेण**-प्रकार से जबूद्वीप में **सडभोगभूमी**-छः भोगभूमि **णेया**-जाननी चाहिए।

धादगिखंड-सुरयणा, दुउणी णेया जंबूदीवादो।
धादगिखंडोव्व तहा, पुस्सरस्स हु अद्धभायम्मि।।226।।

अन्वयार्थ-धादगिखंड-सुरयणा-धातकीखंड की सम्यक् रचना **जंबूदीवादो**-जंबूद्वीप से **दुउणी**-दुगुनी **णेया**-जाननी चाहिए **तहा**- तथा **धादगिखंडोव्व**-धातकी खंड के समान **हु**-ही **पुस्सरस्स**-पुष्करवर के **अद्धभायम्मि**-अर्द्ध भाग में (जाननी चाहिए)।

आदिस्स बे-सिंधूसु, चरम-सयंभूरमण-समुद्दम्मि य।
जंति जलयरा जीवा, णो मज्झ-असंखसिंधूसुं।।227।।

अन्वयार्थ-आदिस्स-प्रारंभ के **बे-सिंधूसु**-दो सिंधुओं-(लवणोदधि व कालोदधि) में **य**-और **चरम-सयंभूरमण-समुद्दम्मि**-अंतिम स्वयंभूरमण समुद्र में **जलयरा**-जलचर **जीवा**-जीव **जंति**-उत्पन्न होते हैं **मज्झ-असंखसिंधूसुं**-मध्य के असंख्य समुद्रों में **णो**-नहीं।

तिहुवण-सिरम्मि अट्ठम-भूमि-ईसिपब्भाराए मज्झे।
णरलोगस्स वासं हु, सिद्धखेत्तं चंदायारं।।228।।

अन्वयार्थ-तिहुवणसिरम्मि-त्रिभुवन के मस्तक पर **अट्ठम-भूमि-ईसिपब्भाराए**-अष्टम पृथ्वी ईषत्प्राग्भार के **मज्झे**-मध्य में **हु**-निश्चय से **णरलोगस्स**-मनुष्य लोक के **वासं**-व्यास वाला (अर्थात् 45 लाख योजन व्यास वाला) **चंदायारं**-चंद्राकार **सिद्धखेत्तं**-सिद्धक्षेत्र (वा सिद्धशिला) है।

सिद्धखेत्तस्स हु उवरि, सिद्धा चिट्ठंति तणुवातवलये।
सम्मत्ताइ-अट्ठगुण-संजुदा सिद्धा णमामि ते।।229।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **सिद्धखेत्तस्स**-सिद्धक्षेत्र के **उवरि**-ऊपर **तणुवातवलये**-तनुवातवलय में **सिद्धा**-सिद्ध प्रभु **चिट्ठंति**-विराजमान हैं **सम्मत्ताइ-अट्ठगुण-संजुदा**-सम्यक्त्वादि आठ गुणों से युक्त **ते-उन सिद्धा**-सिद्धों को **णमामि**-मैं नमस्कार करता हूँ।

पणदस-कम्मभूमीसु, सडकालं परिवट्टेदि सव्वदा।
अंतिमुदहिदीवद्धे, दुहमा कुणरे सुहम-दुहमा।।230।।
पणमिलेच्छखंडेसुं, भरहेरावदस्स खयरसेढीसु।
दुहमासुहमादीदो, अंताउ हाणिविड्ढी तहा।।231।।

अन्वयार्थ-पणदस-कम्मभूमीसु-पंद्रह कर्मभूमियों में **सव्वदा**-सर्वदा **सडकालं**-षट्काल **परिवट्टेदि**-परिवर्तन होता है **अंतिमुदहिदीवद्धे**-अंतिम स्वयंभूरण समुद्र व अर्द्ध स्वयंभू रमण द्वीप में **दुहमा**-दुखमा व **कुणरे**-कुमानुष अर्थात् कुभोगभूमि में **सुहमादुहमा**-सुखमा-दुखमा (प्रवर्तन करता है) **भरहेरावदस्स**-भरत, ऐरावत के **पणमिलेच्छखंडेसुं**-पाँच म्लेच्छ खंडों में **तहा**-तथा **खयरसेढीसु**-विद्याधर की श्रेणियों में **दुहमासुहमादीदो**-दुखमा-सुखमा आदि से लेकर **अंताउ**-अंत तक **हाणिविड्ढी**-हानिवृद्धि रूप (वर्तन करता है)।

उत्तमभोगभूमीइ, सुहमा-सुहमा मज्झिमम्मि सुहमा।
जहण्णे सुहम-दुहमा, दुहमा-सुहमा य विदेहम्मि।।232।।

अन्वयार्थ-(निश्चय से) **उत्तमभोगभूमीइ**-उत्तम भोगभूमि में **सुहमा-सुहमा**-सुखमा-सुखमा **मज्झिमम्मि**-मध्यम भोगभूमि में **सुहमा**-सुखमा **जहण्णे**-जघन्य भोगभूमि में **सुहमा-दुहमा**-सुखमा-दुखमा **य**-और **विदेहम्मि**-विदेह क्षेत्र में **दुहमा-सुहमा**-दुखमा-सुखमा काल रहता है।

लोगणुवेक्खं भव्वा, चिंतेज्जा धम्म-झाण-वड्ढत्थं।
संठाणविचय-झाणं लोग-चिंतणं मुणेदव्वं।।233।।

अन्वयार्थ-भव्वा-भव्यों को **धम्म-झाण-वड्ढत्थं**-धर्मध्यान की वृद्धि के लिए **लोगणुवेक्खं**-लोकानुप्रेक्षा का **चिंतेज्जा**-चिंतन करना चाहिए **लोग-चिंतणं**-लोक का चिंतन करना **संठाणविचय-झाणं**-संस्थान विचय धर्मध्यान **मुणेदव्वं**-जानना चाहिए।

इमो संसारि-जीवो, अणंतकालंतं वसदि णिगोदे।
तम्मि भुंजेदि दुहाणि, णंतवारं जम्ममरणाण।।234।।

अन्वयार्थ-इमो-यह **संसारि-जीवो**-संसारी जीव **अणंतकालंतं**-अनंत काल तक **णिगोदम्मि**-निगोद में **वसदि**-बसता है **तम्मि**-वहाँ **णंतवारं**-अनंतबार **जम्ममरणाण**-जन्म और मरण के **दुहाणि**-दु:खों को **भुंजेदि**-भोगता है।

तत्तो णिस्सरिदूणं, उप्पज्जेदि पुढविकायादीसुं।
तत्थ वि एगेंदियो हु, जीवो अइ-दुल्लहो जाणह।।235।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव **तत्तो**-उससे **णिस्सरिदूणं**-निकलकर **पुढविकायादीसुं**-पृथ्वीकायादिकों में **उप्पज्जेदि**-उत्पन्न होता है **तत्थ**-वहाँ (उसका) **एगेंदियो**-एकेन्द्रिय (होना) **वि**-भी **अइ-दुल्लहो**-अति दुर्लभ **जाणह**-जानो।

पुढविजलतेउवाऊ, पत्तेय-वणप्फदी होसी बहुहा।
तादु होज्ज बेअक्खा, अइ-दुल्लहा तं वि जाणेह।।236।।

अन्वयार्थ-यह जीव **बहुहा**-बहुत बार **पुढविजलतेउवाऊ**-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु **पत्तेय-वणप्फदी**-प्रत्येक वनस्पति **होसी**-हुआ **तादु**-उससे **बेअक्खा**-द्वीन्द्रिय **होज्ज**-होता है **तं**-उसे **वि**-भी **अइ-दुल्लहा**-अति दुर्लभ **जाणेह**-जानो।

संख-पिपीलगा अली, बे-ते-चउरिंदिया अइ-दुल्लहा।
फास-रसण-घाणाणं, चक्खुस्स लहणं दुल्लहा वि।।237।।

अन्वयार्थ-पुन: **संख-पिपीलगा**-शंख, चींटी **अली**-भौंरा **बे-ते-चउरिंदिया**-दो इंद्रिय, त्रीन्द्रिय, चार इन्द्रिय होना **अइ-दुल्लहा**-अति दुर्लभ है **फास-रसण-घाणाणं**-स्पर्श, रसना, घ्राण और **चक्खुस्स**-चक्षु का **लहणं**-प्राप्त करना **वि**-भी **दुल्लहा**-दुर्लभ है।

होच्चा विकलेंदियं च, मणरहिदो पंचेंदियो असण्णी।
पुण-मणजुत्तो सण्णी, होहीअ वि तिरिय-जोणीसुं।।238।।

अन्वयार्थ-विकलेंदियं-विकलेंदिय **होच्चा**-होकर **मणरहिदो**-मन रहित **असण्णी**-असंज्ञी **पंचेंदियो**-पंचेंद्रिय हुआ **पुण**-पुनः **तिरिय-जोणीसुं**-तिर्यंच योनियों में **मणजुत्तो**-मन सहित **सण्णी**-संज्ञी **वि**-भी **होहीअ**-हुआ।

मारणताडणदुहाणि, छुहं तिसं रोयं भयं किलेसं।
सुइरं सहेदि तस्सिं, मरदि संकिलेस-भावेहिं।।239।।

अन्वयार्थ-तस्सिं-वहाँ **सुइरं**-दीर्घ काल **छुहं**-क्षुधा **तिसं**-तृषा **रोयं**-रोग **भयं**-भय **मारणताडणदुहाणि**-मारना व ताड़ना आदि के दुःखों को **सहेदि**-सहता है **संकिलेस-भावेहिं**-संक्लेश-भावों से **मरदि**-मृत्यु को प्राप्त करता है।

सिंहाइ-कूरजंतुं, होच्चा मरेदि णिरयगदिं लहेदि।
बहुसायर-पेरंतं, तत्थ अच्चंत-दुक्खाइं।।240।।

अन्वयार्थ-सिंहाइ-कूरजंतुं-सिंहादि क्रूर जंतु **होच्चा**-होकर **मरेदि**-मृत्यु को प्राप्त करता है व **णिरयगदिं**-नरक गति **लहेदि**-प्राप्त करता है **तत्थ**-वहाँ **बहुसायर-पेरंतं**-बहुत सागर पर्यंत **अच्चंत-दुक्खाइं**-अत्यंत दुःखों को (प्राप्त करता है)।

तत्तो णिस्सरिदूणं, होच्चु पंचिंदिय-तिरिय-मणुजं वा।
देवेसु उप्पज्जदे, सहेदि माणस-दुक्खं पउरं।।241।।

अन्वयार्थ-तत्तो-वहाँ से **णिस्सरिदूणं**-निकलकर **पंचिंदिय-तिरिय-मणुजं वा**-पंचेंद्रिय तिर्यंच वा मनुष्य **होच्चु**-होकर (कभी) **देवेसु**-देवों में **उप्पज्जदे**-उत्पन्न होता है तो **पउरं**-प्रचुर **माणस-दुक्खं**-मानसिक दुःख को **सहेदि**-सहन करता है।

जीवो धम्मेण विणा, बहुवारं भमदि णाणाजोणीसु।
दुल्लहो धम्म-जोग्गो, णिच्चं माणुस्स-पज्जाओ।।242।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव **णिच्चं**-नित्य ही **धम्मेण**-धर्म के **विणा**-बिना **णाणाजोणीसु**-नाना योनियों में **बहुवारं**-बहुत बार **भमदि**-भ्रमण करता है **धम्म-जोग्गो**-धर्म के योग्य **माणवपज्जाओ**-मानव पर्याय (प्राप्त करना) **दुल्लहो**-दुर्लभ है।

भोग-कुभोगभूमीसु, जीवो पुण्णेण गदो बहुवारं।
तहवि सय जिणधम्मस्स, पावणमच्चंत-दुल्लहो य।।243।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव **पुण्णेण**-पुण्य से **बहुवारं**-बहुत बार **भोग-कुभोग-भूमीसु य**-भोग भूमि व कुभोग भूमियों में **गदो**-गया **तहवि**-तथापि **सय**-सदा **जिणधम्मस्स**-जिनधर्म का **पावणं**-प्राप्त करना **अच्चंत-दुल्लहो**-अत्यंत दुर्लभ है।

णर-पज्जायं लहिच्चु, सुकुल-आरोग्ग-देह-दिग्घाऊण।
तह उत्तमबुद्धीइ वि, पावणं दुल्लह-अच्चंता।।244।।

अन्वयार्थ-णर-पज्जायं-नर पर्याय को **लहिच्चु**-प्राप्त कर **सुकुल-आरोग्ग-देह-दिग्घाऊण**-अच्छा कुल, आरोग्य युक्त देह दीर्घायु **तह**-तथा **उत्तमबुद्धीइ**-उत्तम बुद्धि का **पावणं**-प्राप्त करना **वि**-भी **अच्चतं-दुल्लहा**-अत्यंत दुर्लभ है।

सायरे पडणे पुणो, रयणे दुल्लहं पावणं होज्जा।
तहेव तसपज्जायस्स, अच्चंत-दुल्लहो णेयो हु।।245।।

अन्वयार्थ-जिस प्रकार **सायरे**-सागर में **रयणे**-रत्न **पडणे**-गिरने पर **पुणो**-पुनः (उसे) **पावणं**-प्राप्त करना **दुल्लहं**-दुर्लभ **होज्जा**-होता है **तहेव**-उसी प्रकार **तस-पज्जायस्स**-त्रस पर्याय को (प्राप्त करना) **हु**-निश्चय से **अच्चंत-दुल्लहो**-अत्यंत दुर्लभ **णेयो**-जानना चाहिए।

ताडफलं कागमुहे, कागतालसंजीवगणायेणं।
पडदि ताहि वि दुल्लहो, णरकायस्स लहणं तसेसु।।246।।

अन्वयार्थ-कागतालसंजीवगणायेणं-काक ताल संजीवक न्याय (काकतालीय न्याय) से **कागमुहे**-(ताड़ वृक्ष के नीचे से उड़ते हुए जा रहे) कौए के मुख में अकस्मात् **ताडफलं**-ताड़वृक्ष का फल **पडदि**-गिरता है (जितना मुश्किल यह है) **ताहि वि**-उससे भी अधिक **दुल्लहो**-दुर्लभ है **तसेसु**-त्रस जीवों में **णरकायस्स**-मनुष्य की काया का **लहणं**-प्राप्त करना।

दुल्लहा उत्तम-पहण-संगदि-तिव्वबुद्धी णिरोय-तणू।
तहेव धम्मणिमित्तं, गुरुजोगो दुल्लहो जाणह।।247।।

अन्वयार्थ-मनुष्य भव में **उत्तम-पहण-संगदि-तिव्वबुद्धी**-उत्तम वंश, उत्तम संगति, प्रखर बुद्धि **णिरोय-तणू**-रोग से रहित देह **दुल्लहा**-दुर्लभ है **तहेव**-उसी प्रकार **धम्म-णिमित्तं**-धर्म के निमित्त **गुरूजोगो**-गुरु का योग **दुल्लहो**-दुर्लभ **जाणह**-जानो।

सम्मत्तस्स कारणं, वीयरायि-देव-सत्थ-णिग्गंथा।
ताणुवलद्धी जाणह, दुल्लहा सम्म-मइदुल्लहं।।248।।

अन्वयार्थ-सम्मत्तस्स-सम्यक्त्व के **कारणं**-कारण **वीयरायिदेव-सत्थ-णिग्गंथा**-वीतरागी देव, सच्चे शास्त्र व निर्ग्रन्थ गुरु हैं **ताणुवलद्धी**-उनकी उपलब्धि **दुल्लहा**-दुर्लभ **जाणह**-जानो **सम्मं**- सम्यक्दर्शन **अइदुल्लहं**-अति दुर्लभ है।

तहेव अप्पणाणं हु, चित्त-ठाणं दुल्लहं सण्णाणे।
दुल्लह-अणुव्वदाइं, मोक्खमग्गो एगदेसो य।।249।।

अन्वयार्थ-तहेव-उसी प्रकर **हु**-निश्चय से **अप्पणाणं**-आत्म ज्ञान **दुल्लहं**-दुर्लभ है **सण्णाणे**-सम्यक् ज्ञान में **चित्तठाणं**-चित्त का स्थिर रहना दुर्लभ है **दुल्लह-अणुव्वदाइं**-अणुव्रत दुर्लभ है **य**-और **एकदेसो**-एकदेश **मोक्खमग्गो**-मोक्षमार्ग दुर्लभ है।

भव-सरीर-भोयादो, विरत्ती अच्चंत-दुल्लहा होज्ज।
दुल्लहं सम्मचरियं, थिरभावा सिवमग्गे तहा।।250।।

अन्वयार्थ-भव-सरीर-भोयादो-संसार-शरीर-भोगों से **विरत्ती**-विरक्ति **अच्चंत-दुल्लहा**-अत्यंत दुर्लभ **होज्ज**-होती है **सम्मचरियं**-सम्यक् चारित्र **दुल्लहं**-दुर्लभ है **तहा**-तथा **सिवमग्गे**-मोक्षमार्ग में **थिरभावा**-स्थिर परिणामों का होना (अति दुर्लभ है)।

दुल्लहा णरकाया य, संघयणं वज्जरिसहणारायं।
दुल्लहं खइय-सम्मं, दुल्लहा खलु उवसमसेणी।।251।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **णरकाया**-मनुष्य की देह (प्राप्त होना) **दुल्लहा**-दुर्लभ है **वज्जरिसहणारायं संघयणं**-वज्रऋषभनाराच संहनन **खइय-सम्मं**-क्षायिक सम्यक्त्व **दुल्लहं**-दुर्लभ है **य**-और **उवसमसेणी**-उपशमश्रेणी (पर आरूढ़ होना) **दुल्लहा**-दुर्लभ है।

दुल्लहं सयलचरियं, दुल्लहो णिक्कंख-तवो झाणं च।
दुल्लहा खवगसेणी, दुल्लहं खीणमोह-ठाणं।।252।।

अन्वयार्थ-सयलचरियं-सकल चारित्र (का होना) **दुल्लहं**-दुर्लभ है **झाणं**-ध्यान **च**-और **णिक्कंख-तवो**-निष्कांक्ष तप **दुल्लहो**-दुर्लभ है **खवगसेगी**-क्षपकश्रेणी **दुल्लहा**-दुर्लभ है व **खीणमोह-ठाणं**-क्षीण मोह गुणस्थान की प्राप्ति **दुल्लहं**-दुर्लभ है।

सजोग-अजोग-केवलि-ठाणस्स अइ-दुल्लहं पावणं च।
दुल्लहा सिद्धवत्था, वासणं सुद्धप्पसरूवे।।253।।

अन्वयार्थ-सजोग-अजोग-केवलि-ठाणस्स च-सयोग केवली और अयोग केवली स्थान का **पावणं**-प्राप्त करना **अइ-दुल्लहं**-अति दुर्लभ है व **सिद्धवत्था**-सिद्ध की अवस्था **दुल्लहा**-दुर्लभ है **सुद्धप्पसरूवे**-शुद्ध आत्म स्वरूप में **वासणं**-निवास करना दुर्लभ है।

दुल्लहं बोहिगहणं, कम्मक्खयभावणा य दुल्लहा हु।
लहिच्चु सव्वपदत्था, णो करेदि हिदं मूढो सो।।254।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय **बोहिगहणं**-बोधि (अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक्चारित्र) को ग्रहण करना **दुल्लहं**-दुर्लभ है **य**-और **कम्मक्खय-भावणा**-कर्म को क्षय करने की भावना **दुल्लहा**-दुर्लभ है (जो) **सव्वपदत्था**-सब पदार्थों को **लहिच्चु**-प्राप्त करके भी **हिदं**-हित **णो करेदि**-नहीं करता **सो**-वह **मूढो**-मूर्ख है।

धर्मानुप्रेक्षा

पुण्णं भोय-णिमित्तं, णो कल्लाणणिमित्तं अभव्वाण।
मोक्ख-णिमित्तं धम्मं, भव्वा हु गहेदुं समत्था।।255।।

अन्वयार्थ-अभव्वाण-अभव्यों के लिए **पुण्णं**-पुण्य **भोय-णिमित्तं**-भोग का निमित्त है **कल्लाण-णिमित्तं णो**-कल्याण का निमित्त कदापि भी नहीं है **भव्वा**-भव्य जीव **हु**-ही **मोक्ख-णिमित्तं**-मोक्ष के निमित्त **धम्मं**-धर्म को **गहेदुं**-ग्रहण करने में **समत्था**-समर्थ हैं।

ववहारेण मण्णदे, धम्मो पूयादि-पुण्णकज्जाइं।
तेण विणा ण सावयो, अप्प-हिदंकरो खलु धम्मो।।256।।

अन्वयार्थ-पूयादि-पुण्णकज्जाइं-पूजा आदि पुण्य कार्य **ववहारेण**-व्यवहार से **धम्मो**-धर्म **मण्णदे**-माना जाता है **तेण विणा**-उसके बिना **ण सावयो**-श्रावक-श्रावक नहीं है **धम्मो**-धर्म **खलु**-निश्चय से **अप्प-हिदंकरो**-आत्मा का हित करने वाला है।

सायारणयार-धम्म-भेयेण धम्मो बेविहो भणिदो।
सायारो हु सरागो, पुणो बेविहो य अणयारो।।257।।

अन्वयार्थ-सायारणयार-धम्म-भेयेण-सागार व अनगार धर्म के भेद से **धम्मो**-धर्म **बेविहो**-दो प्रकार का **भणिदो**-कहा गया है **सायारो**-सागार धर्म **हु**-निश्चय से **सरागो**-सराग धर्म है **य**-और **अणयारो**-अनगार धर्म **पुणो**-पुनः **बेविहो**-दो प्रकार का (कहा गया है)।

दुविहाणयार-धम्मो, सरायो ववहारो पमत्तादो।
ताहि अग्गे सव्वदा, णिच्छयो हु वीयरायो वा।।258।।

अन्वयार्थ-अणयार-धम्मो-अनगार धर्म **हु**-निश्चय से **दुविहो**-दो प्रकार का है प्रमत्त और अप्रमत्त **सरायो**-सराग धर्म **ववहारो**-या व्यवहार धर्म वह है **पमत्तादो**-जो प्रमत्त गुणस्थान तक होता है **ताहि**-उससे **अग्गे**-आगे **सव्वदा**-सर्वदा **वीयरायो**-वीतराग धर्म **वा**-या **णिच्छयो**-निश्चय धर्म होता है।

पक्खिगो णिट्ठियो खलु, साहगो तिविहो सावयो भणिदो।
सावय-धम्मो णिच्चं, भव्वाण हिदत्थं समत्थो।।259।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **सावयो**-श्रावक **तिविहो**-तीन प्रकार का **भणिदो**-कहा गया है **पक्खिगो**-पाक्षिक **णिट्ठियो**-नैष्ठिक व **साहगो**-साधक **सावय-धम्मो**-श्रावक धर्म **णिच्चं**-नित्य **भव्वाण**-भव्यों का **हिदत्थं**-हित करने में **समत्थो**-समर्थ है।

थेयमाहेडं तहा, वेस्सापरंगणागमणं जूअं।
मादगामिस-भोयणं, इमाणि वसणाणि उज्झेज्जा।।260।।

अन्वयार्थ-थेयं-चोरी **आहेडं**-शिकार **वेस्सापरंगणागमणं**-वेश्यागमन, परस्त्री गमन **जूअं**-जूआ **मादगामिस-भोयणं**-मादक पदार्थों व आमिष भोजन (माँसाहार) **इमाणि वसणाणि**-इन व्यसनों का **उज्झेज्जा**-त्याग करना चाहिए।

मुंचेज्ज णिसिभोयणं, अगालिदणीरं तिमगारं च।
कुणदु दयं जिणच्चणं उज्झदु पंचुंबरं गुणा हु।।261।।

अन्वयार्थ-(श्रावक को) **णिसिभोयणं**-रात्रि भोजन **मुंचेज्ज**-त्याग करना चाहिए **अगालिदणीरं**-अनछना जल **तिमगारं च**-व तीन प्रकार के मकार (का त्याग करना चाहिए) **दयं**-दया **जिणच्चणं**-जिनअर्चन **कुणदु**-करना चाहिए व **पंचुंबरं**-पाँच उदंबरों का **उज्झ**-त्याग करना चाहिए **हु**-निश्चय से (ये) **गुणा**-(श्रावकों के) मूलगुण हैं।

हिंसाइ-पणपावाण, मुंचणमणुव्वदं थूलरूवेण।
अहिंस-सच्चत्थेयं, संगपरिमाण-बंभचेरं।।262।।

अन्वयार्थ-हिंसाइ-पणपावाण-हिंसादि पाँच पापों का **थूलरूवेण**-स्थूल रूप से **मुंचणं**-त्याग करना **अणुव्वदं**-अणुव्रत है (अणुव्रत पाँच हैं) **अहिंस-सच्चत्थेयं**-अहिंसा, सत्य, अस्तेय **संगपरिमाण-बंभचेरं**-परिग्रह परिमाण व ब्रह्मचर्य अणुव्रत।

णेयाणि गुणव्वदाणि, अणुव्वद-गुणा सया जे वड्ढंति।
दिसव्वदं देसव्वद-मणट्ठदंड-विरदी तिविहा।।263।।

अन्वयार्थ-जे-जो **सया**-सदा **अणुव्वद-गुणा**-अणुव्रतों के गुणों की **वड्ढंति**-वृद्धि करते हैं उन्हें **गुणव्वदाणि**-गुणव्रत **णेयाणि**-जानना चाहिए **तिविहा**-(ये गुणव्रत) तीन प्रकार के हैं **दिसव्वदं**-दिग्व्रत **देसव्वदं**-देशव्रत व **अणट्ठदंडविरदी**-अनर्थदंडविरति व्रत।

जं सिक्खं देदि सया, महव्वद-गहणस्स य कल्लाणस्स।
सिक्खावदं हु णेयं, रक्खेदि देसव्वदाइं च।।264।।

अन्वयार्थ-जं-जो **सया**-सदा **महव्वद-गहणस्स**-महाव्रत ग्रहण करने की **य**-व **कल्लाणस्स**-कल्लाण की **सिक्खं**-शिक्षा **देदि**-देता है **च**-और **देसव्वदाइं**-देशव्रतों की **रक्खेदि**-रक्षा करता है उसे **हु**-निश्चय से **सिक्खावदं**-शिक्षाव्रत **णेयं**-जानना चाहिए।

सामाइयं च पढमं, पोसहुववासो अदिहिसक्कारो।
सल्लेहणा चउविहं, सिक्खावद-मप्पविसुद्धीए।।265।।

अन्वयार्थ-पढमं-प्रथम **सामाइयं**-सामायिक **पोसहुववासो**-प्रोषधोपवास **अदिहि-सक्कारो**-अतिथि-सत्कार **च**-और **सल्लेहणा**-सल्लेखना **चउविहं**-चार प्रकार के **सिक्खावदं**-शिक्षाव्रत **अप्पविसुद्धीइ**-आत्मविशुद्धि के लिए हैं।

अणुव्वदी पालेज्जा, एयादस-सावय-पडिमा णिच्चं।
दंसणं वदं पडिमा, सामाइय-पोसह-सचित्तचागो।।266।।
रत्तीइ भुत्ति-चागो, बंभचेर-मारंभ-संग-चागो।
अणुमदि-उद्दिट्ठाणं, चागो कमेण सुपालेज्जा।।267।।

अन्वयार्थ-अणुव्वदी-अणुव्रतियों को **णिच्चं**-नित्य **एयादस-सावय-पडिमा**-ग्याहर श्रावक की प्रतिमाओं का **पालेज्जा**-पालन करना चाहिए **दंसणं**-दर्शन **वदं**-व्रत **सामाइय-पोसह-सचित्त-चागो**-सामायिक प्रतिमा, प्रोषध प्रतिमा, सचित्त त्याग प्रतिमा **रत्तीइ भुत्ति-चागो**-रात्रि भुक्ति त्याग **बंभचेरं**-ब्रह्मचर्य **आरंभ-संग-चागो**-आरंभ त्याग, परिग्रह त्याग **अणुमदि-उद्दिट्ठणं चागो**-अनुमति त्याग और उद्दिट्ठ त्याग **पडिमा**-प्रतिमा **कमेण**-क्रम से **सुपालेज्जा**-अच्छी प्रकार से पालना चाहिए।

पणमहव्वदं समिदिं, इंदियणिरोहं सडावस्सगं च।
सत्त-विसेसा गुणा हु, मूलगुणा समणा पालेज्ज।।268।।

अन्वयार्थ-समणा-श्रमणों को **हु**-निश्चय से **पणमहव्वदं**-पंच महाव्रत **समिदिं**-पाँच समिति **इंदियणिरोहं**-पंचेंद्रिय निरोध **सडावस्सगं**-षटावश्यक **च**-और **सत्त-विसेसा गुणा**-सात विशेष गुण **मूलगुणा**-इन अट्ठाईस मूलगुणों का **पालेज्ज**-पालन करना चाहिए।

चउतीस-उत्तरगुणा, सत्तीए पालंति अणयारा हु।
बेदह-तवा बेवीस-परीसहा जयंति सिवत्थं।।269।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **अणयारा**-अनगार **सिवत्थं**-मोक्ष के लिए **सत्तीए**-शक्ति से **चउतीस-उत्तरगुणा**-चौंतीस उत्तरगुणों का **बेदह-तवा**-बारह तपों का **पालंति**-पालन करते हैं व **बेवीस-परीसहा**-बाईस परीषहों को **जयंति**-जीतते हैं।

उत्तम-खमा मद्दवं, अज्जवं सोचं सच्चं संजमो।
तवो चागाकिंचणं, बंभचेरं धम्मो दसहा।।270।।

अन्वयार्थ-उत्तम-खमा-उत्तम क्षमा **मद्दवं**-मार्दव **अज्जवं**-आर्जव **सोचं**-

शौच **सच्चं**-सत्य **संजमो**-संयम **तवो-चागाकिंचणं**-तप, त्याग आकिंचन **बंभचेरं**-ब्रह्मचर्य ये **दसहा**-दस प्रकार का (श्रमण) **धम्मो**-धर्म है।

सगप्पहिदत्थं सया, भव्वा चिंतेज्जा दसविहधम्मं।
धम्मं विणा ण सग्गो, णो खलु सस्सद-कल्लाणं वि।।271।।

अन्वयार्थ-भव्वा-भव्यों को **सया**-सदा **सगप्पहिदत्थं**-अपनी आत्मा के हित के लिए **दसविहधम्मं**-सभी धर्मों का **चिंतेज्जा**-चिंतन करना चाहिए **खलु**-निश्चय से **धम्मं विणा**-धर्म के बिना **ण**-न **सग्गो**-स्वर्ग है **णो**-न ही **सस्सद-कल्लाणं**-शाश्वत कल्याण **वि**-भी।

पत्ते कोह-णिमित्ते, वह-बंधण-ताडण-मारणादीण।
तहवि णो कुणदि कोहं, ते पडि धरेदि खमाभावं।।272।।

अन्वयार्थ-वह-बंधण-ताडण-मारणादीण-वध, बंधन, ताड़न, मारण आदि के (वा) **कोह-णिमित्ते**-क्रोध के निमित्त **पत्ते**-प्राप्त होने पर भी **कोहं**-क्रोध **णो**-नहीं **कुणदि**-करता **तहवि**-तथापि **ते**-उनके **पडि**-प्रति **खमाभावं**-क्षमाभाव **धरेदि**-धारण करता है।

माणकसायोदयेण, होदि जदा माणरूवपरिणामो।
तदा धरेदि विणयं हु, मद्दवधम्मो तस्स मुणिस्स।।273।।

अन्वयार्थ-माणकसायोदयेण-मान कषाय के उदय से **जदा**-जब **माणरूवपरिणामो**-मान रूप परिणाम **होदि**-होता है **तदा**-तब **हु**-निश्चय से **विणयं**-विनय **धरेदि**-धारण करता है **तस्स**-उन **मुणिस्स**-मुनि के **मद्दवधम्मो**-मार्दव धर्म होता है।

हवेदि जोग-पवित्ती, सरलो सहजो जस्स णिग्गंथस्स।
ण कुणदि जंपदि चिंतदि, कया वि वकं अज्जवं तस्स।।274।।

अन्वयार्थ-जस्स-जिन **णिग्गंथस्स**-निर्ग्रन्थ साधु की **जोग-पवित्ती**-योगों की प्रवृत्ति **सरलो**-सरल **सहजो**-सहज **हवेदि**-होती है **कया वि**-कभी भी **ण**-न **वकं**-वक्र **कुणदि**-कार्य करते हैं **जंपदि**-नही बोलते है **चिंतदि**-न ही वक्र सोचते हैं **तस्स**-उनके **अज्जवं**-आर्जव धर्म होता है।

धुवदि लोहमलपुंजं, जो समदाए णिम्मलणीरेणं।
णेव कंखदे हवेदि, णिल्लोहिल्लस्स खलु सोचं।।275।।

अन्वयार्थ-जो-जो साधु **समदाए**-समता के **णिम्मलणीरेणं**-निर्मल नीर से **लोहमलपुंजं**-लोभ मल पुंज को **धुवदि**-धोता है **णेव कंखदे**-कोई आकांक्षा नहीं करता **णिल्लोहिल्लस्स**-उन निर्लोभी मुनि के **खलु**-निश्चय से **सोचं**-शौच धर्म **हवेदि**-होता है।

णिच्चं सच्चं भणदे, सच्चं चिंतेदि करेदि य सच्चं।
सगसरूवे रज्जदे, समणस्स हवदि सच्च-धम्मो।।276।।

अन्वयार्थ-(जो श्रमण) **णिच्चं**-नित्य **सच्चं**-सत्य **भणदे**-बोलता है **सच्चं**-सत्य **चिंतेदि**-चिंतन करता है **य**-और **सच्चं**-सत्य **करेदि**-प्रवृत्ति करता है व **सगसरूवे**-स्वस्वरूप में **रज्जदे**-रंजायमान रहता है उस **समणस्स**-श्रमण के **सच्च-धम्मो**-सत्यधर्म **हवदि**-होता है।

इंदिय-मणणिग्गहं च, किच्चा रक्खेदि सव्वजीवा जो।
महव्वदं पालेज्जा, तस्स जदिस्स संजमो होदि।।277।।

अन्वयार्थ-इंदिय-मणणिग्गहं च-इंद्रिय और मन का निग्रह **किच्चा**-करके **जो**-जो **सव्वजीवा**-सभी जीवों की **रक्खेदि**-रक्षा करता है **महव्वदं**-महाव्रतों का **पालेज्जा**-पालन करता है **तस्स**-उस **जदिस्स**-यति के **संजमो**-संयम धर्म **होदि**-होता है।

किच्चा कंखणिरोहं, अणुरज्जदि अक्खणिरोहमप्पम्मि।
बेदह-तवं करेज्जा, संजदस्स होदि तव-धम्मो।।278।।

अन्वयार्थ-कंख-णिरोहं-आकांक्षा का निरोध **अक्खणिरोहं**-इंद्रियों का निरोध **किच्चा**-करके **अप्पम्मि**-आत्मा में **अणुरज्जदि**-अनुरक्त होता है **बेदह-तवं**-बारह तप **करेज्जा**-करता है **संजदस्स**-उन संयत के **तव-धम्मो**-तप धर्म **होदि**-होता है।

मुंचिय बाहिर-संगं, अंतर-परिग्गहं आमुयेदि खलु।
सव्वावियारं वि तस्स, जदिस्स हवेदि चागधम्मो।।279।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **बाहिर-संगं**-बाह्य परिग्रह को व **अंतर-परिग्गहं**-अंतरंग परिग्रह को **मुंचिय**-त्यागकर **सव्वावियारं**-सर्वविकारों को **वि**-भी **आमुयेदि**-त्यागता है **तस्स**-उस **जदिस्स**-यति के **चागधम्मो**-त्यागधर्म **हवेदि**-होता है।

अप्पं विणा लोयम्मि, परमाणू मेत्तं वि णो हु मज्झं।
णियगुण-भुंजणं सया, रमणमाकिंचणं सरूवे।।280।।

अन्वयार्थ-अप्पं-आत्मा के **विणा**-बिना **लोयम्मि**-लोक में **हु**-निश्चय से **परमाणू मेत्तं**-परमाणु मात्र **वि**-भी **णो मज्झं**-मेरा नहीं है (यह चिंतन करते हुए) **सया**-सदा **णियगुण-भुंजणं**-निजगुणों का भोग करना व **सरूवे**-निजात्म स्वरूप में **रमणं**-रमण करना **आकिंचणं**-अकिंचन धर्म है।

अप्पं भणेज्ज बंभो, तस्सिं आचरणं हु बंभचेरं।
सव्वावियारहीणाण, अवियारीण बंभो धम्मो।।281।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय ही **अप्पं**-आत्मा को **बंभो**-ब्रह्म **भणेज्ज**-कहा जाता है **तस्सिं**-उसमें **आचरणं**-चर्या करना **बंभचेरं**-ब्रह्मचर्य कहलाता है **सव्वावियारहीणाण**-सभी विकारों से हीन **अवियारीण**-अविकारियों के **बंभो धम्मो**-ब्रह्मचर्य धर्म होता है।

जो मुणी धरदि धम्मं, णस्सदि दव्व-भाव-णोकम्माइं।
सो हु हवदि णिक्कम्मो, तहा विज्जदे लोयग्गम्मि।।282।।

अन्वयार्थ-जो-जो **मुणी**-मुनि **धम्मं**-धर्म **धरदि**-धारण करता है **सो**-वह **हु**-निश्चय से **दव्व-भाव-णोकम्माइं**-द्रव्य कर्म, भाव कर्म और नोकर्मों को **णस्सदि**-नष्ट करता है **सो**-वह **णिक्कम्मो**-निष्कर्म (कर्म से रहित) **हवेदि**-होता है **तहा**-तथा **लोयग्गम्मि**-लोक के अग्र भाग में **विज्जदे**-विराजमान होता है।

धम्मो सस्सद-मित्तं, धम्मो सुद्धभावो चेयणाए।
तस्स लद्धीइ हेदू, ववहार-धम्मो जाणेज्जा।।283।।

अन्वयार्थ-धम्मो-धर्म **सस्सद-मित्तं**-शाश्वत मित्र है **धम्मो**-धर्म **चेयणाए**-चेतना का **सुद्धभावो**-शुद्ध भाव है **तस्स**-उसकी **लद्धीइ**-प्राप्ति का **हेदू**-कारण **ववहार-धम्मो**-व्यवहार धर्म **जाणेज्जा**-जाना जाता है।

धम्मो हु कप्परुक्खो, चिंतामणी कल्लाणगारी चिय।
कामकुंभो धेणू य, बे-लोये सुहकरो धम्मो।।284।।

अन्वयार्थ-धम्मो-धर्म **हु**-निश्चय से **कप्परुक्खो**-कल्पवृक्ष है **चिंतामणी**-चिंतामणि रत्न है **चिय**-धर्म ही **कल्लाणगारी**-कल्याणकारी है (धर्म) **कामकुंभो**-कामकुंभ है **धेणू**-कामधेनु है **य**-और **धम्मो**-धर्म **बे लोये**-दोनों लोक में **सुहकरो**-सुखकर है।

धम्मं धरेदि णाणी, धम्मो मित्तं च रक्खगो जणगो।
धम्मो सस्सद-मादा, सहयरो अणंतयालंतं।।285।।

अन्वयार्थ-णाणी-ज्ञानी **धम्मं**-धर्म को **धरेदि**-धारण करता है **धम्मो**-धर्म **मित्तं**-मित्र है **रक्खगो**-रक्षक है **च**-और **जणगो**-पिता है **धम्मो**-धर्म **सस्सद-मादा**-शाश्वत माता है (धर्म) **हु**-निश्चय से **अणंतयालंतं**-अनंत काल तक **सहयरो**-सहचर है।

धम्मो जीव-सहावो, धम्मो सस्सदं धणं णाणीणं।
सिद्धाण सुद्धसीलं, चेयणगुणविहवो धम्मो य।।286।।

अन्वयार्थ-धम्मो-धर्म **जीव-सहावो**-जीव का स्वभाव है **णाणीणं**-ज्ञानियों का **सस्सदं धणं**-शाश्वत धन है **धम्मो**-धर्म **सिद्धाण**-सिद्धों का **सुद्धसीलं**-शुद्ध स्वभाव है **य**-और **धम्मो**-धर्म **चेयणगुणविहवो**-चैतन्य गुणों का वैभव है।

परमेट्ठीणं भावो, ताणाराहणा सस्सद-अमियं हु।
धम्मो जगुद्धारगो, अणंतसुहकारणं धम्मो।।287।।

अन्वयार्थ-परमेट्ठीणं-परमेष्ठियों का **भावो**-भाव **ताण**-उनकी

आराहणा-आराधना **जगुद्धारगो**-जगत् का उद्धारक **धम्मो**-धर्म है (धर्म) **हु**-ही **सस्सद-अमियं**-शाश्वत अमृत है **अणंतसुहकारणं**-अनंत सुख का कारण **धम्मो**-धर्म है।

संसार-हेदू होज्ज, मिच्छत्तं अण्णाणमसंजमो य।
पुरिसट्ठेण कालाइ-णिमित्तेण लहदि वा धम्मं।।288।।

अन्वयार्थ-मिच्छत्तं-मिथ्यात्व **अण्णाणं**-अज्ञान **य**-और **असंजमो**-असंयम **संसार-हेदू**-संसार का कारण **होज्ज**-होते हैं (जीव) **पुरिसट्ठेण**-पुरुषार्थ से **वा**-या **कालाइ-णिमित्तेण**-कालादि निमित्त से **धम्मं**-धर्म **लहदि**-प्राप्त करता है।

सम्मत्तणाणचरियं, सव्वकम्मक्खय-कारणं णिच्चं।
धम्मंगं णादव्वं, लहदि तत्तो मोक्खं भव्वो।।289।।

अन्वयार्थ-सम्मत्तणाणचरियं-सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र **णिच्चं**-नित्य ही **सव्वकम्मक्खय-कारणं**-सभी कर्मों के क्षय का कारण हैं इन्हें **धम्मंगं**-धर्म के अंग **णादव्वं**-जानना चाहिए **भव्वो**-भव्य **तत्तो**-उससे ही **मोक्खं**-मोक्ष **लहदि**-प्राप्त करता है।

जिण-आगमस्स सारो, चेयणाए हु गुणाणमाहारो।
जस्स मणे अणुवेक्खा, कहं तस्स भवभयं हवेदि।।290।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **जिण-आगमस्स**-जिनागम का **सारो**-सार **चेयणाए**-चेतना के **गुणाणं**-गुणों का **आहारो**-आधार है **जस्स**-जिसके **मणे**-मन में **अणुवेक्खा**-अनुप्रेक्षा है **तस्स**-उसके **भवभयं**-संसार का भय **कहं**-कैसे **हवेदि**-होता है (अर्थात् नहीं होता)।

इंधणं णस्सिदुं जह, विज्जदे अग्गी तिरिच्छ-लोयम्मि।
दिवायरो तिमिरं भव-णासेदुमणुवेक्खासारो।।291।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **इंधणं**-ईंधन को **णस्सिदुं**-नष्ट करने के लिए **तिरिच्छ-लोयम्मि**-तिर्यक् लोक में **अग्गी**-अग्नि **विज्जदे**-विद्यमान

है **तिमिरं**-अधंकार को (नष्ट करने के लिए) **दिवायरो**-सूर्य है (उसी प्रकार) **भवणासेदुं**-संसार को नष्ट करने के लिए **अणुवेक्खासारो**-अनुप्रेक्षा सार है।

सव्ववियारं हरदे, अणुवेक्ख-चिंतणं णिराउलदाइ।
जह तह रोय-मोसही, रयणत्तयं हरदि कम्माणि।।292।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **ओसही**-औषधि **रोयं**-रोग **हरदि**-हरती है **रयणत्तयं**-रत्नत्रय **कम्माणि**-कर्मों को हरता है **तह**-उसी प्रकार **णिराउलदाइ**-निराकुलता से **अणुवेक्ख-चिंतणं**-अनुप्रेक्षा का चिंतन **सव्ववियारं**-सर्व विकार को **हरदे**-हरता है।

आइरिय-कुंदकुंदं, सूरिमुमासामिं समंतभद्दं।
पुज्जपादमकलंकं, सिरिवीरजिणसेणं कुमुदं।।293।।
माणतुंग-णेमिचंद-कत्तिगेय-सिवकोडि-वादिरायं।
जयसेणममियचंदं, सुहचंदं पणमामि णिच्चं।।294।।

अन्वयार्थ-आइरिय-कुंदकुंदं-आचार्य श्री कुंदकुंद स्वामी **सूरिं उमासामिं**-आचार्य श्री उमास्वामी **समंतभद्दं**-आचार्य श्री समंतभद्र स्वामी **पुज्जपादं**-आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी, **अकलंकं**-आचार्य श्री अकलंक स्वामी, **सिरिवीर-जिणसेणं**-आचार्य श्री वीरसेन स्वामी, आचार्य श्री जिनसेन स्वामी **कुमुदं**-आचार्य श्री कुमुदचंद्र **माणतुंग-णेमिचंद-कत्तिगेय-सिवकोडि-वादिरायं**-आचार्य श्री मानतुंग, आचार्य श्री नेमिचंद्र, आचार्य श्री कार्तिकेय, आचार्य श्री शिवकोटि, आचार्य श्री वादिराज **जयसेणं**-आचार्य श्री जयसेन, **अमियचंदं**-आचार्य श्री अमृतचंद्र और **सुहचंदं**-आचार्य श्री शुभचंद्र स्वामी को **णिच्चं**-नित्य **पणमामि**-प्रणाम करता हूँ।

संतिं पायसायरं, जयकित्तिं देसभूसणं सूरिं।
सूरि-सिद्धंत-चक्किं, विज्जाणंदं णमामि गुरुं।।295।।

अन्वयार्थ-सूरिं संतिं पायसायरं-चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर,

महातपस्वी आचार्य श्री पायसागर **जयकित्तिं**-अध्यात्मयोगी आचार्य श्री जयकीर्ति **देसभूसणं**-भारत गौरव आचार्य श्री देशभूषण व **सूरि-सिद्धंत-चक्किं विज्जाणंदं**-सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानंद **गुरुं**-गुरु को **णमामि**-नमस्कार करता हूँ।

अयमणुवेक्खासारो, भणिदो मोक्ख-कारणं भव्वाणं।
विज्जाणंद-णंदेण, पुव्वाइरियाणुसारेणं।।296।।

अन्वयार्थ-अयं-यह**अणुवेक्खासारो**-अनुप्रेक्षा-सार **पुव्वाइरियाणुसारेणं**-पूर्वाचार्यों के अनुसार **विज्जाणंद-णंदेण**-आचार्य श्री विद्यानंद जी के नंद (अर्थात् आचार्य श्री वसुनंदी जी) के द्वारा **भव्वाणं**-भव्यों के **मोक्ख-कारणं**-मोक्ष के कारण **भणिदो**-कहा गया है।

रयणं आराहणा य, परमेट्ठी केवली हु वीरद्धे।
किवाइ पुण्णो गुरुस्स, अस्सिण-सुक्क-एयारसम्मि।।297।।

अन्वयार्थ-रयणं-रत्न-3 सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक् चारित्र **आराहणा**-आराधना-4 दर्शन-ज्ञान-चारित्र-तप **परमेट्ठी**-परमेष्ठी-5 अरिहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधु **केवली**-केवली-2 सयोग केवली-अयोग केवली (3452) अंकानां वामतो गतिः से 2543 **वीरद्धे**-वीराब्धि में **अस्सिण-सुक्क-एयारसम्मि**-अश्विन शुक्ल एकादशी में **हु**-निश्चय से यह ग्रंथ **गुरुस्स**-गुरु की **किवाइ**-कृपा से **पुण्णो**-पूर्ण हुआ।

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108

वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा

रचित व संपादित साहित्य

मौलिक कृतियाँ

प्राकृत साहित्य

1. प्राकृत वाणी भाग-1, 2, 3
2. अहिंसगाहारो (अहिंसक आहार)
3. अज्ज-सक्किदी (आर्य संस्कृति)
4. अणुवेक्खा-सारो (अनुप्रेक्षा सार)
5. जिणवर-थोत्तं (जिनवर स्तोत्र)
6. जदि-किदि-कम्मं (यति कृतिकर्म)
7. णंदिणंद-सुत्तं (नंदीनंद सूत्र)
8. णिग्गंथ-थुदी (निर्ग्रन्थ स्तुति)
9. तच्चसारो (तत्त्व सार)
10. धम्म-सुत्तं (धर्म सूत्र)
11. रट्ठ-संति-महाजण्णो (राष्ट्र शांति महायज्ञ)
12. सुद्धप्पा (शुद्धात्मा)
13. अप्पणिब्भर भारदो (आत्मनिर्भर भारत)
14. विज्जा-वसु-सावयायारो (विद्या वसु श्रावकाचार)
15. अप्प-विहवो (आत्म वैभव)
16. अट्ठंग जोगो (अष्टांग योग)
17. णमोयार महप्पुरो (णमोकार माहात्म्य)
18. मूल-वण्णो (मूल वर्ण)
19. मंगल-सुत्तं (मंगल सूत्र)
20. विस्स-धम्मो (विश्व धर्म)
21. विस्स-पुज्जो-दियंबरो (विश्व पूज्य दिगम्बर)
22. समवसरण सोहा (समवशरण शोभा)
23. वयण-पमाणत्तं (वचन प्रमाणत्व)
24. अप्पसत्ती (आत्म शक्ति)
25. कला-विण्णाणं (कला विज्ञान)
26. को विवेगी (विवेकी कौन)
27. पुण्णासव-णिलयो (पुण्यास्रव निलय)
28. तित्थयर-णामत्थुदी (तीर्थंकर नाम स्तुति)
29. रयणकंडो (सूक्ति कोश)
30. धम्म-सुत्ति-संगहो (धर्म सूक्ति संग्रह)
31. कम्म-सहावो (कर्म स्वभाव)
32. खवगराय सिरोमणी (क्षपकराज शिरोमणि)
33. सिरि सीयलणाह चरियं (श्री शीतलनाथ चरित्र)
34. अज्झप्प-सुत्ताणि (अध्यात्म सूत्र)
35. समणायारो (श्रमणाचार)

भावार्थ

1. अज्ज-सक्किदी (आर्य संस्कृति)
2. णिग्गंथ-थुदि (निर्ग्रंथ स्तुति)
3. तच्च-सारो (तत्त्वसार)
4. रट्ठसंति-महाजण्णो (राष्ट्रशांति महायज्ञ)
5. णंदिणंद-सुत्तं (नंदीनंद सूत्र)
6. अज्झप्प-सुत्ताणि (अध्यात्म सूत्र)

टीका ग्रंथ

1. प्रमेया टीका-रत्नमाला (संस्कृत)
2. वसुधा टीका-द्रव्यसंग्रह (संस्कृत)
3. नय प्रबोधिनी-आलाप पद्धति (हिंदी)

इंग्लिश साहित्य

Inspirational Tales Part- 1 & 2

वाचना साहित्य

1. मुक्ति का वाग्दान (इष्टोपदेश)
2. बोधि वृक्ष (प्रश्नोत्तर रत्नमालिका)
3. शिवपथ का रथ (सामायिक पाठ)
4. स्वात्मोपलब्धि (समाधि तंत्र)

प्रवचन साहित्य

1. आईना मेरे देश का
2. उत्तम क्षमा धर्म (आत्मा का ए.सी. रूम)
3. उत्तम आर्जव धर्म (रंचक दगा बहुत दु:खदानी)
4. उत्तम मार्दव धर्म (मान महाविष रूप)
5. उत्तम शौच धर्म (लोभ पाप का बाप बखाना)
6. उत्तम सत्य धर्म (सतवादी जग में सुखी)
7. उत्तम संयम धर्म (जिस बिना नहिं जिनराज सीझे)
8. उत्तम तप धर्म (तप चाहे सुरराय)
9. उत्तम त्याग धर्म (निज हाथ दीजे साथ लीजे)
10. उत्तम आकिंचन धर्म (परिग्रह चिंता दु:ख ही मानो)
11. उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म (चेतना का भोग)
12. खुशी के आँसू
13. खोज क्यों रोज-रोज
14. गुरुत्तं भाग 1-15
15. चूको मत
16. जय बजरंगबली
17. जीवन का सहारा
18. ठहरो! ऐसे चलो
19. तैयारी जीत की
20. दशामृत
21. धर्म की महिमा
22. ना मिटना बुरा है न पिटना
23. नारी का धवल पक्ष
24. शायद यही सच है
25. श्रुत निर्झरी
26. सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की शौर्य गाथा
27. सीप का मोती (महावीर जयंती)
28. स्वाती की बूँद

हिंदी गद्य रचना

1. अन्तर्यात्रा
2. अच्छी बातें
3. आज का निर्णय
4. आ जाओ प्रकृति की गोद में
5. आधुनिक समस्यायें प्रमाणिक समाधान
6. आहारदान
7. एक हजार आठ
8. कलम पट्टी बुद्धिका
9. गागर में सागर
10. गुरु कृपा
11. गुरुवर तेरा साथ
12. जिन सिद्धांत महोदधि
13. डॉक्टरों से मुक्ति
14. दान के अचिन्त्य प्रभाव
15. धर्म बोध संस्कार (भाग 1-4)
16. धर्म संस्कार (भाग 1-2)
17. निज अवलोकन
18. वसु विचार
19. वसुनन्दी उवाच
20. मीठे प्रवचन (भाग 1-6)
21. रोहिणी व्रत कथा
22. स्वप्न विचार
23. सद्गुरु की सीख
24. सफलता के सूत्र
25. सर्वोदयी नैतिक धर्म
26. संस्कारादित्य
27. हमारे आदर्श

हिंदी काव्य रचना

1. अक्षरातीत
2. कल्याणी
3. चैन की जिंदगी
4. ना मैं चुप हूँ ना गाता हूँ
5. मुक्ति दूत के मुक्तक
6. हाइकू
7. हीरों का खजाना

विधान रचना

1. कल्याण मंदिर विधान
2. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
3. चौसठऋद्धि विधान
4. णमोकार महार्चना
5. दु:खों से मुक्ति (बृहद् सहस्रनाम महार्चना)
6. यागमंडल विधान
7. समवशरण महार्चना
8. श्री नंदीश्वर विधान
9. श्री सम्मेदशिखर विधान
10. श्री अजितनाथ विधान
11. श्री संभवनाथ विधान
12. श्री पद्मप्रभ विधान
13. श्री चंद्रप्रभ विधान (देहरा तिजारा)
14. श्री चंद्रप्रभ विधान
15. श्री पुष्पदंत विधान
16. श्री शांतिनाथ विधान
17. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
18. श्री नेमिनाथ विधान
19. श्री महावीर विधान
20. श्री जम्बूस्वामी विधान
21. श्री भक्तामर विधान
22. श्री सर्वतोभद्र महार्चना

संपादित कृतियाँ (संस्कृत प्राकृत साहित्य

1. आराधना सार (श्रीमद्देवसेनाचार्य जी)
2. आराधना समुच्चय (श्री रविचन्द्राचार्य जी)
3. आध्यात्म तरंगिणी (आचार्य सोमदेव सूरी जी)
4. कर्म विपाक (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
5. कर्म प्रकृति (सिद्धांत चक्रवर्ती आ. श्री अभयचंद्र जी)
6. गुणरत्नाकर (रत्नकरण्ड श्रावकाचार) (आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी)
7. चार श्रावकाचार संग्रह
8. जिनकल्पि सूत्र (श्री प्रभाचंद्राचार्य जी)
9. जिन श्रमण भारती (संकलन-भक्ति, स्तुति, ग्रंथादि)
10. जिन सहस्रनाम स्त्रोत
11. तत्त्वार्थ सार (श्री मदमृताचन्द्राचार्य सूरि)
12. तत्त्वार्थस्य संसिद्धि
13. तत्त्वार्थ सूत्र (आ. श्री उमास्वामी जी)
14. तत्त्वज्ञान तरंगिणी (श्री मद्भट्टारक ज्ञानभूषण जी)
15. तच्च वियारो सारो (आ. श्री वसुनंदी जी)
16. तत्व भावना (आ. श्री अमितगति जी)
17. धर्म रत्नाकर (श्री जयसेनाचार्य जी)
18. धम्म रसायण (आ. श्री पद्मनंदी स्वामी जी)
19. ध्यान सूत्राणि (श्री माघनंदी सूरी)
20. नीतिसार समुच्चय (आ. श्री इंद्रनंदी स्वामी जी)
21. पंच विंशतिका (आ. श्री पद्मनंदी जी)
22. प्रकृति समुत्कीर्तन (सिद्धांत चक्रवर्ती श्री नेमीचंद्राचार्य जी)
23 पंचरत्न
24. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय (आ. श्री अमृतचंद्र स्वामी जी)
25. मरणकण्डिका (आ. श्री अमितगति जी)
26. भगवती आराधना (आ. श्री शिवकोटी जी स्वामी)
27. भावत्रयफलप्रदर्शी (आ. श्री कुंथुसागर जी)
28. मूलाचार प्रदीप (आ. श्री सकलकीर्ति स्वामी जी)
29. योगामृत (भाग 1-2) (मुनि श्रीबालचंद्र जी)
30. योगसार (भाग 1, 2) (मुनि श्री बालचंद्र जी)
31. रयणसार (आ. श्री कुंदकुंद स्वामी)
32. वसुऋद्धि
    - रत्नमाला (आ. श्री शिवकोटि स्वामी जी)
    - पूज्यपाद श्रावकाचार (आ. श्री पूज्यपाद जी)
    - लघु द्रव्य संग्रह (आ. श्री नेमीचंद्र स्वामी जी)
    - अर्हत प्रवचनम् (आ. श्री प्रभाचंद्र स्वामी जी)
    - स्वरूप संबोधन (आ. श्री अकलंक देव जी)
    - इष्टोपदेश (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)
    - वैराग्यमणि माला (आ. श्री विशाल कीर्ति जी)
    - ज्ञानांकुश (आ. श्री योगीन्द्र देव)
33. सुभाषित रत्न संदोह (आ. श्री अमितगति स्वामी जी)
34. सिन्दूर प्रकरण (आ. श्री सोमदेव स्वामी जी)
35. समाधि तंत्र (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)
36. समाधि सार (आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी)
37. सार समुच्चय (आ. श्री कुलभद्र स्वामी जी)
38. विषापहार स्तोत्र (महाकवि धनंजय जी)

प्रथमानुयोग साहित्य

1. अमरसेन चरित्र (कविवर माणिक्कराज जी)
2. आराधना कथा कोष (ब्र. श्री नेमीदत्त जी) (भाग 1-2-3)
3. करकण्डु चरित्र (मुनि श्री कनकामर जी)
4. कोटिभट श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
5. गौतम स्वामी चारित्र (मण्डलाचार्य श्री धर्मचंद्र जी)
6. चारूदत्त चरित्र (ब्र. श्री नेमीदत्त जी)
7. चित्रसेन पद्मावती चरित्र (पं. पूर्णमल्ल जी)
8. चेलना चारित्र
9. चंद्रप्रभ चरित्र
10. चौबीसी पुराण
11. जिनदत्त चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)
12. त्रिवेणी (संग्रह ग्रंथ)
13. देशभूषण कुलभूषण चरित्र
14. धर्मामृत (भाग 1-2) (श्री नयसेनाचार्य जी)
15. धन्यकुमार चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
16. नागकुमार चरित्र (आ. श्री मल्लिषेण जी)
17. नंगानंग कुमार चरित्र (श्रीमान् देवदत्त)
18. प्रभंजन चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)
19. पाण्डव पुराण (श्री मदाचार्य शुभचंद्र देव)
20. पार्श्वनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
21. पुण्याश्रव कथा कोष (भाग 1-2) (श्री रामचंद्र मुमुक्षु)
22. पुराण सार संग्रह (भाग 1-2) (आ. श्री दामनंदी जी)
23. भरतेश वैभव (कवि रत्नाकर)
24. भद्रबाहु चरित्र
25. मल्लिनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
26. महीपाल चरित्र (कविवर श्री चारित्र भूषण)
27. महापुराण (भाग 1-2)
28. महावीर पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
29. मौनव्रत कथा (आ. श्री श्रीचंद्र स्वामी जी)
30. यशोधर चरित्र
31. रामचरित्र (भाग 1-2) (आ. श्री सोमदेव स्वामी)
32. रोहिणी व्रत कथा
33. व्रत कथा संग्रह
34. वरांग चरित्र (आ. श्री जटासिंह नंदी)
35. विमलनाथ पुराण (श्री ब्रह्मचारीश्वर कृष्णदास जी)
36. वीर वर्धमान चरित्र
37. श्रेणिक चरित्र
38. श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
39. श्री जम्बूस्वामी जी चरित्र (श्री वीर कवि)
40. शांतिनाथ पुराण (भाग 1-2) (कवि असग जी)
41. सप्तव्यसन चरित्र (आ. श्री सोमकीर्ति भट्टारक)
42. सम्यक्त्व कौमुदी
43. सती मनोरमा
44. सीता चरित्र (श्री दयाचंद गोलीय)
45. सुरसुंदरी चरित्र
46. सुलोचना चरित्र
47. सुकुमाल चरित्र
48. सुशीला उपन्यास
49. सुदर्शन चरित्र (पं. गोपालदास बैरया)
50. सुभौम चरित्र
51. हनुमान चरित्र
52. क्षत्र चूड़ामणि (जीवंधर चरित्र)

संपादित हिंदी साहित्य

1. अरिष्ट निवारक त्रय विधान
   - नवग्रह विधान
   - वास्तु निवारण
   - मृत्युंजय (पं. आशाधर जी कृत)
2. श्री जिनसहस्त्रनाम एवं पंचपरमेष्ठी विधान
3. श्री जिनसहस्त्रानाम विधान (लघु) आदि एक नाम अनेक
4. शाश्वत शांतिनाथ ऋद्धि विधान
   - भक्तामर विधान (आ. मानतुंग स्वामी जी (मूल))
   - शांतिनाथ विधान (पं. ताराचंद्र जी)
   - सम्मेदशिखर विधान (पं. जवाहर दास जी)
5. कुरल काव्य (संत तिरुवल्लुवर)
6. तत्त्वोपदेश (छहढ़ाला) (पुं. प्रवर दौलतराम जी)
7. दिव्य लक्ष्य (संकलन-हिंदी पाठ, स्तुति आदि)
8. धर्म प्रश्नोत्तर (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
9. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
10. भक्तिसागर (चौबीसी चालीसा संग्रह)
11. विद्यानंद उवाच (आ. श्री विद्यानंद जी मुनिराज)
12. सुख का सागर (चौबीसी चालीसा)
13. संसार का अंत
14. स्वास्थ्य बोधामृत

गुरु पद विनयांजली साहित्य

1. अक्षर शिल्पी (मुनि शिवानंद)
2. पगवंदन (मुनि शिवानंद प्रशमानंद)
3. वसुनंदी प्रश्नोत्तरी (मुनि जिनानंद, ऐ. विज्ञान सागर)
4. दृष्टि दृश्यों के पार (आ. श्री वर्धस्वनंदनी, वर्चस्वनंदनी)
5. स्मृति पटल से भाग 1-2 (आ. श्री वर्धस्वनंदनी)
6. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी (ऐलक विज्ञान सागर)
7. गुरु आस्था (ऐलक विज्ञान सागर)
8. परिचय के गवाक्ष में (ऐलक विज्ञान सागर)
9. स्वर्णोदय (ऐलक विज्ञान सागर)
10. स्वर्ण जन्मजयंती महोत्सव (ऐलक विज्ञान सागर)
11. हस्ताक्षर (ऐलक विज्ञान सागर)
12. वसु सुबंध (महाकाव्य) (प्रो. डॉ. उदयचंद्र जी जैन)
13. समझाया रविन्दु न माना (सचिन जैन 'निकुंज')